

NOT FOR SALE

महालक्ष्मी विशेषांक – (प्रथम)

सितम्बर 2000

गुल्य : 18/-

सूर्य-तंत्र-संग्रह

विज्ञान



विजयोत्सव

ऐसे मना ऐ
दीपावली

केतु और
आपका
कल्याण
महालक्ष्मी

जहां विराजे संत चित लक्ष्मी



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

ଶ୍ରୀମଦ୍-ଭଗ୍ବାତୁ

॥ अँ परमं तत्वाय नाभायणाय गुकभ्यो नमः ॥



	साधना	
गणपति सायुज्य		
कामेश्वरी साधना	37	
विजयोत्सव साधना	29	
धनवन्तरी साधना	33	
कनक प्रभा साधना	55	
 सद्गुरुदेव		
केतु साधना	82	
लक्ष्मी प्रवचन	5	दीपावली पूजन
मुक्त वाणी	44	इन्द्राक्षी स्तोत्र साधना
 स्तुतिभ		73
जिज्ञ धर्म	43	 
साधक साक्षी	51	
स्वास्थ्य सरिता	79	
कालचक्र	58	
मे समय हूँ	62	
बनाहमिहार	63	
इम मास विल्ली में	80	
एक दृष्टि में	86	दीपावली केसे मनाएं
		60
		जहां विराजे लक्ष्मी
		27
		लक्ष्मी अथिपति बनिए
		23
 विशेष		
संकल्प क्यों आवश्यक	40	
देव आळान	41	
ध्यानमूलं गुरों मूर्ति	64	
 विवेचन		
प्रश्नोपनिषद रहस्य	67	
 स्तोत्र शक्ति		
इन्द्राक्षी स्तोत्र साधना	73	



— सम्पर्क —

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट पुरालेप, पीतमधुरा, दिल्ली-110034, फ़ोन: 011-71182244, टेली फ़ॉक्स: 011-7196730
बंव-तंत्र-योग विज्ञान, ३० शीर्षकी नं. हाईटेक ऑफिसी, बोधपुर-342301 (राज.) सैल: 0291-432203, टेलीफ़ॉक्स: 0291-432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> **E-mail add.** - mtyx@siddhashram.org

प्रेरक संस्थापक
डॉ. वासायणकृष्ण माली
(प्रभानन्द स्वामी
जिडिलोऽवरानंद जी)

प्रधान सम्पादक
श्री जगद्विष्णोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक एवं संयोजक

द्वयवस्थापक
श्री अरविंद श्रीगाली

संपादन सलाहकार मंड़ल
 द्विंदू राम चेतन्य शास्त्री,
 श्री गुरु योगक थोकास्त्री,
 श्री रमेश पाटिल, श्री एस. के. मिश्रा,
 श्री आर. शी. सिंह, श्री नंगाधर
 महापात्र, श्री बसवत पाटिल, श्री
 सतीश मिथा (बन्बई), श्री पर्म,
 आर. बड़िह, श्री मुखीर सेलोकर,
 श्री विजय शास्त्री (हरिधामा),
 श्री कृष्ण जीवा (बैंगलोर),
 डॉ० एस. के. धीताल (नेपाल).

प्रकाशक एवं स्वामित्र
श्री पैतलाश घटक श्रीमाली

द्वारा
नेट आर्ट प्रिन्टर्स
10/2, DLF, हड्डीटायल
एसिया, मोहोनगर, नई दिल्ली
से मुद्रित नवा
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर से
प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मत्र-तत्त्व-विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों ने सम्पादक का सहन्त होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुरार्थ करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गला रखें। किसी नाम, लकान या घटना का किसी रोड सम्बन्ध नहीं है।

प्रार्थना

अणेश	भजे ५ हं	सदाभावजम्य,
सहमीमुदार्लं		सौभाग्यस्त्वय ।
मराज	वशस्तं	परिचायमानः
श्री	मदगुरुं	सन्ततमालतोऽस्मि ॥

मंगलमूर्ति, सत्यभावो से ज्ञेय भगवान् गणपति ॥

साक्षरता चिरंपत्र



अ. 'सितम्बर' 2000 मन्त्र-लंब-यत्र विज्ञान 'इ' सं

यदि देखा जाय तो हमारे सारे शास्त्रों
में, सभी उपनिषदों में
कठोरनिषद एक उच्चबल
हीरकरत की तरह है, जिसका

एक-एक अभर अन्यन्त महत्वपूर्ण और विद्यु
है। इस उपनिषद में उन प्रश्नों के उत्तर
खोजे गए हैं, जिनके उत्तर
सामान्यतः विज्ञान और ज्ञान दोनों

के पास नहीं हैं, न ज्ञान उन चिन्तनों

को समझ पाया है... और विज्ञान तो कभी उन चिन्तनों को
समझ ही नहीं सकता। विज्ञान की तो एक सीमा है, जो केवल
मौतिक दृष्टि से आदर्शी को पूर्णतः देखता है, मानव शरीर को सुख देने की
कोशिश कर सकता है।

जीवन के नित्य प्रश्नों में धर्म, उर्जा, भीमांसा और कई सम्प्रदायों से सम्बन्धित
अनेकों प्रश्न हैं, परन्तु मूलभूत प्रश्न हैं -

- जीवन क्या है? - मृत्यु क्या है?

- इस मृत्यु से पहले की स्थिति क्या है?

- इस मृत्यु के बाद की स्थिति क्या है?

- मृत्यु और जीवन के बीच की स्थिति क्या है?

ये प्रश्न वे हैं, जो प्रत्येक जानी मनुष्य के मन में उठते ही हैं, और जब वे प्रश्न व्यक्ति के मानस में उठते हैं, तो तब तक उसे ऐन नहीं भिलता, जब तक कि उसे इनका उत्तर ज्ञान हो। ज्ञान। इन प्रश्नों का उत्तर
प्राप्त करने के लिए ही अतेकी गंध, उपनिषद लिखे गये, फिर भी व्यक्ति संतुष्ट नहीं हुआ... उसे देखा
लगता, कि कहीं कुछ शोध बचा रहा है, जहाँ तक कि मैं नहीं पहुँच पा रहा हूँ... और यह शोध... यह खालीपन आहुर
नहीं, मेरे मीतर ही है... कैसे इस शोध को समझूँ? कैसे इस खालीपन को भरू?

और कठोरनिषद में इन प्रश्नों से जड़ने का प्रवर्तन किया गया है। इस में जीवन को जीने का तरीका सिखाया गया है।
कठोरनिषद में यह स्पष्ट किया गया है, कि मनुष्य के जीवन का क्या हेतु है, क्या प्रयोगन है, क्या लक्ष्य है? हमें जीवन किस प्रकार
से जीना चाहिए? क्या हम जिस प्रकार से जीवन जी रहे हैं, वह जीवन है? या जो हम सत्य से रहे हैं, सतान पैदा कर रहे हैं, क्या
इसको जीवन कहने हैं?

कठोरनिषद कहता है - नहीं! यह जीवन नहीं है। जीवन तो बहुत विलेही लोग ही जी सकते हैं। लाखों
में से एक या दो व्यक्ति शी जीवन जीने की कला जानते हैं, और जिसमें जीवन जीने की कला पढ़िचान ली, उसके
जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता रह ही नहीं सकती, क्योंकि वह उन प्रश्नों के समाधान की ओर अग्रसर हो
जाता है, जिसको जीवन का आधार कहते हैं।

जीवन और मृत्यु नदी के दो छोर हैं। जहाँ जीवन है, वहाँ मृत्यु नहीं हो सकती, जहाँ मृत्यु है, वहाँ जीवन
की कल्पना की ही नहीं जा सकती। जहाँ अधेरा है, वहाँ प्रकाश कैसे हो सकता है, और जहाँ प्रकाश है, वहाँ अधेरा
आ ही नहीं सकता। जीवन है, तो मृत्यु नहीं आ सकती... और मृत्यु नहीं आ सकती, तो फिर इस समझ सकते
हैं, कि जीवन का मूलभूत चिंतन... सध्य क्या है? इसीलिए तो कठोरनिषद को अद्वितीय उपनिषद कहा गया
है, क्योंकि उस में उन प्रश्नों का विवेचन हुआ है, जो जीवन और मृत्यु जैसे अत्यन्त वृद्धिव कठिन प्रश्नों
को सुलझाने की ओर प्रेरित करते हैं।

इन सारे प्रश्नों के उत्तर उठोरनिषद में एक कडानी, एक कथा के
माध्यम से स्पष्ट किये गए हैं। सामान्य आदर्शी सीधी-साधी बात
समझाना है, कठिन न्यून समझने में उसे

जन्मकिया होती है, जबकि
संवेदनिषद में प्रत्येक
परम तत्त्व सूक्ष्म रूप में है,
जिसका समझने के लिए
उच्च उच्चकोटि की विद्या,
जीव उच्चकोटि का ज्ञान चाहिए।

सामान्य आदमी
नहीं उठापनिषद को समझ
नहीं सकता, पढ़ तो सकता
है, अगर उसके मर्म को नहीं
समझ सकता, क्योंकि उसके मर्म को समझने के लिए
उसी प्रकार की भावभूमि चाहिए, उसी प्रकार का ज्ञान चाहिए,
उसी प्रकार का चित्तन चाहिए, उसे स्वयं उस ऊर्जावृद्धि पर पहुँचा हुआ क्रिया
होना चाहिए, तभी वह स्वयं उस नर्म को समझ सकेगा, उस चित्तन को समझ
सकेगा।

महर्षि उद्धालक अत्यन्त श्रेष्ठ क्रिया हुए, राजा हुए—महान् क्रिया और महान्
राजा भी। जो राजा हो सकता है, वह क्रिया भी हो सकता है। जो भोग, भोग सकता है,
वह वैश्वम् को भी समझ नहीं सकता। जिसने वैश्वम् को नहीं बेखा, वह भोग को भी
नहीं देख सकता। इसलिए उच्चकोटि के जितने भी चिंतक बने, कमी न करो गृहन्थ
बने।

- बुद्ध भी पहले भोगी थे, राजपुत्र थे, उसके बाद संन्यासी हुए और बुद्ध बन गए।
- महावीर राजपुत्र थे और फिर संन्यासी बन गए।
- शंकराचार्य को भी, मंडन मिश्र की पत्नी को पराजित करने के लिए परकाया प्रवेश द्वारा
एक राजा के शरीर में रहते हुए गृहस्थ जीवन का अनुभव लेना पड़ा।

जितने भी संन्यासी, योगी हुए, उन्होंने जीवन के भोग को भी समझा, उन्होंने जीवन के संन्यास मार्ग
को भी समझा और जाना, कि वे दोनों एक सिक्के के दो हाँ प्रह्लृहैं, क्योंकि जिन भोग को समझे संन्यास समझा
हो नहीं जा सकता।

- आखिर संन्यास क्या चीज़ है?
- भोग की निवृत्ति, तृष्णाओं की निवृत्ति ही संन्यास है।
- फिर वे भोग कीन में हैं, जिनकी निवृत्ति हो?

इसे जानने के लिए जीवन मृत्यु को समझना चर्चा है, अगर जीवन को नहीं समझ सकते तो
वह भी नहीं समझ सकते, कि मृत्यु क्या है? मृत्यु का व्यवरूप क्या है? मृत्यु का सौन्दर्य क्या है? हम मृत्यु
से कैसे आलच्छ होते हैं? मृत्यु के साथ हम कैसे मम्य व्यतीत कर सकते हैं?— और मृत्यु के साथ समय
व्यतीत करने की कला छिपी है— कठोरपनिषद् में . . .।

महर्षि उद्धालक ने ब्राह्मणों को एक लाख गाय बान करने का निर्णय किया। उसने मैदान में
उन शाश्वतों को एकत्र किया, तभी उसका पुत्र नचिकेता वहाँ आया, नचिकेता ने उन शाश्वतों को बेखा,
छोटा-सा बालक . . . भगवं छोटा सा बालक भी अपने-आप में पूर्ण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति हो
सकता है। कोई बालक नहीं होता, कोई बृद्ध नहीं होता। आयु और मन दोनों अलग-
अलग चीज़ हैं। हो सकता है, कि किसी बालक की आयु पांच वर्ष की हो
और मन की अवस्था, ज्ञान की अवस्था सौ बाल हो। प्रह्लाद
की शाश्वतिक अवस्था तो पांच साल की थी, मगर

उपरक पान्च जो जान था, वह सौ साल का था, और ऐसे कई बृद्ध भी हैं, जिनकी आयु तो अस्सी साल की है, मगर उनका मन, उनका चिंतन अबोध बालकों जैसा है, इसलिए दोनों अलग-अलग अवस्थाएँ हैं। यह जरूरी नहीं है, कि पांच साल का बालक पांच साल की ही बुद्धि रखता हो। प्रत्येक बालक अपने-आप में बुद्धावस्था छिपाए हुए होता है। ठीक उसी तरह से एक बृद्ध के मन में भी एक बालक छिपा हुआ होता है, इसलिए साठ साल की आयु के बाव बृद्ध ठीक उसी प्रकार आवश्यक करने लग जाता है, जैसे बालक करता है।

— उस पांच साल के नियंत्रिता के मन में अस्सी साल का जान बोल रहा था... उसने बेखा और सोचा — मेरे पिता गायों का दो दान दें रहे हैं, मगर ये गायें अत्यन्त दुर्बल हैं, अत्यन्त कमज़ोर हैं, इनके बांत गिर गए हैं, इसके बनों में से दूध नहीं निकल सकता, दूध की एक-एक बूंद गाय के बनों से निकाली जा चुकी है। अब गायें उस हालत में पहुंच गई हैं, कि यदि घर में रहती हैं, तो केवल घारा स्थानी हैं, पानी पीती हैं, मगर दूध नहीं वे सकतीं, क्योंकि ये अब बृद्ध हो गई हैं, और ऐसी गायें ब्राह्मणों को दान दी जा रही हैं।

नियंत्रिता सोचता है — इन गायों को दान केने से कैसे पुण्य प्राप्त होगा? दान में लेकर ब्राह्मण इन गायों से क्या प्राप्त करेगे? निसके बनों में दूध नहीं, उन गायों को लेकर वे ब्राह्मण करेंगे क्या?

— आखिर मेरे पिता इन्हें स्वार्थी कर्यों हो गए हैं?

— एक बालक यदि अपने पिता के बारे में ऐसा सोचता है, तो उनका जान अस्सी साल की आयु के बराबर है। उदाहरण का चिंतन पन्द्रह साल के बालक के बराबर है, वह सोचता है — ये गायें मेरे घर में भार स्वरूप हैं। अब इन गायों को दान में देना चाहिए, जिससे कि मेरे घर से वह मार हटे, जिससे इसके स्थान पर मैं दूसरी और भरपूर दूध देने वाली गायों को ला सकू... परन्तु नियंत्रिता तो दुखी है, वह तो उन गायों को ताक रहा है, जिनकी आँखों में आँख है, जिनकी आँखों में विवशता है, जिनकी आँखों में दुर्बलता है, जिनकी दृष्टियां साफ-साफ विखाई दे रही हैं।

वह इनारा दुर्भाग्य है, यह हमारा घटियापन है, कि हम दान उस चीज का देते हैं, जो हमारे लिए व्याप्त होती है। ऐसा दान अपने-आप में कोई प्रयोग नहीं रखता। इसलिए शास्त्रों में यह स्पष्ट किया गया है — दान वह किया जाय, जो तुम्हें बहुत अधिक प्रिय हो, जो तुम्हारे लिए अत्यन्त आवश्यक हो, निसके बिना तुम्हारा काम चल नहीं सकता, उस चीज का दान दो।

और उदाहरण, उन गायों को दान देना चाहता था, जो गायें व्याप्त ही... नियंत्रिता उन गायों को और अपने पिता की चालाकी को देख रहा था। वह पांच साल का बालक, मंथन कर रहा था, यह चिंता कर रहा था — क्या इनका दान किया जाना चाहिए? यह परम्परा मेरे पिता से मुझ तक और आने वाली सभी पीढ़ियों तक जायेगी, तो क्या वह उचित रहेगा? यदि इस दुखिदि को यही नहीं रोका गया, तो आने वाली सभी पीढ़ियों तक जायेगी, तो क्या यह उचित रहेगा? यदि इस दुखिदि को यही नहीं रोका गया, तो आने वाली पीढ़ियों एक अजीब अपराध वृत्ति से शूल हो जायेगी। वे उन बल्तुओं का दान देने की कोशिश करेंगी, जो उनके लिए व्याप्त हैं।

वह पिता के पास गया और कहा जोड़कर पूछा — आप ये गायें दान में क्यों दे रहे हैं? इन गायों को दान देने से क्या लाभ होगा? ये गायें तो बृद्ध हो गई हैं, वे साल वो साल में मर जायेगी, इनको दान देने से छात्याणों का क्या हित होगा? ब्राह्मण तो लालचवश या भ्रवश ले लेंगे, कि राजा दान दे रहे हैं, यदि नहीं लेंगे, तो कल राजा हमको कुख दे सकते हैं, तकलीफ दे सकते हैं, शरण-निकाल दे सकते हैं... आप इन गायों को दान में क्यों दे रहे हैं? क्या यह उचित है?

एक छोटा सा बालक अगर पिता से ऐसा प्रश्न करे, तो पिता को क्रोध आना स्वाभाविक है, क्योंकि वह तो समझता है, कि मैं बड़ा हूं, इसलिए क्रोध करना मेरा धर्म है, मेरा कर्तव्य है, मैं क्रोध कर सकता हूं — और जहां पर भी मनुष्य के अहंपर घोट लगती है, उसकी भूल पर, वोष पर चोट लगती है,

जो क्लॉधिंग होता ही है। सत्य स्वीकार करने पर क्लॉध नहीं जाता, मगर यदि किसी के मन में पाप है, छल है, दूष है, और उस पर यदि प्रहार लिया जाए, तो क्लॉध जाना स्वाभाविक है। उदालक के मन में भी कुबुद्धि थी, वह समझता था — ये जो गाये हैं, जो कालत् घास खा रही है, जो बढ़ते हैं, उनको निकाल देना चाहिए, यह धर्तीता उसके मन में थी . . . और नचिकेता ने इसी छल पर प्रहार किया, उसके मन पर प्रहार किया।

उदालक को क्लॉध आया और क्लॉध के मरे आंखें लाल करके उसने गुस्से से मुटियों को भीचा, सोचने लगे — यह होटा सा बालक ने जन्मने वाला होकर नवान लड़ाता है। बड़े-बड़े महिंपति नब मेरे सामने सिर ऊंचा नहीं उठाते, तो इस लड़के की इतनी हिम्मत, कि यह मुझसे जाले जिना कर बात करे, और उसने उसे फटकार दिया।

नचिकेता ने हाथ जोड़कर प्रश्न किया — यदि आप इन गायों को इसलिए बान में दे रहे हैं, क्योंकि ये सब व्यर्थ हैं, आपके घर में भार लगते हैं, तो जब मैं भी भार तुल्य बन जाऊंगा बैकार हो जाऊंगा, आप मुझे भी बान दे देने?

एक बड़ा तीक्ष्ण प्रश्न था, कि मैं कभी बुद्ध हो जाऊंगा, तो मुझे भी बान दे दिया जायेगा?

— “ओर दे देंगे, तो किसको बान देंगे? बालणों को? . . . क्या आप उन्हें मुझे बान देंगे?”

उदालक तो क्लॉध के घोड़े पर सवार थे, उन्होंने कहा — “हाँ! हाँ! यदि तू भार स्वरूप होगा, तो मुझे भी बान में दे दूंगा।”

नचिकेता ने कहा — “आप मुझे किसे देंगे, मुझे कीन स्वीकार करेगा?”

क्लॉध के आवेश में उदालक कहते हैं — “मैं तुझे मृत्यु को दे दूंगा, तू मृत्यु के पास जा।”

नचिकेता ने पिता की आज्ञा को स्वीकार किया।

जन्मरथ वीरों में, एक क्लॉधमय था . . . दूसरा शान्तमय था, और क्लॉध में आदमी का विवेक समाप्त हो जाता है, क्लॉध में आदमी को जन्म देने का ज्ञान नहीं रहता। क्लॉध में उदालक उसे बान देने को कहते हैं, जो उनका पुत्र है — मैं तुझे मृत्यु को दे रहा हूँ . . . इससे ज्यादा क्लॉध की लिखति और क्या हो सकतो है . . . और इससे ज्यादा नस्ता की क्या स्थिति बन सकती है, कि नचिकेता हाथ जोड़कर विनीत भाव भे प्रश्न करता है।

— “बत्या मैं मृत्यु के पास चला जाऊं?”

और किर सौचकर स्वयं उसर केता है — “आप ठीक कहते हैं, यदि आप मुझे मृत्यु को देते हैं, तो यह येरा सीधान्य है, क्योंकि पिता की आज्ञा का पालन करना प्रत्येक पुत्र का कर्तव्य और धर्म है . . . और मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा, मैं जरूर मृत्यु

के बास जाऊंगा। जिस प्रकार से ये जारी ब्राह्मणों के पास जा रही है, उसी प्रकार से मैं

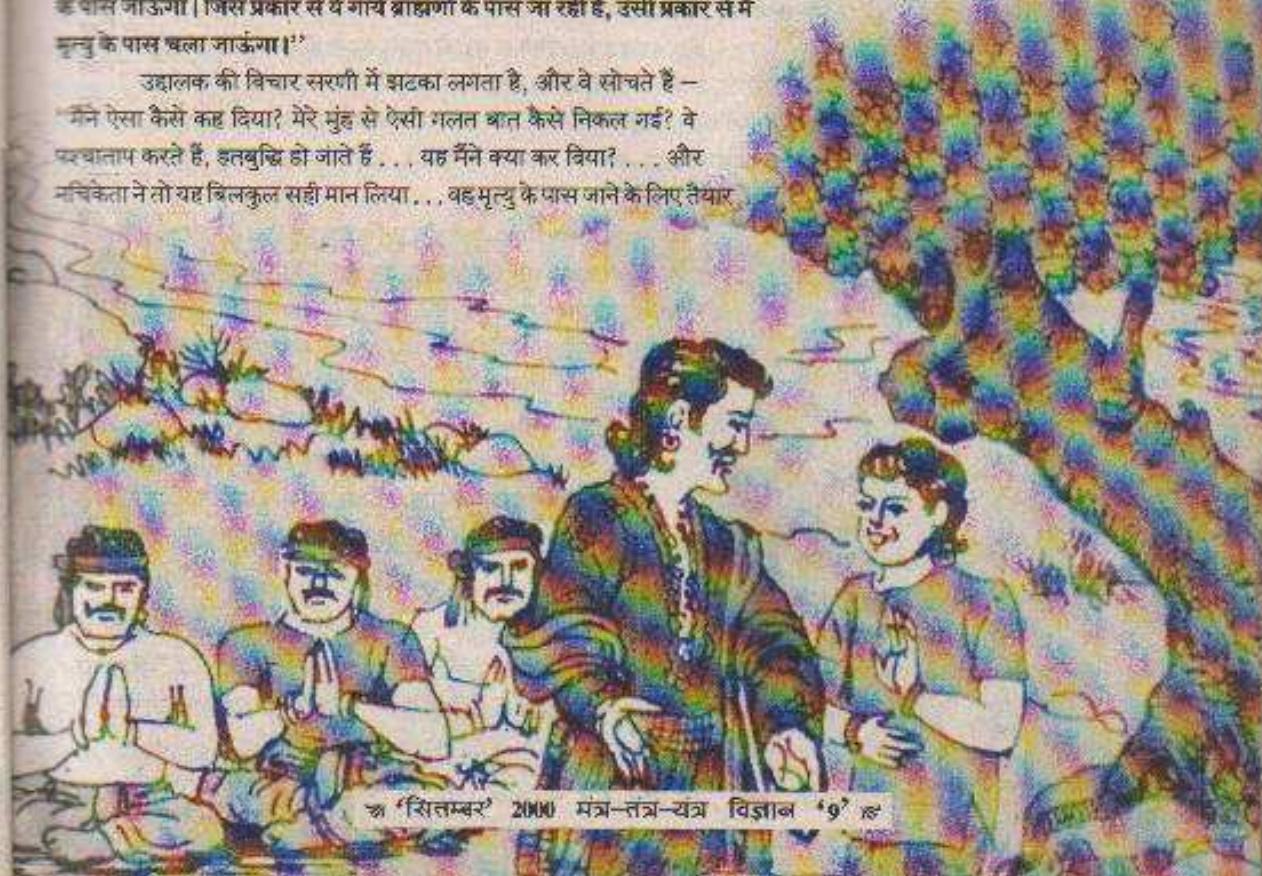
मृत्यु के पास चला जाऊंगा।”

उदालक की विचार सरणी में अटका लगता है, और वे सोचते हैं —

— मैं ऐसा कैसे कह दिया? ऐसे मुह से ऐसी गलत बात कैसे निकल गई? वे

परचालाप करते हैं, इत्युद्धि हो जाते हैं . . . यह मैंने क्या कर दिया? . . . और

नचिकेता ने तो यह बिलकुल सही मान लिया . . . वह मृत्यु के पास जाने के लिए तैयार



ऋषितम्बर 2000 मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान '9' ८

हो गया है।"

इस अप्रत्याशित घटनाक्रम से उदालक की आँखों में आँख आ जाते हैं, शरीर थरथराने लगता है, कोश तो कभी का समाप्त हो गया था। उन्होंने बेटे को अपनी गोदी में उठाया और उसके सिर पर हाथ लेरते हुए कहा — "मैंने तो क्षोष में कह दिया। तू तो मेरा एकमात्र पुत्र है, मैं उसे मृत्यु को कैसे दे सकता हूँ, यह तो समझ की नहीं है, यह तो मेरे मुह से अकस्मात निकल गया, मैं तेरा पिता हूँ, तू मेरा बंशज है, तेरे बिना मेरे जीवन का मतलब क्या होगा?"

नचिकेता ने कहा — "नहीं। एक बार दान वी गई वस्तु को वापिस छाणा नहीं किया जाता। आपने मुझे दान के विदा है, अब मेरे ऊपर अधिकार मृत्यु होता है, अब मुझ पर आपका अधिकार नहीं रहा, और जो वस्तु आपकी नहीं है, उसकी आप गोदी में भी नहीं ले सकते, उसके सिर पर हाथ भी नहीं कैर सकते, उसको बढ़का भी नहीं सकते, उसको बड़ला भी नहीं सकते। आप मुझे आपने चर्चाओं में दिये दान को वापिस मत लानिए, इस समय मैं मृत्यु की धरोहर हूँ। अब तो मृत्यु जो भी आजा देशी उस आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है, कर्तव्य है।"

उदालक मीन हो गये, किंकर्तव्यविमृद्ध होने के कारण वे समझ नहीं पा रहे थे, कि उनके मुंह से ऐसा कैसे निकल गया? वे समझ नहीं पा रहे थे कि यह क्या हो रहा है?

— मैं तो गायों की दान में दे रहा था . . . और कहां पुत्र ही हाथ से निकल गया। मैंने क्षोष से कहा, जो पुत्र ने पालन किया . . . और वास्तव में जो दान में दे ही दिया, उस पर मेरा क्या डक हो सकता है? क्या अधिकार हो सकता है? मैंने तो उसे मृत्यु को सौंप दिया।

नचिकेता खड़ा ही जाता है, अन्तिम बार अपने पिता को प्रणाम करता है, उनसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है — "मैं धन्यवाही हूँ, जो आप जैसे पिता मुझे मिले। यह मेरा सौभाग्य है, कि आपने मुझ मृत्यु को दान किया, और मैं अवश्य ही मृत्यु देवता यमराज के पास जाऊंगा, उनके चरणों में बैठूंगा, जो भी वे देंगे, उसको श्वीकार करूंगा। यदि मेरे भाग्य में कुछ लिखा है, तो मैं उसे प्राप्त कर लूंगा। यदि मेरे भाग्य में कुछ नहीं लिखा तब भी यह प्राण, शरीर, जैनना सब यमराज की धरोहर है, वे जैसा भी आहेंगे, और प्राणों का उपयोग करेंगे।"

— और यह कह कर नचिकेता वहां से दुरन्त रवाना हो गया। उदालक दुकुर दुकुर तकते रहे, आँखों से आँसुओं की धारा बहती गई, हिचकिया भर गई, गला संघ गया . . . मगर नचिकेता के हृदय पर कोई प्रभाव नहीं था, वह स्मृति रहा था — अब वह उदालक की धरोहर नहीं रहा, अब वह यमराज की पूँजी है, उसके शरीर व प्राणों पर यमराज का अधिकार है।

नचिकेता यमलोक पहुंचा और यम के द्वार पर खड़ा हो गया। पहली बार यह एक विशेष घटना घटी ब्रह्माण्ड में। इस घटना को समझने की जरूरत है। प्रयोक्ता व्यक्ति के द्वार पर मृत्यु आती है, पर यहां पर मनुष्य स्वयं मृत्यु के द्वार पर पहुंचा, बिलकुल विपरीत स्थिति बनी। आज तक तो यह हुआ, कि यमराज स्वयं व्यक्ति को लेने के लिए आए, और यहां पहली बार यह बात हुई, कि व्यक्ति स्वयं यमराज के द्वारा ये पर पहुंच गया।

— पर जो हिम्मत और ही सज्जा रखता है, जो दृढ़ता रखता है, जो मौत के दरवाजे पर पहुंच नाता है, उसे वहां मौत नहीं मिलती। मौत ही कावरों को मिलती है, जो कायर दुलक कर वर में धुस कर बैठ जाते

है, जीत उनके बोलती है, मगर जो स्वयं चलकर मौत के दरवाजे पर पहुँच जाते हैं, उन्हें जीत प्राप्त नहीं होती। यहां उपनिषद के एक मूल नर्म वा व्याख्या है।

— नचिकेता जाता है यम के द्वार पर, लेकिन वहां पर यम नहीं मिलते . . . जो व्यक्ति नृत्य के द्वार पर स्वयं चलकर पहुँचता है, और बहल है, मैं देखता हूं — मृत्यु क्या है?

— मृत्यु का सौन्दर्य क्या है?

— मृत्यु भेदा क्या अहित कर सकती है?

— जो व्यक्ति इतना हींसला और डिम्मत रखता है, मृत्यु उसके पास नहीं पहुँचती। मृत्यु के दरवाजे उसके लिए नहीं खुलते हैं।

उनके लिए अमृत्यु के दरवाजे खुलते हैं, जीवन के दरवाजे खुलते हैं, पूर्णता के दरवाजे खुलते हैं, क्योंकि मृत्यु कायरों को प्राप्त होती है — जो जीवनबाट है, जो बेतनबाट है, जो श्रेष्ठ है, उनको मृत्यु प्राप्त नहीं हो सकती है।

— और नचिकेता भी स्वयं चलकर मृत्यु के द्वार पर पहुँचा और नृत्य वहां नहीं थी, मगर नचिकेता तो यह निश्चय करके गया था, कि वह मैं मृत्यु के द्वार पर पहुँचूगा, तो मैं तब तक वहां बैठा रहूँगा, जब तक नृत्य मुझे मिलेगी नहीं, जब तक अनराज मुझे चिह्नित नहीं देंगे, तब तक मैं वहां बैठा रहूँगा, और इसी दृढ़ संकल्प के साथ वह दरवाजे पर बैठ गया।

यम की पत्नी यमी बाहर आई, एक बालक को देखा भृखा-प्यासा, उसने कहा — ‘तुम भोजन कर लो, जब यम आयेंगे तब मिल देना।’

बालक ने कहा — ‘मही! यह मेरा शरीर, मेरी पूँजी तो धम की है, जब वे आजा देंगे, तभी मैं ज्ञेयन करूँगा, अब अधिकार उनका है, जैसी आज्ञा देंगे, उसे पालन करना मेरा कर्त्तव्य और धर्म है। मैं तब तक यहां बैठा रहूँगा, जब तक कि वे वहां नहीं आ जाते।’

तीन दिन तक नचिकेता यम के द्वार पर भृखा-प्यासा बैठा रहा।

वहां पर उपनिषद का एक और मन्त्र हमरे सामने स्पष्ट होता है। वह तीन दिनों तक भृखा रहा, और जो भृखा रह रहा रह सकता है, उसको मृत्यु प्राप्त नहीं हो सकती।

तीन दिन — उन तीन गुणों के द्वालक हैं, जिन्हें तामसिक, राजिक और नचिक बोला गया है। लोग आमतौर पर मानते हैं, कि साधिक रिधिति श्रेष्ठ है, पर अस्तव में ऐसा है नहीं। इस उपनिषद में बताया गया है, कि इन तीनों गुणों से परे जो विशेषता आती है, वह सर्वोत्तम है, योगियों के लिए उपसूत है . . . और भृख तो इन तीन गुणों की भी नहीं होनी चाहिए — उपवास ही जीवन का मूल धर्म, चित्तन और विशेषता है, क्योंकि उपवास के द्वारा जीवन की पूर्णता प्राप्त होती है। नचिकेता ने उपवास किया और उपवास की परम्परा वहां से ग्राह्य हुई।

जो जितना ही ज्यादा खाता है, वह उतनी ही जल्दी मरता है। जिसका आहार जितना कम होता, वह उतना ही अधिक स्वस्थ और वीर्ययु ढोगा, इसलिए आहार पर नियंत्रण प्राप्त करना जरूरी है। इसलिए बुद्ध ने, महावीर ने उपवास की परम्परा की ओर आगे बढ़ाया, क्योंकि हमारा शरीर अपने जाग में एक अद्भुत, महत्वपूर्ण यंत्र है। यह इस उपवास करते हैं, तो तीन या चार पांच दिन के बाद तो भृख लगती है, मगर उसके बाद हमें भोजन की कोई इच्छा नहीं होती। हमरे अन्दर भी जन का जो संग्रह है, हमारे अन्दर जो बद्धा हुआ सोस है, उस चर्ची को पिघलाकर शरीर अपनी सुरक्षा कर लेता है — यह शरीर की बहुत बड़ी विशेषता है।

— अन्य साधु, संत जहां बैदों की ओर पुराणों की पद्धी

पकाई बात करते हैं, जो कुछ उन्होंने

पढ़ा, वह कहते हैं, वहां मैंने जो कुछ

जीवन में देखा है और अनुभव

किया है,

— का ‘सिलम्बर’ 2000 मन्त्र-तत्त्व-यंत्र विज्ञान ‘11’

उसको कहता है। खाली आंखिन देखी बात नहीं करता हूँ, पोछिन पढ़ी बात भी नहीं करता हूँ। जो जीवन में मैंने अनुभव किये हैं, वे ही मेरे शब्दों को सार्थकता प्रदान करते हैं। यदि कोई मंत्र सही है और मैंने उसे अनुभव किया है, तभी मैं बताने की क्षमता रखता हूँ। इसलिए ब्रत और उपचास का सामग्रूह अर्थ समझा रहा हूँ, तो उन अनुभवों के आधार पर ही समझा रहा हूँ, जिनको मैंने स्वयं परखा है।

कालथक तो घूमता ही रहता है, समय तो अपने-आप में परिवर्तित होता ही रहता है। कोई भी कार्य, कोई भी संकेत कम-से-कम गुरु की तरफ से तो अकारण होता ही नहीं। प्रत्येक इब्द का अपने-आप में एक महत्व होता है, प्रत्येक घटना का अपने-आप में एक सम्बन्ध होता है। गुरु टीक समय पर ठीक कार्य करते ही हैं, न एक क्षण पहले, न एक क्षण बाद में। यह जात अलग है कि कोई किसी भी घटना को और कार्य को किस रूप में परखें, अनुभव करें, तो विश्वास करें या नहीं करें, यह उस व्यक्ति की बात है।

गणा नवी बढ़ रही है, आप स्नान करें या नहीं करें, आप शुष्टि जल करें, आप पवित्र जल करें, आप उसका जानी पायें या नहीं पायें, यह आपको बात है। गणा नदी आपको नहीं कहेगा, कि आप मेरे जल में स्नान करें और पवित्र हों... आपकी विचारशाश्रया और आपका चिंतन कैसा है... वह तो आप पर निर्भर है। कई लोग उसका प्रश्न पूछ रहे हैं, और उसके पास मैं भी नहीं खड़े होते। हरिद्वार के सेकड़ों-हजारों लोग नदी में जल विषजन करते हैं, उनका चिंतन बैसा है।

कुछ लोग जाते हैं, तो उस नदी में खड़े होकर स्नान करते हैं, बहुत शोतुलता अनुभव होती है... यह तो अपने-अपने चिंतन की बात है। यह जान की सरिता भी अपने-आप में बह रही है, कोई उसको अनुग्रह करें या नहीं करें, समझें या नहीं समझें, लाभ उठायें या नहीं, वह तो विषेक पर आधारित है।

विषेकबान होना चाहिए, विन्तु विषेक का प्रयोग सूजनशाल कार्यों के लिए ही करना चाहिए। विषेक का प्रयोग जब कुतक और विनाशपूर्ण कार्यों के लिए करते हैं, तब उसे बुद्धि शब्द से संबोधित करते हैं, और तब बुद्धि अपने-आप में वेष्या की तरह ही जाती है, विन्तु इसी विषेक का प्रयोग जब सूजन के लिए किया जाता है, तब विषेक को अद्वा शब्द से सम्बोधित करते हैं, और अद्वा एक पतिव्रता स्त्री की तरह होती है, इस प्रकार विषेक के दो पक्ष हुए—बुद्धि और श्रद्धा।

बुद्धि विद्धिपैदा करती है, और कुमार्ण पर गतिशील करती है, वह सदैह पैदा करती है, वह मनुष्य को भटकाती है, वह मानव को झड़कार पैदा करती है... और झड़कार अपने-आप में जीवन का नाश है, बुद्धि की अतिक्रमणता जीवन का पलन है। बुद्धि का पश्चिम के लोगों ने बहुत प्रयोग किया, तो उन्होंने आपको क्या दिया? उन्होंने आपको दी इहस बीमारी, उन्होंने आपको आणु बम दिया, उन्होंने आपको अशानि दी।

तीन 'अ' दिये, चौथी चौंज नहीं दे सके वे... आनन्द नहीं दे सके, सुख नहीं दे सके, प्रसन्नता नहीं दे सके, हसी नहीं दे सके, मुस्कराहट नहीं दे सके—मृत्यु दे सके... इराक में हजारों लोगों को मार कर दिया दिया... यह तो बहुत चटिया बात हुई—विषेस उनको जीवित कर दें, यह बहुत बड़ी बात होगी।

—ऐसा पश्चिमी सम्बन्ध नहीं कर सकती, बुद्धि नहीं कर सकती।

इसके विपरीत श्रद्धा अपने आप में उत्पन्न करने की किया है, श्रद्धा जीवन देती है। मेरे हुए व्यक्ति के मन में भी एक चिंतन होता है, कि मैं कुछ क्षण जिन्हा रहूँ, गुरु चरणों में बैठूँ, ऐताओं के घरणों में बैठूँ, मैं गीता, रामायण का पाठ सुनूँ,

जहां यह जिन्हें और उनका रहने का प्रयत्न करता है, अद्वा के अतिरिक्त में, श्रद्धा के विश्वास में।

इस बीच वो बुद्धि की अतिक्रमणता है, वह परिचय की देन है, हमारी देन नहीं है, हमारे पूर्वजों की देन भी नहीं है, वे इसे अपने बुद्धि ग्रन्थ नहीं दें, वे अद्वा करने वाले थे — गंगा नदी पर, वेष्टाओं पर, विमालय पर, गुरु पर, अपने दुर्लभी जल — एक अद्वा थी, एक आत्मविश्वास था, मां आप के प्रति, सम्बन्धियों के प्रति और शिशुदारों के प्रति, उन्हें एक देन था . . . हमने उस प्रेम को बासना के अर्थ में लेकर एक घटिया और गन्दा शब्द बना दिया . . . जिसके हार मी जब संकोच होने लगा है, कि मैं प्रेम शब्द लिखूँ, कि नहीं लिखूँ . . . मैं लिखूँगा और अप्पाजा सीधा माझे वही जायेगा, कि प्रेम मीन्स ज्यार, ज्यार मीन्स . . . रुलटै।

— यह आपका चिंतन है, मेरे मन में तो ऐसी कोई बात ही नहीं।

“महावीर स्वामी” अपनी साधनार्जों के माध्यम से अव्यन्त उच्चतम भाव धूमि पर अस्तित्व थे, उन्होंने तपस्या के माध्यम से साधना के उप स्तर को प्राप्त कर लिया था, जहां वे वह भाव से ऊपर उठ गये, एक गांव में पहली बार महावीर स्वामी गए, तो वहां के लोगों ने सोचा — यह जल व्यक्ति कहां से आ गया? लोगों ने कई प्रकार की बातें भी की, पर महावीर स्वामी शांत नहीं।

उनके एक शिष्य ने कहा — “स्वामी जी! बहुत अटपटा लग रहा है, गांव के लोगों की बात सुनकर, कि आप नहीं हैं।”

— “मैं नहीं . . . !”

महावीर बोले — “मैं तो नहीं हूँ दी नहीं, उनकी आंख में नशापन है, इसलिए वे जबल यही देख रही हैं, कि मैंने कभड़े नहीं पहने हैं . . . जबकि मुझे तो कुछ ऐसा पता ही नहीं पड़ रहा।”

इसी प्रकार यह आप पर निर्भर है, कि आप मेरे किसी शब्द का क्या अर्थ समझें, वही अर्थ लगायेंगे, जो आपका दृष्टित मन कहेगा। आपके मन में छल है, जबके मन से पाप है, तो आप उलटा सोचेंगे ही। किसी घड़े में अगर धास-फूस हो जाए तो उसमें पानी डालन्, और पानी से घड़ा भरने, तो पहले बाहर क्या निकलेगा? . . . वास-फूस निकलेगी, पहले शुद्ध जल तो नहीं निकलेगा। इसी तरह जब गुरु जान डालता है, तो शिष्य के अन्दर जो छल है, मल है, द्रेष्ट है, झूठ है, गुरु के प्रति कहां है, यह सब निकलता है बाहर। आपके अन्दर जो है, घड़े के अन्दर जो है, वही तो निकलेगा बाहर।

मगर जीवन के क्रम में शुद्धता रहनी चाहिए। गुरु बार-बार यह बात देहराता है, तो इसलिए, कि जीवन में एक अनुकूलता पैदा हो, जीवन में सुख पैदा हो। तुम्हारे जीवन में वैभव भी हो, थन भी हो . . . गुरु ऐसा नहीं कहता कि तुम निर्धन बन जाओ।

महावीर स्वामी, बुद्ध किसी ने भी नहीं कहा, कि तुम निर्धन बन नाओ या भूखे रहो, उन्होंने यह अवश्य कहा — “त्याज और उपशम करो” . . . किन्तु बाद में उनके कनूपायियों ने, जो उनके चिंतन को समझ नहीं सके, उन्होंने यह कहा, कि ब्रह्म रखो, भूखे रहो, जितने भूखे रहोगे, उनसे ही ज्यादा धार्मिक कहलाओगे, और तभी से यह क्रम आरम्भ हुआ, कि भूखे रहना चाहिए, वो

दिन ब्रत करना चाहिए, पांच दिन ब्रत करना चाहिए, स्यावह दिन

ब्रत करना चाहिए, और औरतों को तो तीस

दिनों में तीस दिन ब्रत

करना चाहिए —

आज एकावशी का ब्रत है, आज पूनम का ब्रत है, और आज तीज का ब्रत है... और उत्तर बेचारी सूख के कांटा होनी रहती है, ब्रत करती रहती है, और उसे भिलता कुछ नहीं।

उपवास तो अलग चीज़ है, उसका उद्देश्य भी सर्वथा अलग है, जो कि अपने-आप में एक गृह चिंतन दूर करते हैं।

मुझे कोई ब्रताएं तो सही, कि कहाँ पैसा विधान लिखा हुआ है। कोई वेव, कोई पुराण, कोई उपनिषद्, कोई शास्त्र, कोई तो चीज़ मेरे सामने लाकर रखे, कि देखो हमसे ब्रत-विधान लिखा हुआ है। ब्रत जैसा कोई चिंतन है ही नहीं कहो। पीछे जो दौड़ी पैदा हुए उनको कुछ आता ही नहीं था, कथा लिख दी, कि एक राजा था, राजा ने तीन दिन ब्रत किया, उसके घर में पुत्र पैदा हो गया।

ब्रत... उन निया, कि तीन दिन ब्रत रखने से पैदा हो जाता है लड़का! अब तीन दिन धूखे रहने से ही बच्चे पैदा होते, तो फिर चाहिए ही क्या, पूरे संसार में सभी के ही पुत्र पैदा हो जाते - किसी ने लिख दिया आपने मान लिया।

तुम भी एक कथा लिख दो... और उस कथा में कुछ भी लिख दो, कि ग्यारह दिन तक ब्रत करने से दरिद्र आदमी के सामने लक्ष्मी खुद आकर प्रकट हुई, ऐसे तो पांच सौ लोग निकल ही आयेंगे, जो ग्यारह दिन धूखे रहने बैठ जायेंगे, क्योंकि यह लिखा हुआ है, छपा हुआ है... भस्तर में लिखा हुआ है, इसलिए प्रामाणिक है ऐसा नहीं सोचना चाहिए, अपने-आप अनुभव करके देखना चाहिए क्योंकि अनुभव द्वारा ही वास्तविकता का बोध होता है।

आप पहले ग्यारह दिन धूखे रहिये, और अगर आपके संतान हो जाय, तो फिर लिखिए, वह तो छोगा नहीं, बस आपको तो पोथी छापनी है और वो रुपये में बेचनी है, पोथी खिल दी... लिख दी और बिक गई, पोथी पढ़कर सब कुछ प्राप्त कर लेने की इच्छा रखने वाले मिल ही जायेंगे... ऐसा वास्तविक जीवन में नहीं होता।

इसलिए मैंने लिखा, कि धूखे रखना और निर्धन रहना अपने-आप में कोई अहमता नहीं है, यह तुम्हारी कोई विशेषता नहीं है, तुम्हारी कायरता है, यह तुम्हारी बुजविली है... क्योंकि तुम कुछ कर नहीं सकते, इसलिए तुमने धूखे रहने की क्रिया को अहुत महान मान लिया - महावीर स्वामी अहुत महान हैं, क्योंकि वे धूखे रहे थे।

ब्रत भी धूखे नहीं रहे थे, अपितु उन्होंने उपासना की, और ज्योहीं सुजाता आई, उसने ब्रह्माभाव से खीर दी, तो उन्होंने सुजाता की भावना को ध्यान रखु कर खीर खा ली... खा लिया, ऐसा कष्टकर मैं उनकी आत्माचाना नहीं कर रहा हूं। मैं यह कह रहा हूं, कि ब्रत रखने से उनको कैवल्य ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ था, कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था - तपस्या के माध्यम से, चिंतन के माध्यम से, विचारों के माध्यम से... ज्ञान और भ्रूव का कोई सम्बन्ध नहीं है।

जैनियों में एक प्रथा है, जब वे साठ, सत्तर साल के हो जाते हैं, तो वे संतारा लेते हैं। संतारा का अर्थ है - सांसारिक क्रियाओं से स्वयं को विरक्त कर देना, और अपना पूरा ध्यान अपने इष्ट के प्रति लगा देना। बहुत कठिन तपस्या होती है, जिसे बहुत बृह निश्चय वाले व्यक्ति ही कर पाते हैं। जैन लोग बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं, और अधिकांश व्यक्ति अधी उष्ण पार करने के बाद अपना पूरा चिंतन महावीर स्वामी के प्रति ही रखते हैं। जब उनको यह एहसास होने लगता है, अब मृत्यु सज्जिकट है, तो वे अब जल सभी का त्याग कर देते हैं। संलाप लेने के पांछे एक अत्यन्त दिव्य भावना मोक्ष प्राप्ति की क्रिया है।

- किन्तु युग परिवर्तन के साथ ही साथ लोग संतारा के मूल तथ्य को भूल गये और सिर्फ इतना ही याद रखा, कि जब व्यक्ति की मृत्यु होने वाली हो, तो उसे दाना-पानी कुछ भी नहीं देना चाहिए। इस तरह की भावना को देखकर सुनकर बहुत कष्ट होता है, कि इस आधुनिकता की अंधी दौड़ में, अपने मूल चिंतन से बिलना भटक गये हैं।

आप खुद कल्पना कर सकते हैं, किसी प्रथा कैसे और कब आरम्भ हो गई? और

जिन्होंने ऐसा लिखा दिया? महावीर स्वामी के गुण जिनवाणी में कही ऐसा लिखा हुआ नहीं है। जो महावीर स्वामी ने लिखा है, उसमें किसी जैन ने कुछ और जोड़ दिया और आप उसको पकड़ कर बैठ गए... मगर वह उनका धर्म है, उनका चिन्ह है, मैं उनकी आलोचना नहीं कर रहा हूं, किन्तु यह बता रहा हूं, कि लोगों ने कितना विकृत कर दिया है इसको। हम एक प्रकार से फ़ूँदिग़ाल हो गए हैं।

प्रश्न आलोचना का नहीं है, प्रश्न अनुभव का है। इसलिए इस आरुकृता को भिटाने के लिए किसी भी शारीरिक व्यय के नुस्खे समझें, फिर अपनायें।

पन्नी ब्रत करती है, पति पृथग्ना है – “तुम व्यौ भूखी मर रही हो? किस के लिए, जब मैं इतना कमा रहा हूं, तो किस तुम भूखी व्यौ मर रही हो?”

बह बहती है – “आपको मालूम नहीं है।”

– “चलो मुझे मालूम नहीं है, तुझे मालूम है, तो तुँहीं ब्रता दो। तूँ दो दिन भूखी मरती है, तीन दिन नहीं दें सबह विन तो भूखी मरती ही है, और नेवल तेरह दिन खाना खाती है। बेशक दो चार दिन इन और कर ले, सूख के कोटा दो जायेगी और मैं क्या कह सकता हूं। मैं तुझे रोकूं, तो तूँ अप्पेणी नहीं... और तैसे सकती नहीं हैं, वे नो ब्रत रखने में ही सब पुण्य समझती हैं... वे सोचती हैं, कि घर में जो कुछ उचित ढो रही है, उनके भूखे रहने से ढो रही है।”

– “तुम कुछ नहीं समझते जी, ऐसी नासितियों बाली आत व्यौ करते हो।”

– “नहीं समझते, तो कोई बात नहीं, तूँ ही समझ” – और क्या कह सकता है पति

बह नमस्तो रहती है, भूखी मरती रहती है, पति बेचारा झीकता रहता है, दबा पर सप्ते बहवं करता रहता है।

– व्यौकि उन्होंने धर्म का एक विकृत रूप पकड़ रखा है।

शास्त्रों में थनहीन या नूँझे रहने के लिए नहीं लिखा है। शास्त्रों में लिखा है –

“अन्य चमूँद रहें, प्रत्येक भौतिक सुख सम्पदा से युक्त रहे।” वशिष्ठ, विश्वामित्र, अति, कल्याण आदि जितने भी हमारे क्रष्ण हुए हैं, देवता हुए हैं, उनमें गरीब तो कोई भी नहीं था, नूँझे बताइये, कि उनमें ये कौन गरीब था? देवताओं के बेहरे, लाल सुरुँ हैं, इतने लाल सुरुँ चेहरे तुम्हारे तो हैं ही नहीं।

ऐसा इसलिए, व्यौकि कि तुम में मंत्रों के प्रति आसथा नहीं रही, जबकि वह के माध्यम से ही जीवन में पूर्णता आ सकती है, अन्य किसी तरीके से नहीं आ सकती। अगर सिर्फ़ मेहनत-मजदूरी के माध्यम से या और किसी तरीके से पूर्णता ज्ञ नस्कती, तो कोई गरीब नहीं रहता। सैकड़ों हजारों लोग हैं, जो दिन घर मजदूरी करते हैं, परंथर उठाते हैं, दिन घर मेहनत करते हैं, और शाम को बीस रुपये लेकर घर जाते हैं, पच्चीस रुपये लेकर घर जाते हैं।

जो भाग्यवान होते हैं, या जिन्होंने पूर्वजन्म में तपस्या की होती है या इस जन्म में तपस्या की है, वे ही पूर्ण घर सकते हैं। पूर्वजन्म के किये-कराये हिसाब तो हमें मिलते ही हैं – उस पूर्वजन्म के कर्मों का फल तो हमें इस जन्म में प्रोग्ना पढ़ता ही है, अच्छा तो या बुरा। इसलिए हिरण्यकश्यप के घर में प्रह्लाद देवा हो जाते हैं। हिरण्यकश्यप जैसे राक्षस, सताने वाले के घर में प्रह्लाद जैसा भला, एकम सात्विक व्यक्ति देवा हो, तो नरुर उसने पूर्वजन्म में कुछ किया होगा, इस जन्म में तो कुछ किया हो नहीं था। हम आशच्चर्य करते हैं, कि हम रोज़ घार घैटे पूजा करते हैं लक्ष्मी की, विष्वा जी की और ऐसे लोगों के घर में लक्ष्मी आ जाती है, जो रोज़ लोगों को गालियां देते हैं, देवताओं की कभी दूना नहीं करते, हाथ नहीं झोलते,

फिर मी उनके पार में पैदे बरसते हैं... ये क्या खेल है? हमें आवश्यक होता है, क्योंकि हमने पिछले जीवन की कड़ी को नहीं बेखा, पिछले जीवन की कड़ी और हम जीवन की कड़ी नुड़ी हुई है।

जीवन में भौतिक उत्तित और आध्यात्मिक उत्तित का समन्वय ही सके, क्योंकि खाली आध्यात्मिकता से काम नहीं चलेगा और खाली भौतिकता से भी नहीं चलेगा, उन दोनों का हमारे जीवन में सम्बन्ध होना चाहिए। हमारे जीवन में एक परिवृगता आनी चाहिए, हम जीवन में सम्पन्न भी रहें, हम जीवन में आनन्दयुक्त भी रहें, दोनों जीवन चले... और वही जीवन की पूर्णता है।

यह तो प्रस्तुगवडा में बह और उपवास के अनन्तर को समझा रहा था, मैं पुनः उसी मूल चिन्तन पर आता हूं।

— इसलिए नचिकेता ने यह निश्चय कर लिया, कि मैं उपवास के माध्यम से यम को प्राप्त करूंगा, और यम से वह प्रश्न पूछूंगा, जिसके हारा जीवन का गर्भ, जीवन का उद्देश्य, जीवन का लक्ष्य और जीवन का ध्येय स्पष्ट हो सके।

नचिकेता तीन दिन तक भूखा प्यासा यम के डार पर बैठा रहा, मृत्यु के डार पर बैठा रहा। चौथे दिन यम आए तो उनकी पत्नी ने कहा

— “एक बाल्पण पुत्र तीन दिनों से भूखा प्यासा दरवाजे पर बैठा है, और हमारा कर्तव्य है, कि पहले अतिथि को भोजन कराएं, उसके बाव हम भोजन करें।”

अतिथि, जो दिन तिथि बताए थे वह आए। जो पहले से सूचना देकर आए, वह अतिथि नहीं है, जो पहले से बताकर आए और हम उनके घर आने की खुशी में सभी लैयारी करके रखे, यह जीवन की देहता नहीं है। देहता तो यह है, कि हम हर समय तैयार रहें।

यम बाहर आए, नचिकेता खड़ा हो गया। यम ने कहा — “मुझे जान दूआ है, कि तुम तीन दिन से भूखे प्यासे मेरे दरवाजे पर खड़े हो... पर क्यों खड़े हो? — क्या चाहते हो? — क्या इच्छा है? — तुम क्यों आए हो? — जिनकी आद्य समाप्त हो जाती है, उन्हें मैं स्वयं लेने के लिए जाता हूं। तुम खुद चलकर मेरे दरवाजे पर आए हो, यम के दरवाजे पर आए हो, नीत के दरवाजे पर आए हो, ऐसा तो कभी हुआ ही नहीं!”

नचिकेता बोला — “मेरे पिता ने मुझे आपको सौंप दिया है, अब हस शरीर पर, मेरे मन पर, मेरे प्राणों पर, नेरी चेतना पर मेरा कोई अधिकार नहीं है, हन सब पर आपका अधिकार है। आप जो भी आजावेंगे, मैं उसका पालन करूंगा।”

यम ने कहा — “तुम्हारे यहां आने का क्या प्रयोजन है, क्या लक्ष्य है? तुम तीन दिन से मेरे दरवाजे पर झूखे प्यासे बैठे रहे हो, इसलिए तुम तीन दरवाजे भाग नो, मैं तुम्हें तीनों दरवाजे ढूँगा।”

नचिकेता ने उनके लिए कहा — “आपने पूछा है, मैं किस प्रयोजन से आया हूं? — मेरा क्या उद्देश्य है? — मेरा क्या लक्ष्य है?... तो मेरा लक्ष्य यह है, कि मैं उस विद्या को जानना चाहता हूं, उस किया को जानना चाहता हूं, जिसके माध्यम से हम (मनुष्य) मृत्यु से परे हो सकें, जिससे मृत्यु दमारा कुछ बिगड़ नहीं, मृत्यु द्वारे लेने के लिए आए ही नहीं।”

— “क्या कोई ऐसी विद्या है?”

— “क्या कोई ऐसी किया है, जिसके द्वारा हम मृत्यु को नीत सकें?”

— “मैं आप पर विजय प्राप्त कर सकूँ, ऐसी कोई स्थिति है?”

— “ऐसा कीन सा विजय है? ऐसी कीन सी साधना है?”

नचिकेता ने कहा — “यदि आप मेरे दरवाजे के लिए भक्त्युप बढ़ा है, तो पहला दरवाजे यह दीर्घ, कि मेरे पिता को कभी ब्रोधे

न आए, वे शोन जीर सहज भाव से रह आर दिव्यता से नीतन योग्य कर, उनके जीवन में खुल और सौभाग्य हो।”

बहुत अधिक गतिशील रूप कुछ नहीं मांगा, उसके माग, कि मेरे पिता अकोधा हो, क्योंकि अकोध से हो जीवन की

मूलतः यहीं जा सकती है। जो क्रोध कर लेता है, वह जीव में ही समाप्त हो जाता है। क्रोध मृत्यु का ही सूक्ष्म कारण है।

यमराज ने कहा – “तथासत्! तुमने बास्तव में ही पक उत्तम कार्य सम्पन्न किया है।”

यहीं उपनिषद् एक बहुत नर्म की बात कहता है। जो तुम पर क्रोध करता है, उस पर भी तुम क्रोध करो। पिता ने नचिकेता को यम को दे दिया, क्रोध किया, फिर भी नचिकेता के मन में उनके दूषित हना का धाव था, यहीं तो जीवन का मर्म है। उपनिषद् की यहीं तो व्याख्या है, कि जो हमारा कठिन नोचे, जो हमें गाली दे, जो हमें मारने के लिए तैयार हो जाय, उस पर भी हम अक्रोध करें, कल्पना की वृद्धि करते रहें, वया करें, उसके लिए भी हम अच्छा ही चीजें... नचिकेता ने ऐसा ही कहा।

यम ने कहा – “तुम दूसरा वरदान भी मांग लो।”

नचिकेता ने कहा – “यदि आप मुझे वरदान भी देना चाहते हैं, तो मुझे अग्नि विद्या दीजिए। जिस विद्या के द्वारा मैं अपने जीवन को अग्निमय बना सकूँ, क्योंकि उस अग्निमय स्वरूप द्वारा ही मेरे जीवन की पूर्णता सम्भव है।”

यहां पर भी उपनिषद्कार ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही है। हमारा शरीर इसलिए ऊष्मा है, इसलिए स्वस्य है, इसलिए जीवित है, कि वह अग्निमय है, अग्नि तत्त्व प्रश्नाहै, और जिस समय अग्नि तत्त्व की ओर तेजता है, तब शरीर ठंडा हो जाता है, शरीर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, जब तक शरीर मृत्यु को प्राप्त हो ही नहीं सकता।

नचिकेता यहां पक बहुत नर्म की बात पूछ लेता है, वह कहता है – “मुझे वह अग्नि विद्या दिखाइए, जिसके द्वारा मैं निरन्तर अपने दूषित में, अपने शरीर में, अपने प्राणों में अग्नि को प्रभूलित बनाए रखूँ।

नचिकेता ने कहा है, जिस अग्नि में मेरा क्रोध खत्म हो जाय, मेरा लोभ खत्म हो जाय, मेरा मोह खत्म हो जाय, मेरा अज्ञान खत्म हो जाय, मेरे जीवन की चिंताएँ खत्म हो जायें, जिस अग्नि में जलकर मेरी सभी न्यूनताएँ भस्म हो जायें, मैं ऐसी अग्नि विद्या चाहता हूँ। मैं उस अग्नि विद्या को सीखना चाहता हूँ, जिसके द्वारा मैं तेजस्वी बन सकूँ, उन मर्मों को स्पष्ट कर सकूँ, जिनके द्वारा पूरे संसार को एक ज्ञान, एक चेतना, एक ब्रह्मता दी जा सकती है।

– और वास्तव में ही अग्नि विद्या है, जिसके द्वारा निर्मित होता है – अत्यन्त शांत, अत्यन्त सरल और ऐसा अद्वितीय व्यक्तित्व, जिसमें क्रोध नहीं हो, जिसमें दूळ नहीं हो, जिसमें धाय नहीं हो, जिसमें पाराकृष्ण नहीं हो, जिसमें व्यभिचार नहीं हो... और ऐसे ही तेजस्वी पुरुष में परिवर्तित होना जीवन की महानता है। महापुरुष बनने की यहीं तो परिभाषा है, छठी इंद्रिय नागरण का यहीं तो मार्ग है, इसी को तो देवत्व बना जाता है, इसी को तो श्रेष्ठत्व कहा जाता है, इसी को तो कर्णित्व कहा जाता है।

नचिकेता ने दूसरा वरदान अत्यन्त महत्वपूर्ण माणा, जिस अग्नि मंत्र के माध्यम से अन्दर की प्राणगिनि को प्रज्वलित किया जा सकता है। यथापि कि मानव शरीर में जठराग्नि है, और जठराग्नि का तत्त्वर्थ है – जो कठु में भोजन करता है, वह मैं पचा सकूँ, जलका इकू बन सकूँ, और उन इकू से अपने पूरे शरीर को जीवनसंख सहन, यह दो जठराग्नियाँ हैं... मगर ऐसा ओराजीजिस जनापदवीन में उपलब्ध होता है।

प्रत्येक के शरीर में प्राणानि तो है, मगर वह बुझी हुई है, उसमें चेतना नहीं है, उसमें हलचल नहीं है। वह तो ठीक वैसा ही हुआ, जैसे कि हमरे घर में कोई वस्तु है, और हम उसका उपयोग नहीं हो नहीं, यदि उपयोग नहीं जानते, तो उसका कोई प्रयोजन नहीं है। हमें यह भी पता नहीं है कि प्राणानि को कैसे प्रज्वलित किया जाय, और जब तक प्राणानि प्रज्वलित नहीं होंगी, तब तक साधना में सिद्धियां प्राप्त नहीं होंगी। जब तक भिड़ियां प्राप्त नहीं हो सकती हैं, तब तक व्यक्ति उस मृत्यु को नहीं जीत सकता। मृत्यु को जीतने के लिए, सैवार्द्ध-इनार्द्ध योगी आशु के प्राप्त करने के लिए पहली और अनिवार्य शर्त है, कि हम प्राणानि को प्रज्वलित करें।

ॐ प्राणः सत्यम् ये प्राणः त्वं पूर्वे वृ ववां तां पूर्वं वय वदें ती

जपि की वाणी बेद में स्पष्ट होती है – “अगर मेरे जीवन का सीधाम्य हो, तो मेरी प्राणानि जो बुझी हुई है, प्रज्वलित हो जाय, उस प्राणानि का प्रज्वलन करके मैं जीवन के उन रहस्यों को खुद सकूँ, जिनके माध्यम से जीवन की श्रेष्ठता प्राप्त हो सकती है। मैं वापिस योवनवान बन सकूँ, जीवनवान बन सकूँ, मैं ऐसा बन सकूँ कि लोग मुझे देखें और एहसास कर सकें, कि वास्तव में मुख्यत्व क्या होता है, स्वीकृत क्या होता है? अपने आप में अद्वितीय सोन्दर्य प्राप्त कर सकूँ – और यह सब वृप्तियों को सम्पोहित करने की कला प्राणानि के माध्यम से ही सम्भव हो सकती है।”

जो वास्तव में ही अद्वितीय योगी और योग्यार्थी होते हैं, उनके चेहरे में एक विशेष प्रकार का प्रभाव होता है। उन्हें जो देखता है, वह सम्मोहित हो जाता है, मोहित हो जाता है, उस चेहरे को भूल नहीं पाता, अन्तों को भूल नहीं पाता, हर क्षण उनके मन में रहता है, कि जल्द ही उस व्यक्ति में ऐसा कुछ है, उसकी आवाज में जादू है... और यह आवाज में जाशु चहरे का आकर्षण प्राणानि प्रज्वलित होने पर सम्भव है। लाखों करोड़ों व्यक्तियों में से किसी एक की ओर प्राणानि प्रज्वलित हो सकती है, और वह प्रज्वलित हो सकती है – “गुरु चेतना के माध्यम से, गुरु ही उसे जान दे सकता है, क्योंकि इस अग्नि को प्रज्वलित करने की किया केवल गुरु जानता है। वही जानता है, कि किन मनों के माध्यम से, किस किया के माध्यम से प्राणानि प्रज्वलित हो सकती है।”

कुछ विशिष्ट क्रियाएं हैं, और प्रत्येक क्रिया जानने आप में अद्वितीय है। सी क्रियाओं के द्वारा सी बीजोदभव हुआ, ‘‘साम चेतन्य’’ तीसरा बीजोदभव हुआ ‘‘आतोउतान्नाम’’ यह चीथा बीजोदभव हुआ “पूर्वत्वं सं पूर्ववदेव” यह पांचवा बीजोदभव हुआ और इस प्रकार से सी बीजोदभवों का उच्चारण करना लोग और विलोम गति से, उस प्राणानि को प्रज्वलित करने की प्रक्रिया है। कुछ विशेष मुत्राओं के माध्यम से उन बीजोदभवों को सम्पूर्ण करना, अपने-आप में प्राणानि को प्रज्वलित करना है। जब यह प्राणानि प्रज्वलित होती है, तो स्वतं ही चेहरे पर एक चैतन्यता प्रकट हो जाती है। अपने-आप आखों में एक लपक पैदा हो जाती है, एक चमक पैदा हो जाती है, एक तेजस्विता, एक ऋकाज-पुञ्ज पैदा हो जाती है।

यम ने कहा – “मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, कि तुम्हारी प्राणानि प्रज्वलित हो और तुम मृत्यु से परे हो सको।”

वहां उपनिषद ने एक और गुढ़ बात कही, जिस पर विचार करना आवश्यक है। यम ने कहा – “मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, कि तेरा प्राणानि प्रज्वलित हो।” हसका तान्पर्य यह हुआ, कि प्राणानि प्रज्वलित करने के लिए दो तरीके हैं – एक तरीका मुत्राओं, क्रियाओं और मन के माध्यम से, और दूसरा तरीका किसी अद्वितीय योगी के आशीर्वाद के माध्यम से भी। यदि गुरु चाहे... जिसकी

नवानि प्रज्ञानित है, जो अपने-आप में अनि विशिष्ट योगी है, जो सही अर्थों में गुरु है... तो वह आशीर्वद देकर भी शिष्य को प्राणानि प्रज्ञानित कर सकता है, जैसा कि यस ने आशीर्वद देकर नविकेता की प्राणानि प्रज्ञानित की।

नविकेता ने कोई सुना नहीं सीखी, उसने किसी भौतिक उच्चरण नहीं किया, मगर फिर भी उसकी प्राणानि प्रज्ञानित हुई, इसलिए कहाँके दम ने उसको आशीर्वद दिया... और आशीर्वद देने का तात्पर्य है, कि मेरे पास जो प्राणानि प्रज्ञानित है, उसमें से ही कुछ भाग मैं उसे देता हूँ, जिससे कि तुम्हारी प्राणानि प्रज्ञानित हो। जिस प्रकार से एक दीप से दूसरा दीप जल सकता है, ठीक उसी प्रकार से अभर निष्ठा, नुह के पास आ जाय, तो उसके ज्ञान का बुझा हुआ दीया भी जल सकता है, प्राणानि प्रज्ञानित हो सकती है — और दूसरी किया जब के महायम से भी, उन सी बीजोद्भवों का, सी क्रियाओं के माध्यम से उच्चरण करें, लोग गति से और विलोग गति से भी। इस प्रकार निन्दन जय करने से भी प्राणानि प्रज्ञानित हो सकती है। यथापि यह रास्ता बड़ा है, लम्बा है, मगर फिर भी इस रास्ते पर चलकर कई चलोन्मे, संवयसिद्धों और ऋषियों ने प्राणानि प्रज्ञानित की है... और कर सकते हैं।

— “इन दोनों के अद्वितिय एक विकल्प भी है, जहां गुरु के आशीर्वद के माध्यम से, प्राणानि प्रज्ञानित हो सकती है, वही नुह की निकटता प्राप्त कर भी प्राणानि प्रज्ञानित हो सकती है।”

— क्योंकि गुरु तो एक जलता हुआ दीया है, जो रोशनी विख्यात रहा है, और तुम उस वीपक की भाँति हो, जिसमें तेल तो भरा हुआ है, मगर उसमें रोशनी नहीं है, यदि इन दोनों के बीच में एक सूत भर भी अन्तर रह गया, तब भी दीया नहीं जलेगा। दीया जलने के लिए यह जरूरी है, कि वह दीया उस दीये से मिल जाय... दोनों के एक-दूसरे से मिलने की क्रिया से दीया जलेगा। दीया जलने का मतलब है, शिष्य की प्राणानि प्रज्ञानित हो जाती है, वह अपने आप में एक अद्वितीय दोनों बन अमृतव्यान हो जाता है, वह स्वस्थ रह सकता है, तन्दुरस्त रह सकता है, दीधार्य हो सकता है और मृत्यु से बचे जा सकता है।

जहां मृत्यु नहीं, वहां पीड़ा भी नहीं है, परेशानी नहीं है, बाधाएँ नहीं हैं, और जब हम मृत्यु से भयभीत नहीं हैं, तो फिर हमें किसी बाल की चिन्ता भी नहीं हो सकती, क्योंकि पांडा, श्रीनारिया, कष्ट और वृद्धता मृत्यु के संकेत हैं, मृत्यु के आने की पहली थरथराहट हैं। जब रोग आ रहे हैं, तो समझ लेना चाहिए, कि अब मृत्यु पास आ रही है, जब पहली दस्तक है, जब नृत्यु के आने की घिस्ति निर्मित होती है, तो वह सी बार दरवाजे पर टकटक करती है, कभी जलतीके द्वारा, कभी शोभाली के द्वारा, कभी हाथ में दर्द है, तो कभी वात घिर रहे हैं— ये सारी की सारी स्थितियाँ बाहर-बाहर दरवाजे पर ठक-ठक कर रही हैं, कि कब नै आ रही है... वह अचानक नहीं आती, आती है आवाज देनी हुई, दरवाजे को ढोकती हुई, दरवाजे पर ठक-ठक करती हुई। जब बल्ड प्रेशर होता है, तो वह पहली आवाज देती है, कि मैं आ रही हूँ, जब आखों को रोशनी कम होती है, तो वह दोबारा कहती है, कि अब मैं आ रही हूँ— यह अलग ब्रात है, कि हम सुने नहीं, मौत तो लगातार आवाज देती रहती है।

— मगर जब प्राणानि प्रज्ञानित हो जाती है, तो उस प्राणानि में यह बुद्धापा स्वतः ही समाप्त हो जाता है, वह अपने-आप में जल जाता है, उस व्यक्ति को न पीड़ा रहती है, न बुद्धापा कष्ट रहता है, वह मृत्यु से परे हो जाता है— नविकेता के साथ भी ऐसा ही हुआ।

यम ने कहा — “अब तु दीधार्य होगा, मृत्यु तेरे अनुकूल रहेगी... तु चाहेगा, तो मृत्यु जायेगी, तु चाहेगा, तो मृत्यु नहीं आयेगी... मृत्यु नहीं आयेगी... मृत्यु नहीं आयेगी, तो फिर बुद्धापा भी नहीं आयेगा।”

नविकेता ने कहा — “आगे मुझे तीसरा वरदान मांगने को कहा, और मैं आपकी आज्ञा का पालन करते हुए तीसरा वरदान मांग रहा हूँ।”

— “आप मुझे छाता विद्या का उपयोग दें। जिसके माध्यम से व्यक्ति पूर्ण ब्रह्ममय बन जाता है, पूर्ण ब्रह्मागुरु बुद्ध बन जाता है, और उड़े ब्रह्मास्त्र इच्छा से स्वर्य को सम्बोधित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।”

यम ने कहा — “तूने तीसरा वरदान बड़ा कठिन मांगा है। मैं तुझे कहता हूँ, कि तु इस तीसरे वरदान को मांगने की हड्डोङढ़दे। लाखों गावे नुहे दे देता हूँ, मगर तु यह वरदान मत मांग।”

नविकेता ने कहा — “जो मैंने मांगा है, मैं वही प्राप्त करना

नविकेता ने कहा—“मैं इस स्वर्ण ढेर को लेकर क्या करूँगा? यह तो समास हो जायेगा, वह तो मेरे शरीर के साथ ही अपने-आप में नहीं छुप जायेगा, तो उस ब्रह्म विद्या को जानना चाहता हूँ, जो अमृतत्व है, जो अमृत कुण्ड है, जो अपने-आप में सिंचायम है, पूर्णता है, श्रेष्ठता है।”

ब्रह्म ब्रह्म बार फिर उम्मको प्रलोभन देते हैं—“नविकेता! सुन्दर स्त्रियों को मांग ले, मैं तुझे असंख्य सुन्दर स्त्रियों देता हूँ, जनका न भेज कर संकरा है, मगर इस विद्या को मत प्राप्त कर, यह बरवान मत सांगा।”

एवं नविकेता कहता है—“जो बोन मुझे चाहिए, अगर वह ही प्राप्त नहीं हो, तो मैं हजारों-हजारों सुन्दर स्त्रियों को लेकर भी क्या करूँ जाऊँ, जसका क्या प्रयोजन होगा?”

यहाँ उपनिषद्कार एक नवीन गृह रहस्य को स्पष्ट करता है, कि इस उच्चकोटि के ज्ञान, अहं ब्रह्मस्मि ब्रह्म ब्रह्म स्वयं स्वयं को प्रदान करने के पूर्व गुरु कई पासे केकता है, गुरु प्रलोभन देता है—यह विद्या तेर किली काम की जड़ोंहै, त इस विद्या को प्राप्त मत कर, मैं तुझे लक्ष्मी साधना देदेता हूँ, मैं तुझे तारा साधना देदेता हूँ, मैं तुझे अप्सरा साधना देदेता हूँ, उस अप्सरा साधना के माध्यम से तू जीवन का जानन्द प्राप्त कर सकेगा, अप्सरा हर क्षण तेरे पास रहेगी, लक्ष्मी आबद्ध किया देदेता हूँ, जिसके माध्यम से लक्ष्मी चौथीस धंटे तेरे पास रहेगी और धन की वर्षा होती रहेगी।

गुरु भी अपने-आप में टटोनता है—ओर गुरु को टटोनना भी चाहिए, यह जरूरी है गुरुके लिए। यदि गुरु ऐसा नहीं करे, तो एक अपात्र को यह विद्या मिल जायेगी। मगर जो योज्य योज्य है, कर्मठ योज्य है, वे इन प्रलोभनी में नहीं आते, उनका तो एक ही लाद्य होता है, एक ही उद्देश्य होता है, और वे यह अपने लाद्य के विषय में शी सोचते हैं।

नविकेता यदि चाहता, तो बीच में रुक जाता और प्रलोभनी में आ जाता। वह स्वर्ण ढेर लेकर शान हो जाता, सुन्दर स्त्रियों को प्राप्त करके सक जाता। गुरु के द्वारा प्रदत्त प्रलोभन से शिष्य यदि बीच में रुक जाता है, तो समझ लेना चाहिए, कि यह शिष्य तो अपात्र है, अयोग्य है। यह शिष्य ब्रह्म विद्या प्राप्त करने का अभिनाशी नहीं है, ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने की इसमें ललक नहीं है, इसमें एक जीवट शक्ति नहीं है।

ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने का तात्पर्य है, कि व्यक्ति अपने-आप में कर्मत हो, योग्य हो, अप्सरी हो, प्रलोभनी से धरे हो... और यदि ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने के बाद प्रलोभनी में रुक जाय, तो उससे घटिया शिष्य तो कोई बन ही नहीं सकता... ब्रह्म विद्या को जानने वाला शिष्य यदि उन स्त्रियों के चक्कर में पड़ जाय, तो बहुत बड़ा अहिन हो जाएगा, इसलिए यह विद्या का प्रयोग जल्दी नहीं होता है, उसको अन्य कोई तरीकों से चेतना देना जल्दी होता है।

गुरु तो एक पासा फेकता है, एक चालाकी बरतता है, एक प्रलोभन देता है... और गुरु प्रलोभन देता ही है।

पर नविकेता दृढ़ निश्चयी रहा और द्वाना—“मगर आप मुझे न सोबत विद्या ही दें, क्योंकि मैं नो ब्रह्म विद्या ही प्राप्त करना चाहता हूँ।”

ब्रह्म ब्रह्म प्रसन्न होते हैं, और ब्रह्म विद्या देते हैं

“सः ब्रह्म सः पूर्ण सः चिन्तयन्सः अहितीय सः सोहृद सः पूर्व सः चिन्तयन्”

“त आपने-आप में पूर्ण विरक्त बन, त अनन् जीवनमापनी निष्पृष्ठ बन, इस गहरस्य से

द्वारा दुआ भी न लगती न हो बन, इस संसार में रहकर भी न संसारी मत होन, जीवन में पूर्णता से ब्रह्मत्वमय होन। तु मेरे पास आता है, तुमें मुझे नहीं लगता है, मुझे अपने आप को सीधा है, मैं तुम्हें अपने आशीर्वाद के द्वारा ब्रह्म विद्या दे रहा हूँ।'

आशीर्वाद के द्वारा भी, मन के द्वारा भी — शिष्य वोनों तरीकों से गुरु के द्वारा उस ब्रह्म विद्या को जान सकता है। गुरु यह एसब्रह्म ब्रह्म है, तो उसे आशीर्वाद देकर भी ब्रह्म विद्या में पूर्ण सिन्ध कर सकते हैं, ब्रह्ममय बना सकते हैं, पूर्ण ब्रह्मार्थ बना सकते हैं।

यह ने ऐसा ही किया, नचिकेता के सिर पर छाश रखकर आशीर्वाद दिया और उसे अपने घरदान द्वारा पूर्ण ब्रह्मार्थ बनना से मुट्ठे के लिए बहुधन की कला सिखाई, उसे गुन्ध पर विजय प्राप्त करने की विद्या सिखाई, उसे सिद्धाश्रम की प्राप्ति कराई।

जहाँ मृत्यु है ही नहीं, जहाँ आनन्द है ही आनन्द है, जहाँ क्षेत्र है ही, जहाँ पूर्णता है, अपने आप में परिपूर्णता है — उसको तो सिद्धाश्रम कहते हैं। सिद्धाश्रम का तो तात्पर्य ही यह है, कि जहाँ मृत्यु नहीं है, जहाँ किसी प्रकार की दुर्दशा नहीं है, जहाँ केवल अपनी को बढ़ावा नहीं है, तो चौर चाहे, वह उसी क्षण प्राप्त हो जाय, डम अपने-आप में तेजस्वी पुष्टि बन रहे, और तालातुर यात्रा एक अत्यन्त देवरियता भी रह जात्या आ सके, घम पूर्णिमा से ब्रह्मार्थ बन सके, ब्रह्ममय बन-सके।

ब्रह्ममय बनना, सिद्धाश्रम में जाना श्रेष्ठ गुरु के द्वारा ही सम्भव है, श्रेष्ठ गुरु के द्वारा ही ब्रह्म विद्या का जानना सम्भव है।

जो शिष्य प्रतीभाओं से पैदे हो जाता है, जो अपने-आप को इष्ट, अपने गुरु के चरणों में समर्पित करता है, जो अपनी देव को, अपने प्राणों को गुरु के चरणों में समर्पित करता हुआ उस विद्या भी जानने का अव्यक्तिगत बनता है, जो निश्चय कर लेता है, कि मुझे वह विद्या जाननी ही है, तो वह वोनों तरीकों से जान सकता है।

पहला तरीका है — उस मंत्र को सीख कर, जो खाद्य विद्या से सम्बन्धित है, ब्रह्म दीक्षा को प्राप्त करके, दूसरी तरीका है जीवन में जीतन्यता प्राप्त कर, उन क्रियाओं के माध्यम से, मुद्राओं के माध्यम से, उस मंत्र का निष्ठान रख करने के माध्यम से ब्रह्म विद्या को प्राप्त कर सकता है।

यह जीवन की श्रेष्ठतम विद्या है, अद्वितीय विद्या है। इस विद्या की तुलना इस विश्व में ही नहीं हो सकती। इसके द्वारा वह सब कुछ प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है, सारे वेद, पुराण उसे कठुस्त नहीं है, वह जीवन में निस दस्तु की कामना रखता है, वह वस्तु उसे प्राप्त हो जाती है, फिर वह अल्पल में होते हुए भी योगी बन रहता है... इसीलिए तो श्राकृष्ण को सोलह हजार रानियों के पति होते हुए भी योगेश्वर कहा जाय... फिर वह योग में योग की कला को जान लेता है, फिर वह योग में योगल को जीव लेता है, वह अपने-आप में निष्ठु होता है, जैसे कमल जल में रहते हुए भी निर्मित रहता है, और उस अकाल से वह संसार में निर्मित रहता है... और फिर उह ब्रह्मस्मि वाक्य को उदधीरण करने का अधिकारी बन जाता है, वह ब्रह्म से साक्षात्कार कर, उससे एकाकार हो चुका है, उसने ब्रह्म को अपने सन्दर उत्तर लिया है, अपने-आप में रुचा प्रवर्तित किया है।

— जीर द्वारा तरीका है, कि विद्या आशीर्वाद के द्वारा भी सम्भव है, आर्द्धत गुरु के द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करके भी वह पूर्ण ब्रह्मार्थ उन सक्रान्त है — और प्राप्त कर सकता है, जीवन का असली आनन्द, अनन्यता, सुस्थि, सुमारी और अमरत्य

योनों माध्यमों से पूर्णता सम्भव है। वो जिन मार्ग हैं, पहले पकड़ो तो रुचा प्रवर्तित

दोनों को जो दाना है, और वह यह है, कि दोनों क्रियाएं गुरु ही सम्भव

कर सकते हैं — मंत्र का जान भी गुरु के मुख से प्राप्त हुआ है तो

कलीभूत होता है... और आशीर्वाद भी गुरु ही दे सकते हैं, तभी उस

की जनन्त महिला को हर वेद, हर उपनिषद, हर योगो, हर द्रष्टव्य

मन्यजी ने एकमत हो स्वीकार है —

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु वैद्यो महेश्वरः।

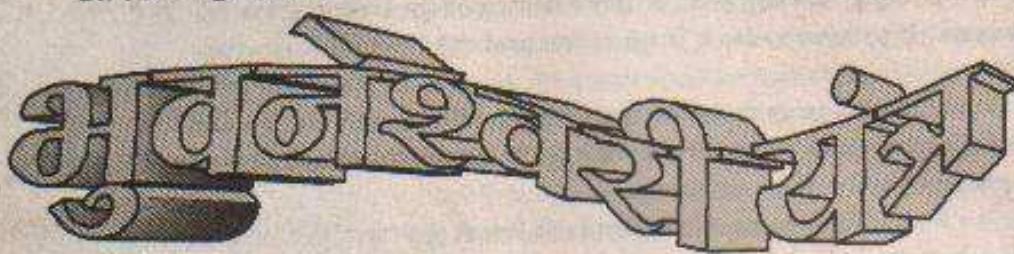
गुरु साक्षात् परब्रह्म तत्स्य भी गुरुत्वं नयः॥

पूज्यमहेश्वरं गुरुमयम् विष्णुमयं तत्स्य श्रीमान्नी भी

मंत्र-तंत्र-यन्त्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अग्रिम अंग है। इसके साधानात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया जाया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका मंत्र-तंत्र-यन्त्र विज्ञान की वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को ग्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय
और विशिष्ट उपहार



पराम्बा मां जगज्जलनी भुत्वबृहत्यवस्थायामि में ये एक हैं तथा अपने साधाक की धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष वारों पूज्यार्थों को प्रदान करने में लमर्ही हैं। मां भुत्वबृहत्यवस्था की साधाना से वाक् लिखे प्राप्त होती है, समरत विद्वाओं में श्रेष्ठता प्राप्त होती है, कला विद्वान् आदि लोकों में पूज्यता प्राप्त होती है, दोषेन्द्रियों का नाश हो कर दीपाच्छाया का उदय होता है तथा शनुओं, तिरोषियों द समरत प्रकार की विपरीत पोटरिथियों पर विजय प्राप्त होती है।

मन्त्र लिख प्राप्त प्रतिष्ठित भुत्वबृहत्यवस्था यंत्र में भगवती भुत्वबृहत्यवस्था की समरत शिरोंसामाहित होती है, जिसके रथापन मात्र हो, यदि उस पर भुत्वबृहत्यवस्था मन्त्र का जपन भी किया गया है, किं जिसके घर में भुत्वबृहत्यवस्था यंत्र उत्थापित होता है, वह घर उत्थापित हो जाता है।

दूसरा यंत्र को अपने पूजा उत्थान में उत्थापित कर हुक्का कुंकुम, अक्षत व पुष्प से निरूप पूजन करने ये ल्यारित का जीवन श्रेष्ठता और अद्वितीयता की ओर अग्रसर होती है। दूसरा यंत्र के समक्ष १५ मिनट निरूप भुत्वबृहत्यवस्था मन्त्र ही का निष्पत्त्य जप करने पर राहज ही भगवती की कृपा और उनका साक्षात्कार प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है। तीन माह पृथ्वी यंत्र को किसी नदी या तालाड में प्रवाहित कर दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, दैशितोदार या राजदूत को देना कर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के सदस्य नहीं हों, तो आप दूसरों भी सदस्य बनाकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टल कार्ड नं. ४ को दरपत्र अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम दरबार करेंगे।

वार्षिक सदस्यता दृढ़ता - 195/- डाक सर्व अंतर्राष्ट्रीय 30/- Annual Subscription 195/- + 30/- postage

प्रम्पक

मंत्र-तंत्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ. श्रीमली भारी, लाईलोट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)
Mantra-Tuntra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India.
Phone : 0291-432209 Fax : 0291-432010

लक्ष्मी के साथ वह अद्यता नहीं

लक्ष्मी ऐसे रहेगी सदा आपके पास

एक बार धन के देवता कुबेर एक भक्त की तपस्या में जल दूँ और उन्होंने कहा कि तुम एक वरवान मांगो। भक्त निर्वाचन वस्तु उपहार में घाड़ता था, लेकिन भगवान कुबेर ने कह कि तुम्हें जो वस्तु प्रिय हो वह वस्तु ले जाओ। और उन्होंने उन्हें खजाने के द्वार खोल दिये और कहा कि सायं कल तक उन जितना ले जाना चाहो अपनी छोली में भर सकते हो।

भक्त अत्यन्त प्रसन्न हुआ रस्ते, आशुषण, हीरे, पत्ते, नानक्य, मोति की जगमगाहट उसे विचलित कर रही थी कभी उसकी वह एक हीरे प्रसन्द करता तो कभी माणिक्य तो कभी उसकी निनाह पत्तों पर पड़ती, कभी लूं और कभी नहीं लूं, हर चीज उन प्रभावित कर रही थी ऐसे करते करते दिन ढल गया कुबेर के खजाने का द्वारपाल आया और वह खजाने का द्वार बन्द करने लगा।

उसने भक्त को कहा कि अब चलो। कि कोई भी व्यक्ति उन से कुछ लेकर जाने में समर्थ नहीं हो पाया है। आओ, ये चले खालो दिन भर से तुमने कुछ खासा नहीं है भूख अवश्य लगी होगी।

आज के जगत में व्यक्ति धन की लालसा में धन को बनाने में और अपनी व्यापारिक बुद्धि से तोल्मोल करने की लोभ की प्रवृत्ति से इतना अधिक प्रभावित हो गया है कि उसे उपरोक्त कथा में कोई सार्थका नजर नहीं आयी। अपनी विधिक व्यवृत्ति के पीछे इतने अधिक पागल हो जाते हैं कि वे निरन्तर धन और व्यापार के बारे में विचार करते रहते हैं। धन आधिक

धनवान कौन नहीं बनना
चाहता, हर व्यक्ति चाहता है उसके पास स्थायी रूप से रहे उसे अपने जीवन किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहे लेकिन केवल लालची वृत्ति से इच्छा करने से लक्ष्मी आती नहीं है, लक्ष्मी का दरण करना पड़ता है, उसका उचित उपयोग करना पड़ता है, और अपने जीवन में निरन्तर कर्मशक्ति को जाग्रत रखना पड़ता है। आप भी लक्ष्मी पति बन सकते हैं लेकिन तिचार करे कि आप लक्ष्मी का किस प्रकार उपयोग, उपयोग करेंगे।

सम्पन्नता मनुष्य को बहुत कुछ दे सकती है लेकिन प्रेम प्रसन्नता का भाव प्रदान नहीं कर सकती है। धन की उपयोगिता तभी तक है जब तक आप इस उसे उपयोग कर सके। जब धन का उपयोग नहीं होता तो धन व्यक्ति के मन में और अधिक

लालच प्रवृत्ति उत्पन्न करता है व्यक्ति एक चक्र में फसता रहता है आखिर व्यक्ति के जीवन में धन किनना आवश्यक है? क्यों आवश्यक है? और वह उसका किस प्रकार से उपभोग करे इस विषय पर व्यक्ति को विचार करना आवश्यक है।

शास्त्रों में धर्मार्थ काम मोक्षाणां पुरुषार्थ अतुष्टयम् कह कर मनुष्य की उत्तिके लिए चार प्रकार के पुरुषार्थ बनाये हैं, जिसमें सबसे पहला पुरुषार्थ धर्म, दूसरा धर्म (लक्ष्मी प्राप्ति), तीसरा काम (सन्नान उत्पन्न करना) और चौथा मोक्ष प्राप्ति के लिए साधना आदि सम्पन्न करना है।

इस प्रकार शास्त्रों में यह स्वीकार किया गया है, कि जीवन में धर्म का सबसे पहला स्थान होना चाहिए, धर्म के नियमों को मानना चाहिए और हमारे मन में देवताओं के प्रति, इष्ट के प्रति और अपने गुण के प्रति सम्मान और श्रद्धा होनी चाहिए, जिससे कि हम धर्म के पथ को पहिचान सकें, अपने कर्तव्यों को जान सकें और कर्तव्य मार्ग पर आगे बढ़ते हुए धर्म का पालन करते हुए लक्ष्मी प्राप्ति में सफल हो सकें।

धर्म से ही सम्पन्नता आती है, परन्तु इसके साथ यह भी आवश्यक है, कि हम सम्पन्नता के लिए कुछ विशेष साधनाएं और क्रियाएं सम्पन्न करें, जिससे कि हम इस भाग द्वांड की जिन्दगी में, प्रतिस्पर्धा के जीवन में, व्यापार और अन्य कार्यों के माध्यम से अर्थ संचय कर सकें।

शास्त्रों ने देवताओं में श्रेष्ठ भगवान विष्णु की पर्णी के रूप में लक्ष्मी को स्थान देकर उसकी श्रेष्ठता और उसके महत्व को सिद्ध कर दिया है। यह स्पष्ट है, कि लक्ष्मी से सम्बन्धित उपासना हमारे जीवन की आवश्यक उपासना है। हम चाहे किसी भी मत के अनुयायी हों, किसी भी धर्म का पालन करते हों, किसी भी विचारधारा से सम्बन्धित हों पर हमें लक्ष्मी की प्राप्ति और उसके महत्व को स्वीकार करना ही पड़ेगा। समाज की मान्यताएं बदलती ही रहती हैं।

एक समय ऐसा भी था जब धन को अधिक महत्व नहीं दिया गया था। धन जीवन का और विनिमय का आधार अवश्य था, परन्तु वह सब कुछ नहीं था, परन्तु आज समाज की मान्यताएं और विचार बदल गये हैं, हम समाज की ही एक छाकड़ी है और समाज के साथ ही साथ हमें भी अपने आपको बदलना आवश्यक हो गया है। अतः हमें यह स्वीकार करना ही पड़ेगा, कि हमारे जीवन में पूर्णता प्राप्ति के लिए अन्य तत्त्वों के साथ-साथ धन का भी उतना ही महत्व है।

परन्तु इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए, कि



धन अनैतिक कार्यों से एकत्र न हो, गलत रास्तों से धन संचय न हो, और किसी को धोखा देकर या हानि पहुंचा कर हम सम्पन्न न बनें। इज्जत, मान-मर्यादा, शास्त्रीय नियमों के अनुकूल विचारों के साथ ही साथ परिश्रम के द्वारा धन एकत्र करें और श्री सम्पन्न बनें।

धनबान या लखपति बनना कोई गुनाह नहीं है, अधर्म नहीं है, यह तो मानव जीवन की श्रेष्ठता है।

विद्रोह को आरम्भ काल से ही मानव जाति का अभिशाप कहा गया है, शुरू में ही श्री सम्पन्न होना सौभग्य और श्रेष्ठता का प्रतीक माना गया है, इसीलिए हम किसी व्यक्ति को आदर देने के लिए उसके नाम के आगे श्री या श्रीमान शब्द से सम्बोधित करते हैं। श्री का अर्थ लक्ष्मी है, श्रीमान का अर्थ लक्ष्मी युक्त है, अतः हम किसी श्री विघ्नान, योगी, साधु, सन्त, संन्यासी अथवा श्रेष्ठ पुरुष के नाम के आगे श्री शब्द लगाकर इसी भावना को व्यक्त करते हैं, कि आप भी सम्पन्न हों, लक्ष्मीवान हों, समाज में सम्मानीय हों।

जो इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं, कि धन जीवन का शत्रु है, धन तो धर्म के रास्ते में बाधक है, वे वासनव में कायर हैं, नवुसक हैं, आलसी और अपने आपको धोखा देने वाले हैं।

वे सबवें अपने मन में इस बात को समझते हैं, कि आज के युग में चाहे धार्मिक कार्य सम्पन्न करना हो, समाज

का जलवायन देना हो का सत्य, सन्त, संन्यासी को सुविधाएं देने हो, इसके लिए धन की आवश्यकता होती ही है।

जिन धन के धर्म का अस्तित्व आज के युग में सम्भव नहीं है। इसलिए धन की महता सर्वोपरि है और महता मानव के प्रमाणिक काल ने आज तक रही है। इसीलिए शास्त्रों में लिखा है, कि व्यक्ति को श्री सम्पन्न होना चाहिए, श्री सम्पन्न व्यक्ति की समाज और देश के आभूषण हैं।

यह जलग बात है, कि हम धन का उपयोग किस जलान से करें। कुछ लोग धन प्राप्त होने पर मदान्ध हो जाते हैं, जिन जन्मेति का ध्यान नहीं रखते और उच्छ्रुत्युखल जीवन का जलसम्बन्धिक जीवन बिनाने को तैयार हो जाते हैं, जिससे इस समाज में अव्यवस्था होती है और समाज का वालावरण दूषित होता है, पर यदि धन का उपयोग मत्कार्यों में और शुभ कार्यों में होता है, तो यह निश्चित रूप से जीवन की श्रेष्ठता ही जानी जा सकती है।

आज जो बड़े-बड़े आश्रम विखाई देते हैं, क्या ये जलान बिना धन के स्थापित हुए हैं? आज जो बड़े-बड़े मंदिर निर्माई देते हैं, जिनमें जाकर हम वेवताओं के सामने अभिभूत हो जाते हैं, मन के शुद्ध संस्कार जाग्रत होते हैं, तो क्या ये जलान बिना धन के संभव हैं? यह अवश्य है, कि इसके मूल में धन ही एक मात्र तत्व है, जिसके माध्यम से यह सम्भव हो सकता है।

परन्तु केवल परिश्रम से ही धन संचय नहीं हो पाता, केवल शिक्षा प्राप्ति से ही लक्ष्मीपति नहीं बना जा सका। हमारे समाज में चारों और सौकाढ़ी युवक घूमते लिखाई देंगे, जो हैं तो उन्‌ए. पास, परन्तु उनमें से अधिकांश बेकार या बहुत ही छोटी तनख्यावाल पर जीवन यापन के लिए बाध्य हैं।

हम नित्य यिन के आठ और दस घण्टे मजदूर को पन्थर और मिठी ढोते, घोर परिश्रम करते हुए देखते हैं, फिर भी वे जीवन की आवश्यक बस्तुएं भी सुलभ नहीं कर पाते। इससे यह स्पष्ट तो है, कि केवल मात्र परिश्रम और शिक्षा ही सब कुछ नहीं हैं, मात्र इनके माध्यम से लक्ष्मीपति या श्री सम्पन्न बनना सम्भव नहीं है।

व्यापार में भी हम देखते हैं, कि लोग परिश्रम करते हैं, अपनी तरफ से पूरा प्रयत्न करते हैं। बड़ी से बड़ी दुकान खोल लेते हैं, परन्तु इनसे पर भी धन एकत्र हो जाय यह सम्भव नहीं है, इसकी अपेक्षा हम यहीं देखते हैं, कि जिसकी छोटी सी सुन्दर दुकान है, वह ज्यादा कमा रहा है, सम्पन्न हो रहा

है, ऐसे भी निरक्षर सेठों को देखा है, जिनको भली प्रकार से चार लाइने लिखनी नहीं आती, परन्तु वे नखपति करोड़पति हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं, कि परिश्रम और शिक्षा के अलावा हमारे जीवन निर्माण और जीवन की सम्पन्नता में भाग्य का भी बहुत बड़ा हाथ है। भाग्य होने में व्यक्ति सामान्य श्रेणी से बहुत ऊचा उठ जाता है, परन्तु भाग्य लेखन तो विधाता के हाथ में है। विधाता नब सानव को इस संसार में भेजता है, तभी उसके भाग्य का लेखन हो जाता है, इसीलिए भाग्य लेखन में हमारा सीधा कोई हस्तधेप नहीं है।

व्यावहारिक रूप में देखा जाय, तो वह धरणा भी गलत साधित होती है, कि परिश्रम से भाग्य निर्माण हो सकता है। मैंने और आपने भी समाज में चारों ओर देखा है, कि व्यक्ति परिश्रम करता है, अपने खुल को जलाता है, कठिन से कठिन कार्य करता है, परन्तु फिर भी वह अपने जीवन की आवश्यक सुविधाएं भी प्राप्त नहीं कर पाता, इसलिए परिश्रम से भाग्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

शास्त्रों में लिखा है, कि भाग्य लेखन विधाता करता है और इसको भानव अपने प्रयत्न या परिश्रम से नहीं बदल सकता। केवल एक ही मार्ग देसा है, जिससे भाग्य में परिवर्तन किया जा सकता है, अशुभ लेखन को शुभता में परिवर्तित किया जा सकता है, यदि भाग्य में दरिद्रता लिखी है, तब भी उसे परिवर्तित कर श्री सम्पन्नता लिखी जा सकती है और यह मार्ग है — साधना।

यहां पर यह बात अच्छी तरफ से समझ लेनी चाहिए, कि साधना और धार्मिकता अपने आप में अलग-अलग बातें हैं। हम जो प्रातः काल उठ कर भगवान का नाम लेते हैं, माना फेरते हैं या अपने हृषि की पूजा करते हैं, यह धार्मिक कार्य है, इसका साधना से या अनुष्ठान से कोई सम्बन्ध नहीं। धार्मिक कार्यों से मन को शान्ति मिल सकती है, परन्तु उससे भाग्य में परिवर्तन नहीं हो सकता।

भाग्य में परिवर्तन साधना या अनुष्ठान से ही हो सकता है। यह अनुष्ठान एक विशेष प्रकार की किया सम्पन्न होना है, जिसमें एक निश्चित तरीके से, निश्चित प्रकार से मंत्र जप कर उस कार्य की सिद्धि प्राप्त करना होता है, जिससे कि हमारे भाग्य में यदि निर्धनता है, तो उसे अनुकूलता दी जा सके।

मुझे जीवन में ऐसे सैकड़ों उदाहरण जात हैं, जब जीवन के उत्तरार्द्ध तक व्यक्ति दरिद्रता के पैक में ग्रसित रहा, जीवन आवश्यकताएं भी पूरी नहीं कर सका, परन्तु साधना के द्वारा और एक निश्चित अनुष्ठान सम्पन्न करने के बाद वह आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न हो सका और आज उसे समाज श्रेष्ठता सम्मान प्राप्त है।

इसीलिए कई दौर पर देखते हैं, कि धार्मिक व्यक्ति भी दरिद्र और अभाव ग्रस्त होते हैं। ऐसी स्थिति में हम भगवान के विधान पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहते हैं, कि भगवान के घर में न्याय नहीं है, यह व्यक्ति धर्मत्वा है, नित्य चार पांच घण्टे पूजा करता है, भगवान का स्मरण करता है, ब्रत-उपवास आदि करता है, फिर भी दरिद्र है, अभावग्रस्त है, जबकि दूसरी और कोई दूसरा व्यक्ति चालाक है, धूर्त है, समाज में सहायक नहीं, फिर भी सम्पन्न है।

पर यह हमारे समझने की ही भूल है। धार्मिक होना, पूजा पाठ करना भगवान का नाम लेना अपने आप में एक अलग बात है और अनुष्ठान तथा साधना करना विलकूल अलग बात। यह निश्चित है, कि यदि सही प्रकार से साधना या अनुष्ठान को सम्पन्न किया जाय, तो वह जीवन की दरिद्राना को भिटा सकता है, आर्थिक अभावों को समाप्त कर सकता है तथा जीवन की समस्त सुविधाएं और भौतिक सुख प्राप्त कर सकता है।

शास्त्रों में लक्ष्मी से सम्बन्धित कई अनुष्ठान और साधनाएं व्यक्त की गई हैं, जो तंत्र से सम्बन्धित भी है और मंत्र से सम्बन्धित भी है। तंत्र अपने आप में कोई वृत्ति या हेतु नहीं है। तंत्र एक पवित्र और श्रेष्ठ शब्द है, जिसका तात्पर्य अलीं प्रकार से कार्य को व्यवस्थित करना है। इसीलिए हम प्रजातंत्र शब्द का प्रयोग करते हैं, इसका तात्पर्य यह है, कि प्रजा की व्यवस्था प्रजा के हाथों सुचारू रूप से हो। इसी प्रकार तंत्र किसी भी सम्बन्धित मंत्र को सुचारू रूप से सम्पन्न करने की क्रिया को कहते हैं। तांत्रिक शब्दों में कहीं पर भी मध्य, मांस या सम्मोग को प्रब्रह्म नहीं दिया गया है। यह तो बात में कुछ कामी और भोगी तात्त्विकों ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन तत्त्वों को आवश्यक बना दिया है और इसीलिए यह तंत्र शब्द समाज में बदनाम हो गया है।

इसीलिए लक्ष्मी से सम्बन्धित साधना अनुष्ठान शुद्ध, सात्त्विक रूप में मंत्र साधना या तंत्र साधना के माध्यम से सम्पन्न कर सकते हैं।

उपनिषदों में वृहदारण्य उपनिषद में एक अत्यन्त सुन्दर विवरण आया है महर्षि यजवल्कय के दो पत्नीयों थीं एक का नाम मैत्रेयी और दूसरी का नाम शार्णी था। एक दिन उनके मन में संन्यास की इच्छा उत्पन्न हुई और उन्होंने अपनी दोनों पत्नीयों को कहा कि मेरी जो कुछ सम्पत्ति है उसे बराबर बांट लो मैत्रेयी ने पूछा कि क्या आप जो धन प्रदान कर रहे हैं उसे परम तत्व परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है। यजवल्कय ने कहा कि धन अमरता तत्व को खंडीव नहीं सकता, धन से परमात्मा जान और भक्ति नहीं प्राप्त हो सकते हैं। इसे तो अर्थात् धन को तो अपने पास रखने में उसका उपयोग करने में और इसे दान करने में ही इसका वाप्तिक उपयोग है मैत्रेयी ने कहा कि फिर मैं ऐसे धन को प्राप्त करके क्या करूँगी जो मुझे परमात्मा के पास नहीं ले जा सकते मुझे अमरता प्रदान नहीं कर सकते भेर लिए तो जान ही सर्वश्रेष्ठ धन है।

धन के सन्दर्भ में हनुरो प्रकार के नर्क-वितक के दिये जा सकते हैं सामाजिक व्यवस्था के उदाहरण देकर धन की सार्थकता को सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है, लेकिन इतना तो निश्चित है कि धन प्राप्ति की लालसा व्यक्ति को एक अलग ही दिशा में ले जाती है वह केवल और केवल हर समय वैन केन प्रकारेण धन-प्राप्ति के बारे में ही सोचने लगता है।

लक्ष्मी साधना कि सार्थकता नहीं है जब व्यक्ति लक्ष्मी को आबद्ध कर सके स्वयं लक्ष्मी का स्वामी बन कर उसका उपयोग कर सके। यदि कोई वस्तु का उपयोग नहीं कर सकते तो उसके सार्थकता भी नहीं है। धन की सार्थकता भी लभी नक है जब उसका उपयोग, उपभोग कर सके उसे अपना सहयोगी बना सके, धन के ऊपर मनुष्य की बुद्धिधार्थी रहे मनुष्य की बुद्धि पर धन हावी नहीं रहे इसी मार्ग के द्वारा वह वासनव में चारों पुरुषार्थ धर्म के द्वारा अर्द्ध, धर्म और अर्थ के सद्वयोग से काम और कामना पूर्ति के पश्चात् संन्यस्त स्थिति की और प्रवृत्त होकर उस नारी को प्राप्त कर सकता है जिसमें अमृत है परमात्मा प्राप्ति है।

लक्ष्मी साधनाओं का यह कल्प लक्ष्मी माल कार्तिक मास वरवायक मुहूर्त लिख समय माना गया है साधक इन साधनाओं का उपयोग अपने जीवन में आई उन न्यूनताओं को दूर करने में उपयोग कर सकते हैं, जिसके कारण से जीवन श्रेष्ठ नहीं बन पाया है, अभाव और उत्पन्नता के स्थिति है उस स्थिति पर विजयी हुआ जा सकता है, वह लक्ष्मी, गणेश, कुबेर, विष्णु इत्यादि देवों की साधना उचित मुहूर्त में शास्त्रोक्त रूप से सम्पन्न करें।

जहां विशाली सत्पित लक्ष्मी वहां सब संभव हो जाता

दीपावली वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है, और लक्ष्मी की साधना, पूजा, समान करना प्रत्येक साधक का कर्तव्य है। लक्ष्मी के १०८ रूप हैं, पीठ शक्तियां हैं और १६ कलाएँ हैं। जहां लक्ष्मी पूजन होता है वहां लक्ष्मी अपने सर्वत्यापी रूप में अवश्य रहती है—

महालक्ष्मी सभी शक्तियों की केन्द्र चिन्ह है। इस एक चिन्ह से ही सभी शक्तियों का महाविद्याओं का प्रादुर्भाव हुआ है। दीपावली एक महाशिवि पर्व है, केवल एक पर्व मात्र नहीं। इस दीपावली पर्व पर प्रत्येक साधक वो अपने घर में विशेष इन भवश्य करना है, और ऐसी महापूजा हो कि इस दिन की जल्ली ज्योति पूरे वर्ष घर में जगमग करती रहे। इस दिन जो प्रसन्नता का वातावरण बने वह पूरे वर्ष बना रहे। इस दिन जो संकल्प हो, आराध्या लक्ष्मी का जो भावान करें, वह पूर्ण हो।

महालक्ष्मी साधना का दीपावली पर्व केवल इस लिए नहीं मनाया जाता कि इस दिन भगवान श्रीराम लंका विनय कर अपने घर आयोध्या वापस पथरे थे, और अयोध्या शक्तियों ने घर-घर दीप जलाकर प्रसन्नता प्रगट की तथा भगवान श्रीराम का स्वागत किया। ये उरव्यान तो जन-जन में इस विशेष विवास का महात्व प्रगट करने के लिए प्रतीक के रूप में होते हैं। सिद्ध मनियों, योशियों ने लिखा। यदि केवल यही एक कारण होता तो इस दिन लक्ष्मी की पूजा क्यों की जाती? क्यों एक नवे कार्य का संकल्प लेकर नव वर्ष के रूप में इसे मनाया जाता।

यह विवास एक महाभिलिङ्ग दिवस है, और इसे सम्पूर्ण भारत में अलग-अलग रूपों में जन मानस में मनाया जाता। प्रजाब में बैसाथी उत्सव रूप में, केरल में पौगल के रूप में, उत्तर भारत में दीपावली के रूप में, दक्षिण में गुडापाठा पर्व के रूप में मनाया जाता है।

जहां जहां उस क्षेत्र के क्षेत्रियों, विद्वानों ने इसे जिस रूप में जन मानस के सामने स्पष्ट किया, उसी रूप में जन मानस एक उत्सव के रूप में हमें मनाने लगा। सिद्ध मुहूर्त प्रत्येक जगत एक ही रहता है और दीपावली का मुहूर्त भी ऐसा ही मुहूर्त है, यह ऐसा महत्वपूर्ण समय है, जब शक्ति सकाम रूप में प्रवाहित रहती है, इस पर्व के द्वारा हम उस महाशक्ति लक्ष्मी को धन्यवाद देने हैं जिसके कारण हम इस जगत में अपना अस्तित्व रखे हुए हैं, जिसके कारण से इस विश्व में सुन्दर वस्तुएँ हैं, मंदिर देवालय हैं, आभूषण और सुन्दर वस्त्र हैं, जिसके कारण स्वाविष्ट पदार्थ है, जिसकी कृपा से सुगन्ध है, ब्रह्मस्फुट है।

इसके साथ ही हम इस महापर्व पर महालक्ष्मी से यह भी प्रार्थना करते हैं कि जिस तरह तुम्हारा प्रकाश इस विश्व में सम्पूर्ण रूप से फैला हुआ है वही प्रकाश हमारे घर में भी पूर्ण रूप से प्रवाहित हो। हम भी जगत में रहते उन सभी सुखों का आस्वादन कर सकें, जो अपकी कृपा से विद्यमान हैं व्याप हैं।

महालक्ष्मी सब कुछ तुम ही तुम हो

यह मानव स्वभाव रहा है कि जो भी वस्तु उसे अच्छी लगती है, उसका संग्रह करना प्रारम्भ कर देता है। कोई पशु पक्षी अपने स्वयं के लिए साल भर का चारा दाना एक साथ लाकर नहीं रखता, जबकि उसके सामने पूरा हरा-भरा जंगल

होता है। इस संग्रह प्रबृत्ति के पीछे कारण केवल इतना ही है कि मनुष्य में एक आत्म विश्वास की कमी है, यह जानता है कि यदि किसी कारण वश बुरे दिन देखने पड़ गये तो और कोई भी काम नहीं आयेगा, चाहे वह मित्र हो, रितेवार हो अथवा भाई हो या और कोई अन्य। उसके पास जो संश्लह किया हुआ है वही उसके लिए उपयोगी रहेगा। अब प्रश्न उठता है कि किस-किस चीज का संग्रह करें, दुनिया में लाखों-लाखों वस्तुएँ हैं और दिन प्रतिदिन के क्रम में कई वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है तो इन सबका केवल बिन्दु है लक्ष्मी।

लक्ष्मी अपने सम्पूर्ण रूप में मूल्य रूप से १०८ स्वरूपों में विद्यमान रहती है और इन १०८ शक्ति स्वरूप नामों से ही सचार की सभी क्रियाएं चलती हैं। लक्ष्मी के ये १०८ नाम निम्न प्रकार से हैं—

१ महामाया, २ महालक्ष्मी ३ महावाणी, ४ माहेश्वरी
 ५ महादेवी, ६ महारात्रि ७ महिंषासुरमर्दिनी ८ कालरात्रि,
 ९ कृहृ १० पूर्णा, ११ नन्दाधा, १२ भद्रिका, १३ निशा,
 १४ जया, १५ रित्का, १६ महाशक्ति १७ देवमाता,
 १८ कृशोवरी, १९ शचीन्द्राणी, २० शक्तुता,
 २१ शंकरप्रियवल्लभा, २२ महावराहननी,
 २३ मदनीन्मथनी, २४ तारा, २५ वैकुण्ठनाथरमणी,
 २६ विष्णुवशस्थलस्थिता, २७ विश्वेश्वरी, २८ विश्वमाता,
 २९ वरदा, ३० शिवा, ३१ शूलिनी, ३२ चक्रिणी, ३३ पाशिनी,
 ३४ शंखधारिणी, ३५ गदिनी, ३६ मुण्डमाला, ३७ कमला,
 ३८ करुणालया, ३९ पद्माशधारिणी, ४० महाविष्णुप्रियंकरी,
 ४१ गोलोकनाथरमणी, ४२ गोलोकेश्वरपूजिता, ४३ तारिणी,
 ४४ गंगा, ४५ यमुना, ४६ गोमती, ४७ गरुडासना,
 ४८ नमंदा, ४९ सरयूस्तापी, ५० कावेरी, ५१ किशोरी ५२
 संतापदारिणी, ५३ सर्वकामप्रदा, ५४ मातंगी, ५५ पश्चिमिनी,
 ५६ के शबनुता, ५७ महेन्द्रपरिवन्निता,
 ५८ ब्रह्मादिवेवनिर्माणकारिणी, ५९ देवपूजिता,
 ६० कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था, ६१ कोटिब्रह्माण्डकारिणी,
 ६२ श्रुतिस्था, ६३ श्रुतिकरी, ६४ श्रुतिस्मृतिपरायणा,
 ६५ इन्दिरा, ६६ सिन्धुतनया, ६७ केवारस्थलवासिनी,
 ६८ लोकमातृका, ६९ त्रिलोकजननी, ७० तन्त्रा, ७१ तन्त्र
 मन्त्रस्वरूपिणी, ७२ तरुणी, ७३ तमोहन्त्री, ७४ मंगला,
 ७५ मंगलायतना, ७६ मधुकटभमर्दिनी, ७८ निशुभाविहरा,
 ७९ माता, ८० हरिशंकरपूजिता, ८१ सर्वदेवमयी, ८२ सर्वा,
 ८३ गरणागतपालिनी, ८४ शश्या, ८५ शम्भुवनिता,

८६ सिन्धुतीरनिवासिनी, ८७ गन्धर्वमानसिका, ८८ गीता,
 ८९ गोविन्दवल्लभा, ९० वैलोक्यपालिनी, ९१ तत्त्वस्था,
 ९२ तारुण्यपूरिता, ९३ चन्द्रवली, ९४ सर्वार्थसाधिनी,
 ९५ चन्द्रमुखी, ९६ चन्द्रिका, ९७ चन्द्रपूजिता, ९८ चन्द्रा,
 ९९ शशांकभगिनी, १०० गीतवाद्यपरायणा, १०१ सृष्टिरूपा,
 १०२ सृष्टिकरी, १०३ संहारकारिणी, १०४ सृष्टि,
 १०५ सृखसोभाग्यसिद्धिवा, १०६ धनेश्वरी, १०७ वागेश्वरी,
 १०८ सर्वानन्दा।

इस प्रकार लक्ष्मी में ही एक तरह से सम्पूर्ण विश्व समाया हुआ है।

और जहां लक्ष्मी की पूजा, पाठना होती है वहां लक्ष्मी अपनी विशेष नौ पाठ शक्तियों सहित विराजमान होती है। अर्थात् जहां लक्ष्मी है वहां ये भी पाठ शक्तियों अवश्य रहती है।

लक्ष्मी की पीठ शक्तियाँ

१. इच्छा, २. ज्ञान, ३. क्रिया, ४. कामिनी, ५. रति, ६. रतिप्रिया, ७. कामदायिनी, ८. नन्दा, ९. मनोन्मनी।

अर्थात् जहां लक्ष्मी है वहां इच्छाओं का, ज्ञान का, सागर है, रति सुख, काम सुख, मनोइच्छापूरिणी वही विद्यमान होती है।

और जहां लक्ष्मी अपना आभन गहण करती है अर्थात् जिस घर में लक्ष्मी का आगमन होता है, तो इस आगमन के साथ ही लक्ष्मी की सोलह चन्द्र कलाएँ घर के बातावरण को आलोकित कर देती हैं—

लक्ष्मी की षोडश कलाएँ

१. अमृता, २. मानदा, ३. पूषा, ४. पुष्टि, ५. तुष्टि, ६. रति, ७. धूति, ८. शशिनी, ९. चन्द्रिका, १०. कान्ति, ११. ज्योत्सना, १२. श्री, १३. प्रीति, १४. अंगवा, १५. पूर्णा, १६. पूर्णमृता।

यह याद रखें कि सम्ब्रह मेथन के पश्चात लक्ष्मी ने स्वयं कवियों मुनियों को कहा कि देवताओं में तो मैं निवास करूँगी, पर मृत्युलोक में मैं ध्रमण करूँगी, इसका तात्पर्य यह है कि जहां लक्ष्मी का स्वागत होगा, जहां उसकी पूजा होगी नहीं उसकी कामना होगी, वहां लक्ष्मी अवश्य आयेगी, जहां-जहां पाप दोष से युक्त होकर व्यक्ति हञ्छा होन, क्रियाहीन, ज्ञानहीन हो जायेगा, गर्व, घमण्ड, अभिमान के मद में लक्ष्मी की उपेक्षा करेगा, वहां से लक्ष्मी निकल जायेगी, क्योंकि लक्ष्मी तो चंचला है।

कि वह
आपको
और ज
लेता है,
उसका
की तरह
जीवन क
कार्य नह
है, वह व
की धारा
नदी की
है।

पर्याय को विण्य में बदलना ही है विण्योत्थन साधना

- * क्या आपके जीवन में बार बार बाधाएं आती ही हैं?
- * क्या आपको अपने कार्य में सफलता प्राप्त नहीं हो रही है?
- * आपके जीवन में शब्द बढ़ रहे हैं?
- * क्या आपके कार्य अधूरे ही रहते हैं?
- * परिवार में कलह बढ़ता ही जा रहा है?
- * क्या आप अपने जीवन से निराश हो रहे हैं?

आवश्यकता है आपके लिए जीवन की पराजय को जय में बदलने के लिए
संकल्प शक्ति के साथ उठ खड़े होने की

मानव जीवन के साथ सबसे बड़ी विद्यमान यड़ी है, कि वह परिस्थितियों का द्वास है और उसने हर समय अपने-आपको परिस्थितियों के अनुरूप ढालने का प्रयास किया है और जब वह अपने आपको परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेता है, तो उसके जीवन में कोई नवीनता नहीं रह जाती, उसका जीवन एक सामान्य गति से चलने वाले साधारण पशु की तरह ही निर्धारित हो जाता है, उसके अपने छाथ में अपने जीवन की लगाम नहीं रहती, वह जो सोचता है, उसके अनुसार कार्य नहीं कर पाता है, जो वह अपने जीवन में करना चाहता है, वह कर नहीं सकता, वह अपने आपको एक बहुती दृढ़ नदी की धारा में इस प्रकार से धोकेल देता है, कि त्रिस और भी नदी की धारा ले जायेगी, वही उसका भाष्य है, उसकी नियति है।

लेकिन वास्तव में संसार ने केवल उनको ही सराझा

है, जाना है, पूजा है, सम्मान दिया है, जिन्हें अपने भाष्य का निर्माण स्वयं किया हो तथा विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में जूझते हुए भी अपने लक्ष्य का ध्यान रखा और उसकी ओर बढ़ते हुए निरन्तर प्रयासरत रहे। व्यक्ति के जीवन में वहि समस्याएं नहीं आये, तो व्यक्ति के जीवन जीने का सार्थक उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, जीवन तो वह होता है, जो वास्तव में जीवन्त हो - बार-बार समस्याएं आयें और व्यक्ति उन समस्याओं का समाधान अपनी शक्ति तथा बुद्धि के द्वारा प्राप्त करते हुए आगे आने वाली नई चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करे।

व्यक्ति के जीवन में समस्याएं मुख्यतः सौलालिक होती हैं। ये समस्याएं उसे इस संसार में अन्य व्यक्तियों द्वारा या अन्य व्यक्तियों द्वारा उत्पन्न की गई परिस्थितियों के फलस्वरूप प्राप्त होती हैं। परिस्थितियों को अपने अनुरूप

द्वालना ही व्यक्ति की विद्वानता कही जाती है और वही व्यक्ति पूर्ण पुरुष बन सकता है, जिसके जीवन में निरन्तर साहस का उद्गग संचारित होता है, वह व्यक्ति जीवन में निरन्तर कुछ नवीन करने का विचार करता रहे, अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपना मार्ग स्वयं बनाने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहे।

संसार में व्यक्ति को जीवन तो जीना ही है और जीवन के साथ बाधाएं और कष्ट जुड़ेगे ही। कुछ बाधाएं परिवार द्वारा आरोपित होंगी, जिन्हें जिम्मेदारियां कहा जा सकता है और कुछ बाधाएं जिस प्रकार का भी कार्य कर रहे हैं, उसके द्वारा आयेंगी, जोकि किसी भी व्यक्ति के लिये जीवन मार्ग पर कूल बिछे नहीं होते। इस पथ पर पुष्ट भी है, तो काटे भी हैं, कंकड़ भी हैं, तो समतल घरती भी है, तो फिर किस प्रकार व्यक्ति अपने आपको किन शक्तियों के माध्यम से ऐसा बना ले, जिससे कि वह अपने कहीं पर स्वयं विजय प्राप्त कर सके।

विजय का तात्पर्य है, कि जो भी जीवन में कोटे हैं, जो भी जीवन में कंकड़ हैं, जो भी जीवन में न्यूनताएं हैं, जो भी जीवन में शत्रु हैं, उन सब पर पार याना और उन सबको समाप्त कर देना। यदि जीवन में विनाशी बनना है, तो मनुष्य को कुछ ऐसा कार्य करने के लिए निरन्तर प्रेरित होना पड़ेगा, जिससे कि उसका जीवन दूसरों से कुछ अलग बन सके।

जीवन में मुख्य समस्याएं जिनके कारण व्यक्ति को पराजय प्राप्त होता है, इसके मूल में तीन प्रकार के ही शत्रु मूरुप हैं, ये शत्रु हैं—

द्वितीय अर्थात् शरीर की कृशकायता, शरीर की क्षीण शक्ति, शरीर में रोग, कष्ट।

दूसरा शत्रु है, जो कि आपके कार्य में आपकी आलोचना करते हैं, आपको आगे बढ़ने से रोकते हैं और आपकी उन्नति का मार्ग अवरुद्ध करते हैं।

तीसरे प्रकार के शत्रु मानसिक शत्रु होते हैं, जो कि आपके विचारों को नड़ कर देते हैं, आपके उत्साह की गति मंद कर देते हैं, आपकी आनन्दिक शक्ति को क्षीण कर देते हैं, जिसके कारण आपके अपने जीवन में कोई भी कार्य करने का उत्साह ही नहीं बचता है।

यदि आपका जीवन मार्ग केवल काटकाकीर्ण ही है, और जीवन में शत्रुओं की प्रबलता है, भय ने इस प्रकार से जीवन को धेर लिया है, कि किस प्रकार से जीवन व्यक्ति किया जाय, वह उपाय ही नहीं मिलता, तो जीवन में निराशा आती है और निराशा व्यक्ति को उसकी आत्मा से तोड़ने का



प्रयास करती है, उसे जीवन की निर्धारकता का अनुभव होने लगता है और उसे लगता है, कि ऐसा जीवन जीने से क्या लाभ है, जिसमें केवल जीवन को धार समझ कर ढोया जाय, कि उसमें और पशु में कोई अन्तर ही न रह जाय।

यदि व्यक्ति प्राण ऊर्जा से संचारित है, यदि व्यक्ति के जीवन में घेतना है, विशेष संस्कार हैं और एक अजस्र शक्ति का भण्डार जागत है, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी भी परिस्थितियों में भी दार नहीं थान सकता, उसे विषम से विषम परिस्थितियों में भी ऐसा ही लगता है, कि मैं इस पराजय की स्थिति को विजय की स्थिति में बदल दूँगा और वह प्राणवान ऊर्जा से संचारित होकर अति तीव्र गति से कार्य करता है, अतः वह स्वयं परिस्थितियों का दास न होकर परिस्थितियों को अपना दास बना लेना है और फिर वही व्यक्ति अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार जी सकता है, जीवन की पूर्णता का बोध कर सकता है, जीवन में आनन्द के सभी आयामों को प्राप्त कर सकता है। ऐसा ही व्यक्ति वास्तव में मनुष्य जीवन जीता है।

विजयादशमी लिखेष तांत्रोत्तर पर्व

भही समय पर सही कार्य किये जाने पर उसका कल

निवास की शौष्ठ्र प्राप्त होता है और कार्य भी त्वरित गति से निवास होता है। प्रत्येक पर्व उपने आप में एक विशेष रहस्य जोड़ हुआ रहता है और विजयादशमी पर्व वास्तव में एक तांत्रिक निवास मिलित पर्व है। तंत्र वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कार्य को निवास में सम्पन्न किया जाय, सही क्रिया सम्पन्न की जाय।

सन्यासी, यति, अधोरी विजयादशमी पर्व की विशेष निवास से प्रतीक्षा में रहते हैं, क्योंकि इस दिन शमशान में रहकर उच्च याधनाएँ की जा सकती हैं, वर्ममाणी तांत्रिक साधनाएँ की जा सकती हैं, दक्षिणग्रामी नान्त्रिक साधनाएँ सम्पन्न की जा सकती हैं और इसी दिन दस गहाविद्याओं में प्रमुख कल्पनामुखी और धूमावती की साधना भी सम्पन्न की जा सकती है।

विजयादशमी के बल एक पर्व नहीं है, यह विजय सिद्धि निवास है। यह शिवस के बल इसीलिए विल्यात नहीं हुआ, कि इन दिन राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी। राम ने मानव इन्द्र धरण कर जब उपने जीवन की क्रिया में रावण संहार कर पक्ष प्रमुख रखा, तो यह बात विशेष और बरने नायक है, कि क्यों विजयादशमी के दिन ही राम रावण पर विजय प्राप्त कर सके, क्यों नहीं इनके पहले राम लक्ष पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सके, क्यों इसी दिन शक्षसों का पूर्ण रूप से पतन हुआ? राम के पास हनुमान, लक्षण, सुशील, जामवन्त जैसे बलिष्ठ दोषा थे, तो रावण के पास भी योद्धाओं की कोई कमी नहीं थी। क्यों ऐसा हुआ, कि हमी दिन राम विजय प्राप्त कर सके?

इस सम्बन्ध में विस्तार से विश्वामित्र सहिता में विवरण आया है। विश्वामित्र ने राम को धनुर्विद्या प्रियार्ही थी और उसके साथ ही साथ जीवन के सभी पक्ष उनके सम्मुख प्रस्तुत कर उनके निराकरण का उपाय भी बताया था और राम वास्तव में ही शिव्याना की प्रतिमूर्ति थे।

जब उन्होंने देखा, कि उनकी नानर भेना का संहार हो रहा है और राक्षस भेना प्रभावी हो रहा है, तो जिस प्रकार एक डिझ संकट के समय में उपने गुरु को याद करता है, उनका ध्यान करता है, तोकि उसी प्रकार राम यज्ञभूमि में ही भासन लगाकर बैठ गये और उन्होंने उपने गुरु विश्वामित्र का ध्यान कर पूरा की और ध्यान पूरा के उपरान्त शिव्यानिय मानस रूप में राम के स्मक्ष उपरियत हुए।

श्रीराम ने पृष्ठा - गुरुवेव यदि आज अपकी दी हुई सभी विद्याओं के उपरान्त भी मेरी भेना का नाश हो रहा है और मैं और लक्ष्मण मिल कर भी रावण का संहार नहीं कर पा-

रहे हैं, तो इनमें क्या रहस्य है? क्या मेरी शिक्षा में, शिष्यता में कोई कमी रह गई है अथवा मेरा ज्ञान अधूरा है? मुझे इस समय, इस क्षण क्या क्रिया सम्पन्न करनी चाहिए?

तब विश्वामित्र ने कहा — तुम केवल अस्त्र-शस्त्रों के माध्यम से तांत्रिक और योगी रावण पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि इसके नाभि के साथ ही अमृत कलश स्थापित है और आज तुम्हें मैं वह गूढ़ विद्या बताता हूं, जिसके कारण मैं स्वयं संसार का सर्वाधिक तेजस्वी योद्धा बन सका। यह विद्या केवल धनुर्विद्या नहीं है, मंत्र के माध्यम से और विशेष तंत्र के माध्यम से, जिसकी संरचना मैंने की है, वह क्रिया क्रियमाण विजय साधना तुम्हें सम्पन्न करनी होगी।

समय की देखते हुए उर्दी समय विश्वामित्र ने राम को क्रियमाण विजयी दीक्षा दी और उन्हें वह साधना सम्पन्न करवाई और विजयी होने का आशोवाद दिया और कहा — इस साधना के उपरान्त तुम्हें कोई भी व्यक्ति परास्त करने का विचार भी नहीं कर सकता है, तुम मन में जिस पर विजय प्राप्त करने की इच्छा रखोगे, वह अवश्य पराजित होगा ही।

इतिहास साक्षी है, कि विजयादशमी के दिन रावण के पतन के साथ ही राम के जीवन में पूर्ण विजय का एक नया अध्याय जुड़ा और राम भारतीय संस्कृति के, जनमानस की चेतना के नायक बने।

यह साधना वास्तव में ही अनूठी और निराली साधना है। जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया गया है, कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में पग-पग पर रावण रूपी परिस्थितियां उसकी शब्द बन कर खड़ी हैं, बार-बार व्यक्ति समाज में जाहत होता रहता है, उस स्थिति में साधक को निश्चय ही विश्वामित्र प्रणीत क्रियमाण विजय साधना सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे कि वह अपने भीतर वी शक्ति के पराङ्मम को रख दे परख सके, स्वयं शक्तिमान होकर विजय प्राप्त कर सके।

साधना विद्याल

यह केवल नविकालीन साधना है और विजयादशमी के दिन अथवा किसी भी माह में सोमवार की रात्रि को ही शूर्यास्त के एक प्रहर पश्चात दस बजे के आमपास प्रारम्भ की जाती है।

साधना के समय व्यक्ति अपनी उन बाधाओं को एक कागज पर लाल रंग के वस्त्र पहन कर और लाल रंग के उपर बैठ कर ही यह साधना सम्पन्न करें।

साधक लाल रंग के वस्त्र पहन कर और लाल रंग के

इस तांत्रोक्त साधना में किसी के प्रति मारण का भाव नहीं हो, शत्रु को अद्यवा विपरीत परिचयिताओं को परास्त करने का ही गुच्छ भाव मन में विचार कर यह साधना सम्पन्न करें।

यह साधना कई बार अत्यन्त विषम परिस्थितियों में किसी भी दशभौं की रात्रि को ही सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में तीन सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है— विश्वमित्र प्रणीत विजय यंत्र, ब्रैलोक्य विजय माला और ग्यारह क्रियमाण।

खबरें पहले इस साधना में गुरु पूजन करना अत्यन्त आवश्यक है और वह गुरु पूजन तांत्रोक्त हो, तांत्रोक्त विधि से गुरु पूजन सम्पन्न कर इस साधना की सामग्री को अपने सामने रखें।

— (सन्दर्भ — तांत्रोक्त गुरु पूजन पुस्तक)

ग्यारह मिन्हों के दीपक में तेल भर कर उसे जला दें, प्रत्येक दीपक के आगे सरखों तथा तिल की छेंटी पर एक-एक मंत्रसिद्ध वैतन्य 'क्रियमाण' स्पष्टित कर दें।

सर्वप्रथम सिन्धुर, हल्दी ड्वारा 'विजय यंत्र' का पूजन करें और प्रत्येक 'ब्रैलोक्य विजय माला' मंत्र जप के पहले क्रियमाण मुहुर्मुहुर्में ब्रंद कर उस बाधा को दुरहाएं, जो कि आपके जीवन में दावक बनी हुई है और जिसका आप दहन करना चाहते हैं, फिर मंत्र का जप प्रारम्भ करें—

संक्रमण काल की पहचान

संक्रमण काल परिवर्तन का समय होता है, और समय के प्रभाव से व्यक्ति की विचार बुद्धि विचार पर भी प्रभाव पड़ता है। योग्य साधक शिष्य संक्रमण काल में भी अपनी मति स्थिर रखते हुए सदगुरुदेव के कारों को आगे बढ़ाने में तत्पर रहते हैं। पिछले कुछ समय से पवित्र कायात्मिय में कर्नवल्यनिष्ठ योग्य साधकों के कहुं पत्र आये, उन पत्रों में उन्होंने लिखा है कि अमृक रथान पर अमृक व्यक्ति अपने आप को सदगुरुदेव द्वा, नारायण दत्त श्रीमानी का प्रधान शिष्य बताते हुए दीक्षा दे रहा है। गुरुदेव के नाम से छाटी-मोटी पुस्तक छाप रहा है।

यंत्र तंत्र यंत्र विजात्पुत्रिका और सिद्धाश्रम साधक परिवार आपको प्राणश्चेतना है। इस बाग को जो सदगुरुदेव ने अपने रक्त की एक एक बूँद से भीच कर तैयार किया है। उसकी देखभाल करना और सिद्धाश्रम साधक परिवार को और भी अधिक मनवृत बनाना आपका कर्तव्य है। आज जो तथाकथित शिष्य अपने आप को गुरु बताते हुए छोटे-मोटे दीक्षा शिविर आदि का काण्ड करते हैं, तो उन्हें रोकना क्या आपकी जिम्मेदारी नहीं है क्या? चैत्र नवरात्रि १३ में सदगुरुदेव

॥ ३५ ऐं हीं विजयाद्य हीं ऐं कट॥

पहली माला मंत्र जप होने के पश्चात उस क्रियमाण को यंत्र से स्पर्श करा कर दीपक से स्पर्श करायें और अपनी पहली बाधा पर विजय प्राप्त करने की विनती करें। यहीं क्रिया ग्यारह बार सम्पन्न करनी है, इस प्रकार ग्यारह माला मंत्र जप करना आवश्यक है।

जब ग्यारह माला मंत्र जप पूर्ण हो जाय, तो सभी क्रियमाणों को लाज कपड़े में बांध कर अपने मरनक पर स्पर्श करोयें, अपनी भुजाओं पर स्पर्श करायें, अपनी जंदाओं पर स्पर्श करायें, जिससे कि उसमें भावेश्वित शक्ति का, पूर्ण प्रभाव आपके शरीर में प्रवाहित हो सके।

यह निषिद्ध है, कि आप स्वयं देखेंगे, कि जिस शत्रु चाधा को आप असाध्य मान रहे थे, वह बाधा आपके द्वारा ही क्रियमाण को लाज कपड़े में बांध कर अपने मरनक पर स्पर्श करोयें, अपनी भुजाओं पर स्पर्श करायें, अपनी जंदाओं पर स्पर्श करायें, जिससे कि उसमें भावेश्वित शक्ति का, पूर्ण प्रभाव आपके शरीर में प्रवाहित हो सके।

साधना सामग्री पैकेट — 330/-

ने गुरु चिमूर्ति श्री नन्दकिशोर श्रीमाली, श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली और श्री अरविन्द श्रीमाली को पूर्ण शक्तिपात करते हुए गुरु पद भार सीधा या। उसी पदभार की मर्यादा को निभाते हुए गुरु चिमूर्ति सिद्धाश्रम साधक परिवार को श्रेष्ठतम बनाने में संलग्न है। केवल गुरु चिमूर्ति को ही दीक्षा प्रदान करने का मंत्र प्रदान करने का दायित्व सदगुरुदेव ने सौंपा है। यह महानतम क्रिया पिछले सात वर्षों से अनवरत चली आ रही है।

जब स्पान स्पान पर जो नये गुरु बन रहे हैं, और आप उनकी बातों में आकर अपनी मान मर्यादा और शिष्यत्व प्रियत्व रख रहे हैं, तो एक बार विचार कर लें, शायद ऐसे ही लोगों के लिए लिखा गया है,

जा का गुरु अंधा, चेला खरा निरन्ध
अन्धे अन्धा ठेलिया, दोऊ कूप पड़न्त
इसके अलावा एक और चिपोष बात मंत्र सिद्ध प्राण
प्रतिष्ठा युक्त साधना सामग्री सिद्धाश्रम दिल्ली और गुरुधाम
नेथपुर से ही भेजी जाती है। गुरुदेव ने कहीं भी साधना सामग्री
देने शाम्भा खोलने की अनुमति दी थी नहीं है।

रोग मुवत जीवन

बल युवत जीवन

योग युक्त जीवन

धन्व धन्व धन्व

जीवन में हम कई कारणों से व्यायित रहते हैं और धीरे धीरे यह व्यथा रोग का रूप ने लेती है। यह व्यथा अन्तिक हो या किसी अन्य प्रकार की, हमारे दैनिक जीवन में इनका प्रभाव हमारे शरीर पर भी पड़ता है। आज के प्रदृष्टि जीवन बदलण में पूर्ण स्वस्थ रहना तो एक आश्चर्यजनक घटना है। पद्धति के कारण विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होने लग रहे हैं, न केवल शारीरिक अपितृ मानसिक भी।

इनमें से विभिन्न प्रकार के रोगों का कोई स्पष्ट इलाज नहीं है, वरन् ये रोग दवाओं के माध्यम से दबा दिये जाते हैं या जिन रोग को उत्पन्न करने वाले कोटाणुओं को दवाओं के माध्यम से निष्क्रिय कर देते हैं, लेकिन पुनः कुछ समय के बावजूद विभिन्न जातावरण पाकर वह रोग पुनः उभर आता है या फिर दवाओं के नियमित प्रयोग से अनेक व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे एक प्रकार से रोगों की श्रृंखला निर्मित हो जाती है, एक रोग समाप्त होता है, कि दूसरे रोग के लक्षण दिखने लग जाते हैं। वर्तमान चिकित्सा कुछ दृश्य प्रकार की ही है।

लेकिन हम पूर्वकाल की ओर लौटें, तो हम पायेंगे, कि उस समय लोग वर्तमान समय से ज्यादा स्वस्थ थे, वे न केवल स्वस्थ थे अपितृ प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूर्ण आयु पूरे हिस्सत, जोश और उमंग के साथ जीता था, लेकिन वर्तमान युग में ४० या ४५ वर्ष पूरा करते ही व्यक्ति में धीरे-धीरे जीवन की आशा भीषण हो जाती है। ५५ या ६० वर्ष की आयु तक, तो

वह स्वयं बृद्ध तथा जर्जर अवस्था में पहुंच जाता है, उसके अन्दर का जोश, उमंग, उल्लास समाप्त हो जाता है, यह मिर्फ वेह की समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगता है। मानसिक रूप में भी यह स्वयं को अशक्त तथा असहाय अनुभव करने लगता है।

आज मानव इस प्रकार का जीवन जी रहा है, कि उसे जान ही नहीं होता है, कब उस पर योग्यताल आता है, कब उसकी जीशवास्या समाप्त हो जाती है, कब वह ग्रीढ़ बन जाता है। यदि सर्वेक्षण किया जाए तो मानव के अन्दर का उल्लास, जोश मात्र २५ या ३० वर्ष की अवस्था तक ही रहता है।

लेकिन हम यदि आपने पूर्वजों को देखें, तो वे १०० वर्ष की आयु पूर्ण करके भी शक्ति नहीं, जीवन से निरुत्साहित नहीं हुए।

आखिर क्या कारण है, कि हमारे पूर्वज वीर्यायु होते थे, उनकी कार्य क्षमता आज के व्यक्ति से कहीं अधिक थी, क्योंकि उनके पान पेसी चिकित्सा पद्धति थी, जिसका वे प्रयोग कर अपनी बीमारियाँ ठीक कर लेते थे। ऐसा तो नहीं है, कि वे रोग जल्द नहीं होते थे, रोग तो पहले भी थे। भगवान् कृष्ण के दो पुत्रों को कुछ रोग हुआ था, जिसे उन्होंने मंत्रों के माध्यम से समाप्त किया।

आज भी आदिवासी क्षेत्रों में जहां आधुनिक सुविधाएँ नहीं पहुंच सकीं हैं, वहां पर रोगों का इलाज मंत्रों के माध्यम से

तथा उनके अपने प्रयोगों के माध्यम से होता है तथा वे प्रयोग पर्ण रूप से प्रभावी होते हैं।

लेकिन चिकित्सा विज्ञान इसको स्वीकार कर पाने में असमर्थ है। वह मंत्र शक्ति के उपयोग को भली प्रकार से नहीं जान पाया है। मंत्र तथा साधना बल में जर्जर वह ने भी अपने आपको पर्ण रूप से युवा बना लिया है।

अभी भी कुछ ऐसी साधनाएँ हैं, जिनको सम्पत्ति कर आज भी संत्यासी जन शून्य कन्दराओं में रहने के बाद भी रवस्थ रहते हैं। उनके पास ऐसी ही साधनाओं ने एक अद्वितीय रोग मनि हेतु साधना है। धन्वन्तरी सिद्धि प्रयोग।

जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति समस्त प्रकार के रोगों से दूर रह सकता है। यह प्रयोग हमारे कृषियों की ओर से और वरदान स्वस्थ प्राप्त हुआ है। यह प्रयोग एक अत्यन्त उच्चकोटि के योगी के ढारा प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया, कि यह प्रयोग अत्यन्त विलक्षण प्रयोग है। धन्वन्तरी अपने काल के मर्वर्येष्ठ चिकित्सक व आयुर्वेदज रहे हैं। धन्वन्तरी ने अपने काल में भद्यानक से भद्यानक रोगों को समाप्त किया है। उन्होंने यह भी बताया है, कि अनेक कृषियों, संन्यासियों ने इस साधना को सम्पन्न कर अपने आपको निरोगी रखा।

इस साधना को सम्पन्न करने वाला व्यक्ति स्वैच्छिक ही प्रसन्न और जोशीला तथा उत्साहित रहना है, उसकी कार्यक्षमता बढ़ जाती है तथा योग उसके पास नहीं फटकते हैं।

साधना विधान

इस साधना में ओवैश्यक सामग्री धन्वन्तरी यंत्र अपिनी तथा धन्वन्तरी माला है।

इस साधना को आव धनवन्तरी जयती के दिन या फिर कृष्ण पक्ष की व्रीदशी को यह साधना सम्पन्न करें।

यह एक दिन की साधना है। यह साधन सम्पन्न करने वाला साधक उस दिन तक एक समय अल्प ग्रहण करे तथा फलाहार लें। साधक यदि साधना सामग्री करने के लिये एक बार आसन पर बैठे, तो फिर भैंज जय यूं करके ही आसन से उठे। यदि बीच में उठे, तो मुनः हथ पर मुष्ट धोकर ही आसन पर बैठे। साधना करने समय भन यक्षग्रन्थि ही रखें। साधक यथासम्भव कम बोले।

साधक निस स्थान पर साधना करे, उस स्थान को साफ, स्वच्छ करे तथा स्वयं भी स्नान कर पीले बरस धारण करें। साधक स्वयं के लिये भी पीले रंग का उनी आसन ले।

पीले रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर 'धन्वन्तरी यंत्र'

जीवन में शोग अल्ले पर उसका समाधान तो
प्रत्येक व्यक्ति करता ही है सोङ्ग धन्दनतरी
साधना से जीवन में यह स्थिति आ जाती है
कि शोग वह में प्रदेश कर ही नहीं सकते हैं।

रोग मुक्त जीवन से बस बुत्त और व्योम
बुत्त जीवन बन सकता है।

इस साधना में अपने परिवार के अन्य सदस्यों द्वातक आदि के लाभ से संकल्प लेकर उनके लिए भी वह साधना सम्पूर्ण कर सकते हैं। इस वर्ष धन्यवत्तरी जयंती २५. १०. २००० के दिन है। इस दिन संकल्प अवधि तेज़ पूर्ण साधना उपलब्धी प्रबोधसी को भी सम्पूर्ण कर सकते हैं।

को स्थापित करे, यंत्र का पूजन पंचोपचार विधि से करे। यंत्र की बायी ओर कुंकुम से रंग कर चावल की ढेरी बनाकर, उस पर 'अश्मिना' स्थापित करे। अश्मिना का पूजन कर, धी का दीप्ति लगावे।

धन्वन्तरी का ध्यान करते हुए पूष्प यंत्र पर अर्पित
होते -

सत्यं च वेद लिखतं रोपं विधृतं, अर्थवेदितं च सविधिपि
आराध्यमस्यायूडं लिङ्गूडं औषधवरूपम्,
धन्यवद्दन्तीं च सततं प्रणमामि मित्रं ॥

धन्वन्तरी माला से निम्न मंत्र की नित्य १५ माला
मंत्र जप बढ़े -

三

॥३५॥ ए सह शोजन्नाशाद्य धन्वलरये फट ॥

मन्त्र जप उन्नेशन के पश्यात साधन सामर्थी को एक पात्र में रख दे, प्रतिदिन एक भाला मन्त्र जप करें, और गोडूँ को गिर दिन साधना समाप्त हो रही हो, उस गिर्हि के पात्र में दूर, अद्विना तथा माला रख कर गिर्हि चाकल रखें और उस नदी में प्रवाहित कर दें।

सायना सामर्थी पेक्षण - ३१० /

गणपति साधन

कामेश्वरी साधना

अग्रवान् गणपति विघ्नों का विनाश करने वाले देव हैं, और कामेश्वरी महालक्ष्मी भौतिक गणता में अर्थ और काम को प्रदान करने वाली है, कार्तिक मास में गणपति का पूजन सम्पन्न कर कामेश्वरी साधना सम्पन्न की जाए तो निश्चित रूप से व्यक्ति अपने जीवन के विघ्नों का विनाश कर पूर्ण पौरुषता, आरोग्य, सम्मान प्राप्त कर सकता है। ऐसे ही विशेष साधना पाठकों के लिए पहली बार

गणपति, विघ्नविनाशक, सिद्ध नर्त्मपत्रपाल
देवता औं में अयाण्य पूज्य है बिना गणपति भूजा के अन्य
समर्पन मिहिया साधना, भूजा आदि निष्फल है इसके रूप
में गणपति धोष एवं निर्विन फलदाता है —

बीजापूर जडेभु कामुकरुज वृक्षान्नपात्रसेत्पल ।
ग्रीष्म ऋस्य विष्णु रत्न कलश ग्रीष्मकरामीठह ॥
ध्येयो वल्लभवा न यदम करथामिलहो ज्ञलदमूष्या ।
विश्वोत्पत्ति विपत्ति सर्विति करो विष्णेश इषार्दह ॥

सिद्ध लक्ष्मी गणपति

विनियोग — उ॒॑ उत्तर्य श्री गणपति महामंत्रस्वर गणक
ऋषि, निचुद गावत्रो उन्नः महागणपतिदेवता, सिद्ध
कामेश्वरी लक्ष्मी गणपति मंत्रे विनियोगः ।

कठन्याह

उ॒॑ श्री ही कली ओं गं अंगुष्ठाम्ब्यां तमः ।
उ॒॑ श्री ही कली श्री जो तज्ज्ञाम्ब्यां स्वाहा ।

उ॒॑ श्री ही कली ही गं महायाम्ब्यां तमः ।
उ॒॑ श्री ही कली जे अनामिकाम्ब्यां हु ।
उ॒॑ श्री ही उत्तो जे कलिष्ठिकाम्ब्यां गौषट ।
उ॒॑ श्री ही कली जे करततकरपृष्ठाम्ब्यां फट ।

घड़गन्धार्ष

उ॒॑ श्री ही कली ओं जो हृदयात् नमः ।
उ॒॑ श्री ही कलो श्री जो शिरसे स्वाहा ।
उ॒॑ श्री ही कली ही गं शिरकार्ये तमः ।
उ॒॑ श्री ही कली कली जे करवाय हु ।
उ॒॑ श्री ही कलो उत्तो जे नेत्रवत्वाय त्रौष्ण ।
उ॒॑ श्री ही कली जे जे अस्त्राय फट ।

द्यान

व्याघ्रे हृदये शोणां तामोत्तरं विम्बया ।
सिद्धलक्ष्म्या लम्भतिष्ठ पाशर्मध्येन्दु शेष्यरम ॥
वामाधः करतो दक्षाधः करततेषु पुष्टकरे ।

परिष्कृतं सातु लुंगं यदा पुण्डेक्ष कार्मके ॥
शूलेन शशचक्रम्या पाशोन्यस वुजेन च ।
शासि मञ्जरिका स्थीय दन्तावजस मणि वर्णे ॥
सवन्मदन्त सामन्दं श्री श्रीष्ट्यादि सम्बृतम् ।
अशेष विद्व विद्वंस विद्वं विद्वं विद्वं भवेन ॥

मंत्र

॥३५॥ श्री हृषीकेशी गतो जं गणपतये वर वपवये नमः ॥
उपयुक्त मंत्र नित्य एक माला मंत्र जप करें ।
गणपति प्रयोग करें है, तात्त्विक मांडिक कार्यों में विविध
गणपति स्मरण होता है —

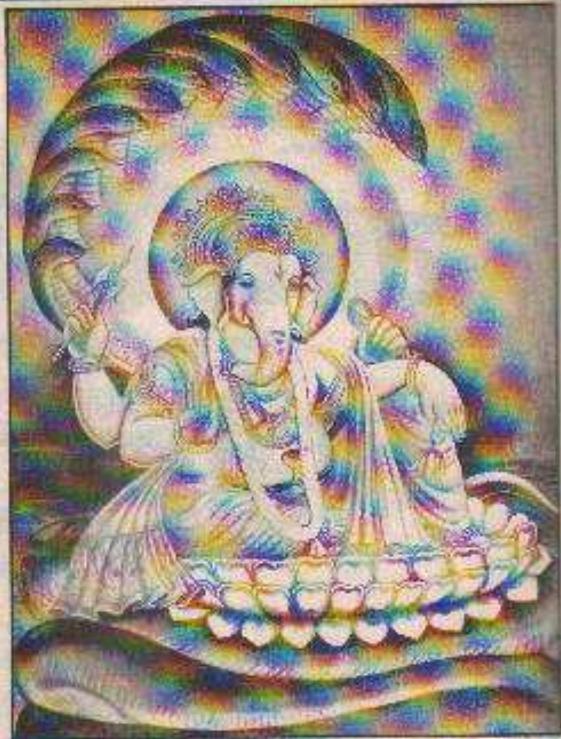
यीतं स्मरेत स्वस्मृत कार्यं एव
वश्याद्य मंत्री हृषीकेश स्मरेत तम् ।
कृष्णं स्मरेत्प्राणं कर्मणीश
मुच्चाटमे धूमत्रिम स्मरेत तम् ॥
बन्धुक युध्यादि लिखं च कृष्ण
स्मरेद धन्त्रयो दुरिवर्णमेन ।
मुक्तो च शुक्लं मनुष्यत स्मरेत तम् ।
एवं प्रकारेण गणं श्रिकालं
व्याघ्रपद्म सिद्धिद्विते भवेत च ॥

अर्थात् स्नानभन कार्य में पात कांति वाले गणेश जी के स्वरूप का ध्यान साधक को करना चाहिए। वशीकरण के लिए अरुण कांतिमय स्वरूप, मारण कार्य के कृष्ण कांति का ध्यान, उच्चाटन में धूम वर्ण वाला स्वरूप आकर्षण कार्य में बन्धुक पुष्पवत स्वरूप, पुष्टि कार्य में लाल वर्ण के गणेश जी का ध्यान करें। लक्ष्मी चाहने वाले हरितवर्ण तथा भौक प्राप्ति के इच्छुक साधक शुक्ल वर्ण वाले गणेश स्वरूप का ध्यान करें। इस प्रकार के गणेश का ध्यान करने पर ही साधक अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करता है।

लक्ष्मी साधना

लक्ष्मी किस स्वरूप में और कब अपने साधक का उद्धार कर देती है, यह कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता। परन्तु इन्होंने निश्चित है कि जो साधक निश्चित रूप से लक्ष्मी साधना करते रहते हैं, उन पर लक्ष्मी कृपा अवश्य होती है। एक विशेष प्रयोग पाठों द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है, इस प्रयोग के सम्बन्ध में इन्होंने निश्चित है कि साधक को फल किसी न किसी रूप में अवश्य ही मिलता है।

लक्ष्मी साधना के सम्बन्ध में जो विधियां तंत्र साहित्य में तथा अन्य शास्त्रों में दी गयी हैं, साधक उनका पालन



पूर्णतया नहीं करते, कुछ दिन मंत्र मनुष्यान करने के पश्चात उसे छोड़ देते हैं, कई बार तो साधना में उचित सामग्री अथवा उचित विधि का अभाव होने से ही उस साधना में सफलता नहीं मिलती। लक्ष्मी साधना में कुछ जाती का ध्यान रखना आवश्यक है —

वास्तविक रूप से तो लक्ष्मी की साधना अल्पराति का ही सम्पन्न करनी चाहिए और यदि नक्षत्र यह योग श्रेष्ठ हो तो उस दिन ही ऐसा प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए। सवार्थ सिद्धि योग रवि पुष्य उत्तम कहे गये हैं।

लक्ष्मी साधना में साधक को अपना मुहूर्त प्रसिद्धि विज्ञा की ओर कर बेतना चाहिए।

लक्ष्मी साधना में आसन ऊर्णी हो और उस पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर लक्ष्मी पूजा सम्पन्न करनी चाहिए।

लक्ष्मी साधना में मंत्र जप केवल कमल गहा का ही अर्पण किया जाना उचित रहता है।

यदि कमल के मुष्प की व्यवस्था हो सके तो वह पुष्प अपैत करना चाहिए।

साधक की मुद्रा पद्म मुद्रा होनी चाहिए, अर्थात् दोनों हाथों की उंगलियों नथा उंगली को मिला कर खुले हुए कमल के आकार की मुद्रा को पद्म मुद्रा कहा जाता है, उसी मुद्रा में

लक्ष्मी आळान तथा प्रार्थना करनी चाहिए।

लक्ष्मी साधना में दूब (दुर्वा) का विशेष महत्व है और इन दुर्वा को दूध में डुबो कर देवी को अवश्य अर्पित करें।

उपर लिखे गये नियम सभी प्रकार के लक्ष्मी साधनाओं के लिए आवश्यक भी हैं, इसके अतिरिक्त निश्चित स्थल्या में मंत्र जप इत्यादि करना चाहिए, नित्य ताजा शक्ति का प्रसाद स्त्रीर, बताशे आदि देवी महालक्ष्मी की अर्पित किया जाता है।

साधना सामग्री -

इस विशिष्टप्रयोग हेतु, केवल श्री कामेश्वरी महालक्ष्मी यंत्र तथा कमल गड्ढ माला आवश्यक है।

साधना विधि

अर्द्ध रात्रि को स्नान कर शुद्ध वल्त्र पहिन कर उन्हीं आलन पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर साधक अपने पूजा स्थान में बैठें, अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर चाबल की ढेरी बना कर ताम्र कलश स्थापित करें, कलश में जल डालें, तथा इसके साथ ही ग्यारह कमल गड्ढ बीज तथा दूध डालें, तत्पश्चात अपने सामने एक तांबे का दीपक जलाएं, इस दीपक में जो बतियां हो वे कम से कम पांच अवश्य हों, तथा इसके अधिक बनियां का प्रयोग करें तो वे विषम संख्या में ही होनी चाहिए। दीपक में शुद्ध धो का ही प्रयोग करें।

अब साधक चन्दन तथा अबीर गुलाल से कलश का

पूजन कर दूसरे ताम्र पात्र में श्री कामेश्वरी महालक्ष्मी यंत्र स्थापित करें, चन्दन, गुलाल तथा सिन्दूर से यंत्र का पूजन करें तथा यंत्र के आगे पृष्ठ स्थापित करें।

अब साधक पद्म मुद्रा में बैठ कर प्रसाद अर्पित करते हुए प्रार्थना मंत्र का २१ बार उच्चारण करें।

प्रार्थना मंत्र

// ॐ महालक्ष्मी लक्ष्मस्तुभ्यं गृह वास्त्रो करोति त्यम् //

अब साधक जल को अपने नेत्रों से लगावे तथा सामान्य गुदा में बैठ कर कमल गहा माला से इस विशिष्ट कामेश्वरी बीज मंत्र का जप करें।

मंत्र

// ॐ महालक्ष्मी श्री श्री कामेश्वरी जाय फट् //

इस प्रकार मंत्र जप पूर्ण कर प्रसाद ग्रहण करे और जितने दिन भी यह मंत्र जप चल रहा हो उतने दिन तक एक समय भोजन करें।

इस जप की पूर्णता होने पर महालक्ष्मी की पूजा से साधक को निश्चिन फल प्राप्ति अवश्य होती ही है, इसमें सदैह रखने वाला जीवन भर दरिद्री ही रहता है।

आप अपने दो मित्रों को पवित्रा सदस्य बनाए तथा कार्ड के 6 पर अपने दोनों मित्र का पते लिखकर भेजे कार्ड मिलने पर ५, 438/- की बी. पी. पी. डाक आपको मंत्र सिद्ध प्राप्ति ग्रन्ति युक्त 'कामेश्वरी महालक्ष्मी यंत्र, 'कमल गड्ढ माला' भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पवित्रा भेजी जाएगी।

शक्तिनारायणास्त्वाहं नित्या देवी सदोक्तिः ।

तिरोभावस्तथा सृष्टि स्थिति संहसिरेव च ।

तत्त्व या पदमा शक्तिं न्यौत्सन्नेव हिम दीर्घितेः ।

अहंता ब्रह्मणास्तस्य सोहमस्मि सद्ब्रह्मनी ।

तस्या मे पंचकमाणि नित्याणि नित्याजि त्रिवशेश्वर ॥

अनुग्रह इति प्रोक्तं कर्म रूपं च पंचकम ॥

सर्वादस्यां जता देवी रवात्म भूतात्मपाविनी ॥

नित्य-निर्वोद्ध लिस्सीम कल्याण गृण शालिनी ॥

अहं न्नारायणी जाम द्वा सत्ता वैष्णवी परा ॥

हे इन्द्र! भगवान नारायण की शक्ति रूपा, विष्व गुणों से युक्त तथा नित्य स्थित रहने वाली हूं, इस संसार में ऐसे पांच कर्म नियत हैं – शक्ति रूप में सभी जीवों में स्थित रहना, सृष्टि की रचना, पालन, संहार तथा सभी जीवों पर विद्या करना।

चन्द्रमा की चांदी की तरह, उस परम सत्ता की शक्ति स्वरूपा हूं, सर्वत्र विद्यमान रहने वाली, सभी जीवों में ही व्याप्त हूं।

सनातनी, सोऽहं रूपा, ब्रह्म स्वरूपा, नित्य, वोष रहित, असीम, कल्याणमयी हूं। वह परा शक्ति रूपा नारायणी तथा वैष्णवी में ही हूं।

संकल्प और देव पूजन क्या?

जो भी करें समझ कर करें

प्रत्येक शुभ कार्य, संस्कार साधना के प्रारम्भ में संकल्प, देव आह्वान और देव पूजन क्यों आवश्यक है? क्या हम केवल परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं अथवा इनके पीछे कोई वैज्ञानिक तर्क है, इन दोनों कार्यों के पीछे जो रहस्य है, उसे समझाने का प्रयास किया जा रहा है। यदि आपके मन में धार्मिक अनुष्ठान, क्रिया इत्यादि के सम्बन्ध में कोई शंका है तो आप आवश्य लिखें। हम तो कहते हैं कि हमारे क्रष्ण मुनि वैज्ञानिकों के भी वैज्ञानिक थे उन्होंने जीवन का कोई भी सिद्धान्त त्यर्थ में नहीं बनाया।

आर्योविक संस्कृति ने केवल साधना और पूजन आध्यात्म के बारे में ही विवरण नहीं दे, वैदिक संस्कृति में जीवन के प्रत्येक पहलू के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण है। उनमें से कई बातों को हमने परम्परा के रूप में ले लिया है। उपर्युक्त मूल में क्या बात है उन्हें जानने का प्रयास ही नहीं किया, आर्ती क्या है? संकल्प क्या है? यजोपवित का क्या महत्व है? ग्रह किस प्रकार से प्रभावित करते हैं? क्या देवता वास्तव में आते हैं? देव पूजन क्यों आवश्यक है? इन सारे प्रश्नों की वैज्ञानिक व्याख्या हमारे आर्य क्रष्णों ने की है और प्रत्येक प्रश्न को विस्तृत रूप से समझाया भी है आप स्वयं भी हन बातों को समझे और सम्बन्ध में अपनी शंकाओं का निराकरण कर बता सकें कि अमुक किया किस निष्ठा आवश्यक है इन अनम्म में इस बार संकल्प, देव आङ्गन, देव पूजन के सम्बन्ध में जानकारी दी जा रही है।

संकल्प

किसी भी पूजन अर्थात् किया का प्रथम भाग संकल्प

उसके पश्चात आसनशोधन, आचमन, प्राणायाम, उच्च इत्यादि क्रियाएँ सम्पन्न की जाती हैं। प्रत्येक धर्म अनुष्ठान के प्रारम्भ में संकल्प आवश्यक है। मनु स्मृति में लिखा है-

संकल्पमूलः कामो वै वद्धाः संकल्पसंभवाः ।
त्रता जियमधर्मार्थव सर्वे लक्ष्यज्ञ स्मृताः ॥

अथात् समस्त कामनाएँ संकल्प मूलक ही हैं, संकल्प के पश्चात ही समस्त यज्ञ सम्पन्न होने हैं त्रत नियम धर्म कार्य संकल्प से ही प्रारम्भ होते हैं।

मानव जीवन पर भावनाओं का गहन प्रभाव पड़ता है, संकल्प अनुष्ठान करने और साधना के प्रति साधक की भावना का ही मूल स्वरूप है संकल्प के द्वारा साधक उपने क्रियमाण कर्ने के प्रति नाईभाव से कठिकारा हो जाता है, आज के संसार में यही देशों में कोई भी पदाधिकारी एवं उद्धण करने से पूर्व ईश्वर, अल्ला, जीसस उद्योग किसी श्रद्धालुव नत्व का नाम उच्छरण करने हीर 'शरण' रहते हैं वास्तव में शरण संकल्प प्रगती का ही नितान है।

मारतीय संस्कृति ने शपथ सीगन्ध लेना बहुत ही अधिक भ्रष्ट काम माना जाता है अपने प्राणों पर आ बनने की अवसरा में ही कोई व्यक्ति शपथ लेने को विषय होता है। ये माना जाता है कि यदि कोई व्यक्ति सीगन्ध लेता है तो वह सच्च ही कह रहा है और यहि एक बार कोई शपथ ले ली तो उसका निर्वाह करता ही है।

रघु कुल गीत सदा चली आई
प्राण न जाये पर बचन न जाये

यह हमारी संस्कृति का आदर्श वाक्य है, अर्थात् एक बार जो शपथ ले ली बचने वे विद्या उसका पालन आवश्यक ही है, आजकल तो शपथ लेना एक आम रिवाज बन गया है। बातचीत में, बाय गाव, बाय फाइर, बाय दू, एक आम बात बन गई। इन शब्दों की यदि व्याख्या करे तो इसका सीधा अर्थ यही है कि बायगाड़ अर्थात् भगवान की वस्त्र, बाय फाइर अर्थात् पिता की कस्म, बाय दू अर्थात् आपकी कस्म लेकिन इन वचनों को बोलते हुए भी व्यक्ति असल्य बोल जाते हैं। जब कि इसका वास्तविक अर्थ है यदि मैं असत्य बोलूं तो भगवान मुझे सजा दे।

इसलिए हमारी संस्कृति में मनुष्य के इन निर्बलताओं को ध्यान में रखते हुए शपथ नेथो विशेष प्रथा के निए प्रत्येक को अवसर नहीं दिया गया अपेक्षा शपथ के बनाये अपने प्रतिज्ञा को कार्यान्वयन करने के लिए संकल्प प्रश्ना वा ही विधान किया गया है। शपथ लेना एक अपमान सूचक प्रथा है शपथ सीगन्ध वही व्यक्ति उदास है जिसकी ईमानदारी में सद्देह हो और वह सामने बाजे को विश्वास दिलाना चाहता है।

संकल्प प्रथा वह अनुष्ठान है जिसमें साधक अमुक अनुष्ठान कर्म के प्रति अपनी वृद्धिनिधि और आत्म सम्मान की भावना से युक्त होकर कर्तव्य पालन में संलग्न हो जाता है।

संकल्प की सबसे बड़ी विशेषता है आर्य ज्ञति के द्वितीय का परम्परा को युरक्षा प्रत्येक दिन कार्य उत्तर हुए संकल्प में एवं विशेष वचन अवश्य दोहराते हैं जिनके शब्दों पर आप विशेष ध्यान दें जब जल हाथ में लेकर संकल्प करते हैं और बोलते हैं—

उम तत्त्वदद्य ब्रह्मणोऽहि द्विनीधे परद्वृं श्रीभ्वेतव्याच्छक्तये
वेवस्त्रतम्नवत्तरे अष्टाविंशतितम् कलिद्वजे कलिपथ्यम्
वरणे अष्टाविंशत्युच्चर्द्विच्छ्रद्धन्तम् वैकमाव्ये... आगि

इनका एक तात्पर्य हम अपनी उम विरन्तन सना का स्मरण करते हैं जिसका प्रादुर्भाव इस धरातल पर आज से



१ अथवा २,३ कोड़ २६, लाख ४२, वर्ष पूर्व हुआ था, यह आर्य संस्कृति की विशेषता है कि इसमें पूर्वजों ने आज से करोड़ों वर्ष पूर्व की सांस्कृतिक परम्परा को प्रारम्भ किया वह आज भी अध्युणा है।

संकल्प के रूप में उसी परम्परा में ईश्वर कर्त्ता मन का स्वास्थ्य रखने हुए कार्य पूरा करने का संकल्प लेते हैं। कोई आठर रो सीगन्ध दिलाने वाला नहीं है, मन में स्थित ईश्वर ही साक्षी है कि इस किया को सम्पन्न करने का निष्पत्ति किया गया है कोई ईमानदारी पर शक करने वाला भी नहीं है मन में स्थित ईश्वर को वचन दिया है कि मैं इस संकल्प के साथ यह किया अनुठन सम्पन्न कर रहा हूँ।

संकल्प में जल द्वाहण क्यों—

संकल्प करने समय जल को अपने हाथ में रखते हुए, स्पर्श करते हुए, किया का विधान है क्योंकि जल में वस्त्र देव का निवास है और उनके साक्ष्य में जो प्रतिज्ञा सम्पन्न की जायेगी उसका निर्वाह न होने पर वक्षण का ही अपमान होगा और वे ही दण्ड देंगे।

वैज्ञानिक दृष्टि से जिस प्रकार हमारा तन भुक्त अन्न

अथात शहण किये गये अज्ञ का परिणाम है उसी प्रकार 'आपोमयोः प्राणाः' इस वेद प्रमाण के अनुसार प्राण शक्ति भी ग्रहण किये हुए जल का अनिम परिणाम है। प्रत्येक कर्म के अनुष्ठान में प्राण शक्ति की प्रबलता अनिवार्य है प्राण शक्ति के बिना कर्म शक्ति भी जाग्रत नहीं हो सकती इसीलिए प्राण शक्ति के जनक जल का स्पर्श करके साथक अपने आप को महाप्राण अनुभव करता हुआ अनुष्ठान कर्म साधना में प्रवृत्त होता है।

इसी प्रकार प्रत्येक अनुष्ठान में तीन बार जल आचमन करने का शास्त्रीय विधान है। तीन बार आचमन करने से कार्यिक, मानसिक, वाचिक, विविध ताप की निवृत्ति अद्भुत रूप से होती है, शाश्रीक रूप में तीन बार जल ग्रहण करने से कण्ठ शोषण दूर होने से कफ निवृत्ति हो जाने के कारण श्वास किया और मत्र आदि की शुद्ध उच्चारण में भी अपेक्षित शक्ति प्राप्त होती है। प्राण निरोध के कारण शरीर में उष्मा बढ़ा जाती है, और कई बार तालु सूख जाने के कारण हिचकी तक आने लगती है इसीलिए आचमन करने से वह शुष्कता भी दूर हो जाती है।

शाश्रीक विधि के अनुसार विआचमन में चुल्हा भर भर कर जल ग्रहण नहीं किया जाता अपितु उसने भी परिमाण में जल शहण करने की विधि है। जिससे जल कण्ठ और तालु को स्पर्श करता हुआ हृदय चक्र की सीमा तक समाप्त हो जाए। कण्ठ और तालु से मत्र का उच्चारण होता है और वह उच्चारण हृदय से प्रारम्भ होना चाहिए इसीलिए शुष्क मात्रा में तीन बार जल ग्रहण कर अनुष्ठान प्रारम्भ किया जाता है।

यह पूजन, यह आवाहन क्यों आवश्यक हैं।

याज्ञवल्क्य ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ याज्ञवल्क्य मृति में यह धार्ति प्रकरण में लिखा है —

श्रीकामः शान्तिकामो वा शृण्यजां समाचरेत् ।

अथात — श्री और शान्ति की कामना करने वाले मनुष्य को यह यज्ञ करता चाहिए।

मनुष्य का शरीर देह प्रदत्त कृपा से बना हुआ एक पिण्ड है और इसके निर्माण में प्रत्येक वेब ने अपना अपना सहयोग किया है जिस प्रकार कोई भी वस्तु का निर्माण के पश्चात निश्चय ही हम उस व्यक्तियों का धन्यवाद देने हैं जिन्होंने उसके निर्माण में सहयोग किया है। इसी प्रकार इस

भानव शिष्ट के निर्माण में सूर्य आदि नवशङ्कों का प्रधान हाथ रहा है। मानव शिष्ट में सूर्य ने आत्मा दी, चन्द्रमा ने मन दिया, मंगल ने रक्त का संचार किया, बुध ने कल्पना शक्ति दी, वृहस्पति ने ज्ञान प्रदान किया, शुक्र ने रज और वीर्य, शनिवेद ने सूख वृक्ष की अनुभूति दी। इस प्रकार हमारा शरीर इन्हीं देवों की कृपा का फल है इसीलिए जब जब भी इस देह द्वारा कोई उत्सव सम्पन्न किया जाता है, थोड़ा संस्कारों में जब भी संस्कार का अवसर आता है तब इन्हीं देवताओं का नाम लेकर सूर्यार्थ नमः, चन्द्रमसे नमः शीमाय नमः, बुधाय नमः वृहस्पति नमः शुक्राय नमः, शनैश्चराय नमः कहते हुए सब का धन्यवाद किया जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिष्ठा के अनुसार ही उसके सुल और दुख में दूसरे लोग सम्पन्नित होते हैं। प्रत्येक कार्य में जिस जिस से सम्बन्ध है उसे आमंत्रित किया जाता है, इसमें हिन्दु धर्म में तो आपसी भाईचारा इतना अधिक विस्तृत है कि हम अपने सभे सम्बन्धियों मिश्रों को तो निर्माण देते हो हैं अपितु सूर्य लोक, चन्द्रलोक, शनिलोक और ब्रह्माण्ड में स्थित अन्य ग्रहों और नक्षत्रों को भी आमंत्रण देते हैं और उनका सम्मान अवश्य करते हैं। यह शक्ति करना की इन ग्रहों का आहवान कर केवल जल और दो दाने चावल से ही निष्पाता किया जाता है यह उचित नहीं है। इस तो भाव रूप में इन ग्रहों को जिन्होंने शरीर रखना में सहयोग किया है उन्हें जड़ वस्तुओं से अधिक अपने मन का भाव प्रधान कर रहे हैं।

क्या आहवान करने से यह आते हैं ?

सूर्य इत्यादि ग्रह पृथ्वी से लाखों योजन दूर है और यदि हम ये आहवान करे तो वे कैसे आ सकते हैं वास्तव में 'शब्दनावाद सिद्धान्त' के अनुसार ये योहो वेद मतों के आश्यात्मिक आहवान से साधक ग्रह के नाम अपना सदृश भेजता है उसी समय सर्वव्यापक परमत्वा के प्रबन्ध अनुसार देव वाणी के प्रताप से सूर्य इत्यादि चेतन्य देव साधक के पिण्ड में शक्ति के रूप में स्थित है उसी शक्ति को प्रेरित कर देते हैं। यह का आहवान का तात्पर्य ये नहीं है कि वे यह अपनी ब्रह्माण्डीद कक्षा छोड़ कर उस साधक के घर में आ जायेंगे यह तो मनुष्य शरीर में शुद्ध रूप से विराजमान हो जाए।

आहवान पूजन से केवल प्रयोजन इतना ही है कि जो देव द्वारा देव में ही स्थित है वे जाग्रत हो जाए उनकी ऊर्जा हमे और अधिक प्राप्त हो।

शिष्य धर्म



* जिस प्रकार शरीर की शुचिता के लिए, उसे नित्य स्वच्छ करना आवश्यक है, उसी प्रकार मन और मस्तिष्क को नित्य स्वच्छ करना आवश्यक है। जब तक मन नकारात्मक विचारों से भरा है, तब तक वह एक लक्ष्य की ओर ध्यान नहीं कर सकता है।

* जो व्यक्ति अपने जाप का सम्मान करता है, वह दूसरों से सुरक्षित है, क्योंकि उसने एक ऐसा अभेद आवरण ओढ़ रखा है, जिसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकता।

* हर शिष्य का रक्त लाल है और हर शिष्य के आंसू खारे हैं। हर शिष्य को ऐसा मार्ग आवश्य ही खोजना चाहिए, जिससे उसके सम्मान की रक्षा और अनन्त सम्भावनाओं की पूर्ण प्राप्ति हो सके।

* वास्तविकता को केवल शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता। आम का स्वाद, उसे चख कर ही जाना जा सकता है। साधना द्वारा विकसित ज्ञान से ही परम सत्य का साक्षात्कार सम्भव है।

* जो शिष्य गुरु स्थान के निकट रहता हो उसे प्रतिदिन एक बार जाकर गुरुदेव को प्रणाम करना चाहिए। परन्तु यदि कोई शिष्य अनेक योजन अथवा काफी दूर रहता हो, तो भी उसे वर्ष में तीन बार और नहीं तो एक बार तो जाकर गुरुदेव को अवश्य प्रणाम करना चाहिए।

* गुरु से बढ़कर न शास्त्र हैं, न तपस्या, न मंत्र और न ही स्वगार्दि फलक! गुरु से बढ़कर न देखी है, न देव ही गुरु से बढ़कर है और न ही मोक्ष या मंत्र जप। एक मात्र सदगुरु ही सर्वश्रेष्ठ है।

* मलिन बुद्धि और गुरु भक्ति से रहित तथा क्रोध, लोभादि से शस्त्र, नष्ट आचार विचार वाले व्यक्ति के समझ गुरु तंत्र के इन दुर्लभ पवित्र रहस्यों को स्पष्ट नहीं करना चाहिए।

* बीज को बोध नहीं होता अपनी पूर्णता का, और इसी तरह शिष्य को भी अपनी पूर्णता का भान नहीं होता, शुरु का कार्य मात्र उसे उसकी पूर्णता का बोध करना ही तो होता है।

* हिरण की नाभि में ही कस्तूरी होती है, लेकिन फिर भी वह उसकी खोज में बन-बन भटकता है, ऐसे ही सदगुरुदेव जो अपने प्रत्येक शिष्य के हृदय में ही विराज रहे होते हैं, उनका आभास शिष्य को नहीं हो पाता है।

* गुरु जो भी आज्ञा देते हैं, उसके पीछे कोई रहस्य अवश्य होता है, अतः शिष्य को बिना किसी संशय के गुरु आज्ञा का अविलम्ब पूर्ण तत्परता से पालन करना चाहिए, क्योंकि शिष्य इस जीवन में क्यों आता है, उसका इस युग में क्यों जन्म हुआ है? वह इस पृथ्वी पर क्या कर सकता है, इन सबका ज्ञान केवल गुरु को ही हो सकता है।

* गुरु और गुरु कार्य को त्यागने वाले को कहीं शरण नहीं मिलती, इसलिए अपनी समर्थानुसार शुरु कार्यों में भी पूर्ण मनोभाव से सहयोगी बना रहे।

- श्रीमन्

गुरुवारी

* गुरु को पहिचानने की

अत्यन्त सरल प्रक्रिया है, गुरु वह है —

- जिसके पास बैठने से मन में अपूर्ण शांति का एवं आनन्द का अनुभव हो।
- ऐसा प्रतीत हो, कि इनका और ऐसा अत्यन्त अंतरंग सम्बन्ध है।
- ऐसा लगे कि इनके और ऐसे बीच कोई भेद या दूरी है तो नहीं।
- जिनके बिना जीवन व्यर्थ और बेमानी लगे।
- वही गुरु है, वही पश्चाद्वर्शक है।

* जो शिष्य नहीं बन सकता, वह जीवन में कुछ भी नहीं कर सकता, वह जीवन में अस्फल होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। जो शिष्यता नहीं सीख सकता, उसके चेहरे पर शाज नहीं आ सकता, उसकी चाल में दृढ़ता नहीं आ सकती, उसका सिर हिमालय से ऊचा नहीं बन सकता, वह जपने वाले में अतिरिक्त नहीं बन सकता।

* डिप्टी ऐसा हो, जो कफन ब्राह्म कर निकले, जो समाज की परवाह नहीं करे, जो चुनींतियों को खल सके, जिसकी आखों में नेवर हो... अनि स्फुनिंग हो, जिसके हाथों में वज्र की तरह प्रहार करने की क्षमता हो और जो अहो अथों में गुरु चरणों में समर्पित होने की भावना रखना हो।

* प्रेम तो एक उत्कृष्ट सूधार है, एक सुगन्ध है, प्रेम तो एक छल-छल बहना हुआ दरना है, जिसके नीचे स्नान करने से पूरे तल-मन को मस्ती की हिलोर सी आकर के एक फुटार सी पड़कर के भिंगो देती है।

* परन्तु गुरु के प्रेम का रास्ता दरना शारान नहीं है, यह तो तनवार की बताने से पैर लहुलहान हो जाते हैं। यह ऐसी पगड़पड़ी नहीं है जिसके नीचे पुण्य लिये बहुत कठिन है, तकनीकद यक है। पूर्ण हृदय से प्रेम करने की जिया विश्वले को हो।

एक धार है जिस पर हो, प्रेम करना तो आ पाती है।

* इथलिए कहता हूं कि तुम नदी बन
जाओ, क्योंकि प्रेम की कल्पना, प्रेम की मावना नदी जानती
है। नदी इस भात वो नहीं भानती, कि यह पहाड़ है, प्रत्यर है,
चून है, वह तो बन आगे की ओर गतिशील रहती है। उसका नस्य
उम्मा चिन्नन, उसकी धारणा एक ली है कि मुझे उस समृद्ध में जाकर
जीन हो जाना है।

* इस दंग से कोई हीर नहीं लुटाता किस दंग से मैं ज्ञान आप पर लुटा
ना है। यह आपका सीधा भाग्य है, कि मैं आपको उस जगह तक ले जाना चाहता हूं, कि
मूर्ति विश्व में आप विजयी हों, आप सफलता युक्त बन सकें।

और मैं अपने शब्दों पर दृढ़ हूं।

और मैं आपको अद्वितीय बना रहा हूं।

एक सूर्य अस्त हो, तो कई और सूर्य यहां उगे छुए हैं जो
नेतर्नी कर देंगे।

* अपूर्ण से विनाश बनने की क्रिया केवल गुरु जानता
है, मनुष्य से देखता जनाने की क्रिया केवल गुरु जानता है,
मूलाधार से स्वहस्तार तक पहुंचाने की क्रिया केवल गुरु जानता
है और इसी लिए जीवन का आधार केवल और केवल गुरु
ही होता है।

* शिष्य नितना गुरु से एकाकार होता
रहता है, उतना ही गुरु उसको आगे धरेलता रहता है
यह शिष्य पर निर्भर है कि, यह अपने-आप को पूर्ण
त्व से समर्पित करता है या अधूरा समर्पित करता
है।

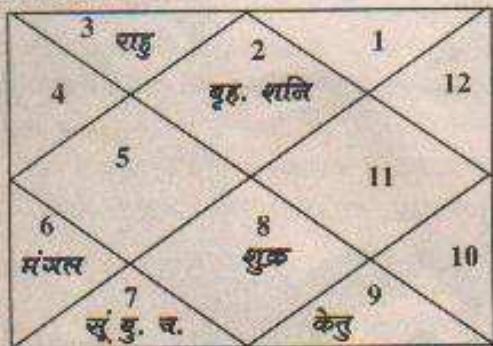
* अन्दर उतरने की क्रिया, या मन के
परे पहुंचने जी क्रिया को ध्यान कहते हैं।

‘शितम्बर’ 2000 मंत्र-तत्र-यंत्र विज्ञान ‘45’

दीपावली ग्रहण

इस वर्ष दीपावली चित्रा नक्षत्र चतुर्दशी गुरुवार २६ अक्टूबर को ही सम्पन्न होगी। क्योंकि २७ अक्टूबर को अनावस्या दूसरे प्रहर तक ही है। दीपावली पूजन मुख्य रूप से वृषभ लग्न और सिंह लग्न में सम्पन्न किया जाता है। क्योंकि ये दोनों लग्न स्थिर लग्न माने जाते हैं। लक्ष्मी जीवन में पूर्ण रूप ये स्थिर रहे इस हेतु स्थिर लग्न में ही विशेष महात्मकमी पूजन सम्पन्न किया जाता है।

वृषभ लग्न



गुरुवार २६ अक्टूबर को वृषभ लग्न सेष्याकाल ३, बजकर ८ मिनट से रात्रि ५ बजकर १२ मिनट तक है। ज्योतिर्षीय दृष्टि से वृषभ लग्न में आयेश वृहस्पति भाग्येश और वशमेश शनि के साथ लज्जेश शुक्र से पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध बनाते हुए स्थिर हैं। लज्जेश शुक्र की राशि में ही गुरुवार रात्रि ७ बजे से चन्द्र सूर्य और बुध का अनुकूल सहयोग होकर उभयन्तर योग, महापुरुष योग और दूर्धनायोग निर्मित हो गया है इस कारण यह योग अनुकूल कहा जा सकता है।

सिंह लग्न

सिंह लग्न मध्य रात्रि के पश्चात ३ बजकर ३५ मिनट से ३ बजकर ५३ मिनट तक है। इस लग्न की कुण्डली बनाने पर कई विशेष स्थितियां निर्मित हो रही हैं। वशम भाव का स्वामी शुक्र उच्चारितायी है और राहु उच्च राशि (मिथुन) में आय भाव में स्थित है। आयेश और धनेश बुध १३ छठी का वक्ता होकर सूर्य चन्द्र के साथ दशमेश शुक्र की राशि तुला राशि में स्थित है। इसके साथ ही भाग्येश मंगल पूर्ण कारक प्रयुल गड होकर धनभाव में स्थित है। इसी प्रकार पचमेश वृहस्पति दशम भाव में स्थित होकर पूर्ण दृष्टि ढाल रहा है। जो पूरे परिवार के लिए अनुकूल है।

कालगणना के अनुसार श्रेष्ठ महेन्द्र काल भी इसी समय होने से आयेश, धनेश, लाभेश, भाग्येश सभी का आपसी सम्बन्ध अनुकूल होने से अत्यन्त दुलभ लाभदायक सहयोग बना है। सीभास्यशाली साधक निश्चित रूप से सिंह लग्न में महात्मकमी पूजन, अनुष्ठान इत्यादि सम्पन्न कर आने वाले समय को सुखी और समृद्ध बनायें।



गुरु परिवार और परम वन्दनीय माताजी की ओर से दीपावली के शुभ अवसर पर आशीर्वाद

दीपावली गहालक्ष्मी पूजा

३५
दीपा-
वली
नाव
मन।
का
ला
रक
मेष
जो
सी
का
प्रक
संह
ाने

दीपावली के अवसर पर जो केवल महालक्ष्मी से सम्बन्धित माना गया है, उस कालरात्रि के अवसर पर हम गणपति और लक्ष्मी दोनों के समन्वित पूजन विधान को प्रस्तुत कर रहे हैं। कालरात्रि ही एक ऐसा अवसर होता है, जिसे व्यक्ति अपने समस्त भौतिक कार्यों के लिए शुभ तथा आरम्भ का काल मानता है। अपने धन-धान्य सम्पत्ति आदि के लिए इसे शुभ समय मानता है। जब यह अण उनके लिए नव वर्षारम्भ के प्रतीक रूप में है, तो सम्भवतः इसी कारण कि महागणपति एवं महालक्ष्मी के संयुक्त रूप का पूजन कर, पूरे वर्ष को सफलता पूर्वक प्रत्येक प्रकार से धन-धान्य युक्त करें और महागणपति उसे समस्त बाधा ओं पर विजय दिलाएं उसके समक्ष आने वाली कठिनाइयों को समाप्त कर समस्त सुखों को प्रदान करें।

इस कालरात्रि के अवसर पर जो अद्वितीय दुर्लभ क्षण उपस्थित हो रहे हैं, उन क्षणों में विशेष मंत्रो द्वारा पूजन सम्पन्न करें तो निश्चय ही साधक में श्रेष्ठता आती है, वह अद्वितीय सम्पन्नता प्राप्त करता है और निश्चय ही वह महागणपति और महालक्ष्मी को अपने मनुकूल बना लेता है। साधक के लिए आध्यात्मिक पक्ष महत्वपूर्ण ही ही, उतना ही भौतिक पक्ष भी। भौतिक पक्ष की पूर्णता किए विग्रह वह साधना में पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता।

पूजन सामग्री — रोली(कुंकुम), मीली, अगरबत्ती, केशर, कपूर, सिन्दूर, पान, सुपारी, फल, पूष्प तथा प्रस्त्रमाला, गंगाजल, लौंग, इलायची, पचामृत, वज्रोपकीत, वर्त, नैवेद्य (मिठाई), दीपक, रई, माचिस, नारियल, आलून, पंचपात्र।

सर्वप्रथम आप स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण करें

तथा उत्तर दिशा की ओर मुह कर पीले आसन पर बैठें, सामने बाजोट पर पीला कपड़ा बिछा लें एवं एक धाली में कुंकुम से अष्टवल कमल बनाकर उसे बाजोट पर रख कर उसमें 'महालक्ष्मी वंत्र' को स्थापित करें। यंत्र के पूर्व में 'महागणपति विग्रह' पश्चिम में 'नवग्रह गुटिका' उत्तर दिशा में 'लक्ष्मी मंत्र आपूरित गोमती चक्र' दक्षिण दिशा में 'लक्ष्मी वरवरद' को स्थापित करें तथा कमल गङ्गा माला को यंत्र के ऊपर रख दें। यंत्र के मध्य में 'ॐ धनवाये नमः' मंत्र पांच बार बोल कर अष्टग्रह से पांच बिन्दियां लगावें, फिर अपने मस्तक पर तिनक करें। इसके बाद निम्न प्रकार से पूजन क्रम प्रारम्भ करें—

पवित्रीकरण

बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वादिस्थां जतोऽपि वा ।

थः स्मरेत पुण्डरीकादां एव वरहाम्बन्धनतः शुचिः ॥

संकल्प

दाहिने हाथ में जल ले ले, उसमें अमृत और पुष्प मिला ले, फिर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें—

ॐ विष्णु विष्णु विष्णुः श्री सद्भगवती महावृषभस्त्र विष्णोरेचज्ञाया प्रयर्तसानस्य अथ श्री ब्रह्मणो द्वितीय पराद्देव व्येत्याचाहुकल्पे वैवस्वतमन्यन्तरे जग्यन्तुर्ये भरतवर्षे अस्मिन् पवित्र क्षेत्रे अमुक दासरे (दिक् का नाम है) अमुक जोत्रोत्पज्जोऽहं (उपज्जर जोत्र बोलें) अमुक शमर्त्तं (अपज्जर नाम बोलें) वथा मिलितोपचारे। श्री महालक्ष्मी श्रीत्वर्ये तदन्तर्वेन गणयति पूजनं च करिष्ये।

फिर जल को निमालिय पात्र में छोड़ दें।

कलश दृष्टापन

इसके बाद कलश को जल से भर दें और अपनी बाईं ओर रखें। उसमें मीली बांधे। उसमें गंध, अक्षत, पुष्प ढालकर, मीली बोध कर नारियल रख दें। कुकुम, अक्षत तथा पुष्प चढ़ावें। धूप, दीप से पूजन करे प्रार्थना करें—

गंगे च व्युत्ते चेव जोदावरी सरस्वति ।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सद्भिर्द्यु कुरु ।

पूर्वे अर्घये दाव नमः ।

दक्षिणे जवुर्वेदाव नमः ।

पश्चिमे सामवेदाव नमः ।

उत्तरे अर्थवेदाव नमः ।

कलशमध्ये अपास्पतये वरुणाव नमः ।

प्रसवारे भव वरवारे भव ।

अजया पूजया वरुणापर्वाहिता देवता ।

प्रीयन्तरा त्र नमः ।

* गणपति पूजन *

ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर भगवान गणपति का ध्यान करें
अ॒ जग्नाज्ञा॑ त्वा॒ जग्नपति॑ (अ॑) हवामहे
प्रिथाणा॑ त्वा॒ प्रिथपति॑ (अ॑) हवामहे वस्ते॑ मम ।
आहमज्ञानि॑ जर्भधना॑ त्वमज्ञानि॑ जर्भधम ।
अ॒ यं जग्नपतये॑ नमः । व्याजं॑ समर्पयामि॑ नमः ।
तत्रादौ पुष्पान्तरं॑ समर्पयामि॑ नमः ।
— एक पुष्प बांधे पर रखें।

पाठ्य अर्थ समर्पयामि॑ नमः ।

— तीन आचमनी जल गणपति पर चढ़ावें।

— पंचमूत स्नान धूप, दही, वीं, शहद और शक्कर फिलाकर म्लान करवें—

पञ्च नद्यः सरस्वती मपिवन्ति सस्त्रोतसः ।

सरस्वती तु पञ्चन्द्या सोऽदेशोऽभवत् सरिति ।

इसके बाद महागणपति विश्व को शुद्ध जल से म्लान कराके पौछ ले और किसी दूसरी शाली में कुकुम से स्वस्त्रिक बनाकर मण्डित करें।

इसके बाद वस्त्र समर्पित करते हुए कुकुम, केशर या छन्दूल से तिलक लगावें, अक्षत, पुष्प चढ़ावें तथा धूप, दीप विशुकर नेवेद्य, फल तथा तामकूल चढाकर प्रार्थना करें—

नमस्ते ब्रह्मस्याय विश्वास्याय ते नमः ।

नमस्ते लटक्याय करिष्याय ते नमः ॥

विश्वस्य परस्यस्य पराय नमस्ते ब्रह्मस्याय ते नमः ।

भक्तप्रियाव देवाव नमस्तुम्य विश्वायक ॥

॥ उमे गं जग्नपतये नमः ॥

निर्विष्वमस्तु / निर्विष्वमस्तु / निर्विष्वमस्तु । उमे तद्

नद्यब्रह्मार्यणमस्तु ।

अजेन कृत पूजनेत लिद्वि दुष्टि लहितः ।

श्री भगवान जग्नाधिपति॑ प्रीवल्लाम् ।

एक आचमनी जल निर्माल्य पात्र में ढोड़ दें।

इसके पश्चात पंचोपवार शुरू पूजन सम्पन्न करें, गुरु चित्र पर सुगन्धित पुष्प माला अर्पित करें।

* महालक्ष्मी पूजन *

नामने चौकी पर धार्जा में महालक्ष्मी बंत्र जो इन्द्रिय किया गया है उस पर शांत, प्रसन्न चित्त होकर पूजन आरम्भ करें—

ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें—

पदमालना॑ पदमकरां॑ पदममाला॑ विभूषिता॑,
क्षीर साजरसंभूतां॑ हेमवर्ण समप्रभा॑,
क्षीरवर्ण समं परत्रं वधानां॑ हरिवल्लभा॑,
भावने भक्तियोजेत भार्जवी॑ कमलां शुभाम् ॥
श्री महालक्ष्म्य॑ नमः । व्याजं॑ समर्पयामि॑ ।

आवाहन

दोनों हाथों में थोड़े पुष्प ले—

सर्वमंजस मांजल्ये विष्णु वक्षः स्थवात्ये ।
आवाहयामि वेदि। त्वां क्षीरसाजर संभवे ॥
श्री महालक्ष्म्य॑ नमः । आवाहन समर्पयामि॑ ।

आज्ञान

याली पर पुष्प आसन के लिए रखें—

सदा सर्वत्र स्वस्थाने स्वर्यधारे महेश्वरि ।
सर्व तत्परय दिव्यं आसने प्रतिज्युहयताम् ॥
श्री महालक्ष्म्य॑ नमः । पुष्पासनं समर्पयामि॑ ।

पाठ्य

वो आचमनी जल चरण धोने के लिए चढ़ावें—

पादमाद्यवै वेदावे वेदवादिभिः ।
तुम्हें दारव्यामि पवसादिः सुगन्धित निर्मलं जल ॥
श्री महालक्ष्म्य॑ नमः । पाठ्य समर्पयामि॑ ।

अर्थ

तीन आचमनी जल हस्त प्रकालन के लिए चढ़ावें –
अथहीने गृहणेदम् अर्थमहार्य सवुतं।
अम्बाचिवसानां प्रणताम् अम्बुजासज्ज संस्थितां॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः अर्थं समर्पयामि।

आचमन

मुख प्रकालन के लिए तीन आचमनी जल चढ़ावें –
जगतोद्य समाकृतं सुवर्णकलसे स्थितं।
उत्तमयत्वं महाभाजे। भवाति भवभासिति॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नान

स्नान के लिए महालक्ष्मी यंत्र पर जल चढ़ावें –
साध्वीकामज्जतो गण्डे साधुसंध नमाजते।
सर्वं तीर्थस्यं तोद्य स्नानार्थं प्रतिजुहवत्ताम्॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पंचामृत रुक्मि

दूध, दही, ची, शहद और चीनी मिलाकर स्नान करावें –

पंचामृतं शक्तरायुक्तं वधिक्षोरसमन्वितं।
पंचामृतं गृहणेदं स्नानार्थं जगदमिति॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल रुक्मि

तन्मरवात शुद्ध गन से स्नान करावें –
परमालन्द धोधास्ति लिमजल निजमर्तवे।
शुद्धोवके स्तव स्नानं कास्पदामि महेश्वरि॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः शुद्ध जल स्नानं समर्पयामि।
इनके बाद महालक्ष्मी यंत्र को किसी घट्टते तीलिये से पोछ कर किसी दूनगी धानी में व्यस्तिक बनाकर स्थानित कर दें।

बद्ध

बन्न चढ़ावें यदि बन्न न हो तो मैली चढ़ावें –
दुकृतं द्वितयं चित्यं कंचुकं च मलोडरं।
देवि! त्वं च गृहणेदं सर्वं नौभाज्यदावकम्॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।

गङ्गा

कुंकुम, केशर या चन्दन का तिलक लगावें –
कृष्णराजरु कस्तुरी कुंकुमादि सासन्दितं।
गङ्गं बदाम्यहं देवि! सर्वमंजलदायिनि॥

श्री महालक्ष्मये ज्ञमः जगतं समर्पयामि।
अक्षत

बिना दूटे हुए चावन चढ़ावें –
अक्षताज धवताज देवि! शालीवां स्नानहुसानशुभाज।
हरिद्राकुं कुमोपेताज गृहण करणार्णवे॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः अक्षताज समर्पयामि।

पुष्प

विविध पुष्प एवं पुष्प हार पहनावें –
पदम शंख जपा कुसुमे, पारिजातेऽच चंपके।
पूजयामि प्रसीद त्वं पवसाक्षि! भुवनेश्वरि॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः पुष्पाणि समर्पयामि॥

धूप

सुगन्धित धूप, उग्रवती लगावें –
धूपं ददामि ते रथं जुग्जुत्वाजस्मिद्वित।
महागोदं महादेवि भक्ताजामिष्ठ दायिनि॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः धूपम् आद्रापदामि।

दीप

तेल या धी का दीपक जलावें –
आच्यवति समायुक्तं ज्वोतिर्मव शुभंकरं।
मंगलाचतुर्णं दीपं गृहण परमेश्वरि॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः दीपं दर्शयामि।

लेदृ

कोई मिठाई जो शुद्ध हो मीठ लगावें –
जाजाविधानि मक्ष्याणि व्यञ्जनानि हरिपिते।
यथेष्टं भुद्देव लेदृष्टं पद्मसं च चतुर्विधम्॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः लेदृष्टं लिदृष्टदवामि।
तत्प्रचात निम्न मंडोच्चारण करते हुए तीन आचमनी जल निर्माण्य पात्र में डालें –

ॐ प्रणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा।
ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा।
लेदृष्टदवान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

फल

कोई भी फल जो मीसम के अनुकूल हो चढ़ावें –
इवं फल मथा देवि! स्थापितं पुरतस्तव।
तेज मे सकला वापि! गृहण जगदमिके॥
श्री महालक्ष्मये ज्ञमः कसानि समर्पयामि।

ताम्बूल

लींग, हलायदी, आदि मिलाकर पान समर्पित करें
पूजा करने महादिव्यं नारजवलसी दलेषुर्तं ।
एताचूणर्ति लंबुक्ते ताम्बूलं प्रतिगृहयताम् ॥
श्री महालक्ष्मी जमः ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा

यथा योग्य दक्षिणा समर्पित करें—
हिरण्यजर्म जर्मस्थं हेमवीजं विभावसोः ।
अलन्तपुण्यफलसं असः शान्तिं कुरुत्य मे ॥
श्री महालक्ष्मी जमः दक्षिणा द्रष्ट्वं समर्पयामि ।

नीराजन (आरती)

शुद्ध धी की बसी बना ले तथा श्रद्धापूर्वक आरती करें
ॐ न तत्र स्यायोभाति न चन्द्रतारके
लेभा विद्युते भान्ति कतोऽयमजितः ।
तमेव भ्रान्तं अनुभाति सर्वं
तस्यभासा सर्वं मिदं विभाति
श्री महालक्ष्मी जमः नीराजनं समर्पयामि ।

जल आरती

तीन बार आचमनी से जल लेकर ढीप के चारों ओर
बुमाकर निमलिय पात्र में छोड़ दें—
ॐ धौः शान्तिरन्तरिक्ष (जू.)
शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः

शान्तिः लोकधृत्यः शान्तिः ।
वनस्पतवः शान्तिं विश्वे देवाः शान्तिः
ब्रह्म शान्तिः सर्वं (जू) शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सर्वा मा शान्तिरेति ।

पूष्पाञ्जलि

बोनो हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें
तथा भगवती पर चढ़ा दें—
ज्ञाना सुजर्वं पुष्पाणि वथा कालोदभवति च ।
पुष्पाञ्जलिर्मर्या दत्ता गृहाण जगद्विके ॥
श्री महालक्ष्मी जमः पुष्पांजलि समर्पयामि ।

प्रणामाञ्जलि

बोनो हाथ जोड़कर प्रार्थना एवं प्रणाम करें—
तमो देवये महावैद्ये शिवाये सततं जमः ।
जमः प्रकृत्ये भद्राये लियताः प्रणताः सम तः ॥
श्री महालक्ष्मी जमः जमरकरोमि ।

स्त्रमर्पण

पूजन फल की प्राप्ति हेतु निम्न मंत्रोच्चारण करें—
ॐ तत्सत्त्वापायणमस्तु अमेव कृतेव पूजाराधर्मकर्मणा
श्री महालक्ष्मी देवता परास्त्रवित स्वरूपिणी प्रीत्यन्ताम् ।
एक आचमनी जल पूजा की पूर्णता हेतु छोड़ दें।
साधना कीसारी सामग्री कार्तिक पूर्णिमा तक अपने पूजा स्थान
में ही स्थापित रखें।

साधना सामग्री प्रेक्षा — 390/-

* महालक्ष्मी जी की आरती *

ॐ जय लक्ष्मी माता, भैया जल लक्ष्मी माता ।
तुमको निसि बिन सेवत, हर विष्णु धाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी . . .
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता ।
सूर्य अन्नमा ध्यावत, नारद कवि गाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी . . .
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता ।
जो कोई तुमको ध्याता, रिधि सिधि धन पाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी . . .
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही सुभ दाता ।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भव निधि की नाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी . . .

जिस घर तुम रहती तह, सद सदगुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहि बबराता ॥
ॐ जय लक्ष्मी . . .
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान पान का वेगव सब तुमसे आता ॥
ॐ जय लक्ष्मी . . .
शश गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहि पाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी . . .
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उत्तर जाता ॥
ॐ जय लक्ष्मी . . .

साधक साक्षी हैं

गुरु कृपा से एकसीडेन्ट में बची

सर्वप्रथम मैं आपको कोटि-कोटि प्रणाम करती हूँ। यह घटना '9 जुलाई की है, मैं छुट्टी होते ही सीधे कालेज से घर आ रही थी। हमारा घर कालेज से २ किलोमीटर की दूरी पर था। मैं रोज ही मेनरोड से होकर ही आती थी। लेकिन उस दिन शायद मेरी शब्दशा ही होगी। मैं जैसे ही सड़क पार कर रही थी, तभी अचानक रक्कूटर से मेरा एकसीडेन्ट हो गया। सच मानिए की मैं स्कूटर के पीछे टायर के नीचे आ गई। उस वक्त तो मुझे कुछ भी पता नहीं चला, मैं जाएँ मुझे हुए गुरुदेव-गुरुदेव पुकार रही थी। मैंने सोचा की कहाँ मेरे पांच की हड्डी टूट गई होगी, लेकिन नब मैंने आँखें खोली तो देखा कि मुझे गुरु कृपा से जरा भी चोट लगना नहीं दूर एक खुराच तक भी नहीं आई थी। मैं बिल्कुल गुरुकृपा ने ठीक की। यही लोग हैरान थे कि इन लड़कों को जरा भी चोट नहीं आई। लेकिन मुझे नो अपने परम पूज्य गुरुदेव पर पूरी आश्चर्य थी।

निनके आशीर्वाद से मैं रक्कूटर के नीचे आने पर भी बच गई।

हे परमपिता परमात्मा हे सद्गुरुदेव आपके शीज चरणों में मेरा कोटि-कोटि प्रणाम!

हे गुरुदेव आपके शीश चरणों की भक्ति का श्रेय हमें जन्मो-जन्मान्तर तक प्राप्त हो। और आपका आशीर्वाद सदा हमारे साथ रहे।

— अंजु कवयप, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश



हे गुरुदेव निस दिन से आपके चरण कमल हमारे घर में पढ़े हैं, उस दिन से एक अनाकृतिनिय शानिपुंज वातावरण घर में व्याप्त हो गया है।

पूज्यनिय शिव स्वरूप में गुरुदेव जी से मिलने से पूर्व हमारे जीवन में एक अनजानी तृष्णा, चिन्ता, निराशा व्याप्त थी, जीवन एक मृगमरियिका की तरह अनजानी मृगतृष्णा में डुबा हुआ रहता था, हर तरफ अंधकारमय वातावरण व्याप्त था।

किन्तु अब जीवन असिमित शांति असंख्य आशाओं और आनंद से परिपूर्ण है। हमारे महागुरुदेव जी से यही प्रार्थना और आशीर्वाद चाहती है, कि इस जन्म से भी परे स्वैच्छ गुरुदेव जी का आशीर्वाद हमारे साथ रहे। सदैव हमें अनजान, अबोध बालक समझकर हमारी गलतियों को क्षमा कर हमें आत्मउत्थान में अग्रसर करें, प्रेरित करें।

— सी. भारती गवालपंची गंजवाड़, चंगपुर

गुरुदेव के स्तम्भ में दर्शन हुए

मैं व्यवसाय से एक पेन्टर हूँ, वर्षा के कारण कई दिनों से काम भी नहीं चल रहा था। पत्नी की तबीयत काफी समय से खराब ही चल रही थी। थोड़ा बहुत जो पैसा बचा कर रखा था, वह भी दवाई आदि में खर्च हो गया। दया का कुछ असर नहीं हो रहा था मैं एक दम निराश हो गया समझ में नहीं आ रहा था क्या करें, जन्म में एक ही बात समझ में आई गुरु समर्पण और राज की तरह गुरु पूजन, मंत्र जाप, आदि के पश्चात पत्नी की बीमारी के सम्बन्ध में मन ही मन गुरु जी से लिखेदम किया। दूसरे दिन प्रातः मेरी पांच वर्ष की लड़की ने



गुरुदेव के दरण से मन में शांति

हमको यह बताया कि रात में पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी संन्यासी रूप में आये सबको दर्शन दिए। पर्ली के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया यह मारी बात सुनकर हम सबकी आखों में आँसु बहने लगे। पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से पल्ली की लकड़ी उकड़म ठीक हो गई गुरुजी को पूरे परिवार के साथ कोटि-कोटि प्रणाम इसी तरह से गुरु आशीर्वाद मिलना रहे यही आकांक्षा है।

— रामजतन सहायी, जिला, जलगांव, (महाराष्ट्र)

गुरु कृपा से प्राणों की उक्ति

सबसे पहले गुरुदेव के चरणों में मेरा प्रणाम दह घटना दीपावली की है मेरी माँ जोधपुर शिविर में गई थी घर में मेरा भाई, बहन खाना बना रहे थे, ऐसी टंकी से गैस निकलने लगी और एक दम गैस की टंकी में आग लग गई। आग की नपटे छत को ढू गई, मैंने पानी ढाला पर कम नहीं हुई, एक मिनट के लिए कम पहुँची और वापिस लग जाती। मैं रोने जीता हो नया पांच मिनट तक गुरु मंत्र जन करता रहा, मुझे गुरु जी पर पूरा भरोसा था, तभी हमारे पड़ोस में से एक आदमी जो अपने कारखाने में गया था और वो कर्म-कर्मी हमारे यहाँ हो कर घर जाता लेकिन उस दिन वो घर से कारखाने में गया और जाते ही वापिस आ गया और उसने आब बेखा न ताब बोरी ली और टंकी पर २-४ बार जोड़ से मारी आग बुझ गई, भगव उस दिन २ मिनट भी लगती तो टंकी फट जाती लेकिन उस दिन टंकी इस मिनट तक लगी रही तो भी नहीं कठी। गुरुदेव की कृपा है कि उन्होंने हमे बताया। गुरुदेव आपकी सबके ऊपर ऐसी ही कृपा बने रहे।

— गणेश मेनरिया, कानपुर

सदगुरुल्देव की असीम कृपा से संतान प्राप्ति

पूज्य प्रातः स्नानणीय प्रेम स्वरूप गुरुदेव मेरा प्रणाम स्वीकार करे।

पत्र निखने का कारण यह है कि मेरे परिवार में आपकी असीम कृपा से अनहोनी नथा आनन्ददायक घटना घटी है।

गुरुदेव मेरी बहन शुभांगी की शादी हुये, पांच वर्ष बित गये हैं। डॉक्टरों ने कहा था उसे सन्तान नहीं हो सकती कारण गर्भाशय की दोनों निश्चय बंद हो चुकी हैं। अतः आप बोहु अच्छा गोढ़ ले लें।

हम सब निराश हो चुके थे, इसके बाद मैंने मेरे बहन,

जमाई जी तथा सम्पूर्ण परिवर्त सहित बद्यपुरी शिविर में घाग लिया था।

गुरुदेव हमने अपनी कहानी आपको सुनायी, और सुनने के बाद बहन को धोरज बधाते हुए आपने कहा था, वह शश्वत जाज भी मुझे दाव है।

डॉक्टर क्रया कहता है। उसे समझता ही क्या है? उसे कुछ भी नहीं समझता मैं जैसा कहता हूँ वैसा करो। इसके बाद उन्होंने आप से बैक्षण ले ली।

दीक्षा के प्रभाव में ही आज बहन को लड़की के रूप में आपका कृपा आशीर्वाद प्राप्त हो चुका है। मां और बच्ची पूर्णतः स्वस्थ हैं।

आप ने हमें जो खुशी प्रदान की है उसके लिए हम सब आपके क्रांति हैं। धन्यवाद शब्द तो बहुत ही छोटा पड़ेगा। इसके बदले मैं हम सब खुशी के प्रेम के आँसु आपको भेंट करते हैं। ऐसी ही कृपा आप हमारे सभी गुरु भाई बहनों पर बनाए रखें।

— ज्ञानेश पाटील, खिस्ती, जिला, शबतमानन, महाराष्ट्र

गुरुकृपा से मकान रक्खातो हुआ

गुरुदेव आपकी कृपा से मेरा मकान लगभग १४ या १५ साल से किरायेदार नहीं खाली कर रहा था, मैंने गुरुदेव जी की प्रतिमा का बूजन, गुरु मंत्र का जप एवं गुरुधार्म से सर्वत्र विजय गुटिका एवं शत्रुनाशक यंत्र बगवाकर स्थापित करके जो पूजन किया तो २ साल के अन्दर ही मुझे गुरुदेव जी की कृपा से मकान में कश्चा मिल गया।

मुझे तो परम पूज्य गुरुदेव के पूजन का तरीका भी नहीं मालूम है। फिर भी गुरुदेव जी की कृपा ये जो मुझे मकान में कश्चा मिला हमको उम्मीद किसी को भी नहीं थी। यह सभी कार्य आपकी कृपा से ही हुआ है। ऐसी कृपा सभी जीज्ञाओं को भी प्रदान करे।

— भुवेश दीक्षित, तलेया धूरन, शाहजहांपुर

मेरा कर्तीब २५ वर्षी पुराना कल्ज, काचाकर पुरिका एवं विष्णु तेजस कंकण धारण करने के उपरोक्त जट्टूल से ठीक हो गया है। शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रगाढ़ हो गया है।

पहले विलानी भी दवा खाली, लगातार एक नहीं से कल्ज ठीक नहीं रहा है, किन्तु अब पेट के मामले में भिजित रहता है। मेरे विचार में यदि नमय रडने देवताओं और देवीय यंत्रों और साधना के माध्यम से सभी बीमारों ठीक हो सकता है।

— आनंद धैरव, पटना, बिहार

4

स्वेश्वर का मृत्युजीवन क्षणी साधना

लक्ष्मी का वह श्रेष्ठतम् रूप जो सौभाग्य और लाभ के रस से सिचिंत है जिनके ध्यान मात्र से चेहरे पर ओज और मन में रस संचार होने लगता है। निराशा के काले अंधकार को चीर कर आशा और उमंग की घनधौर वर्षा कर देने वाली है, रसेश्वर कनकप्रभा लक्ष्मी साधना -

साधना का एक रहस्य यह है कि इसमें अचानक छलांग मारकर बड़ी उपलब्धि अर्जित करने की जपेक्षा यदि नव्य स्वरूपों और शीघ्र प्रकट होने वाले स्वरूप की साधना व आराधना करे तो जीवन में शीघ्र ही समस्त सफलताएं और अनुकूल स्थितियाँ निर्मित होने की वशा निर्मित हो जाती है। ठीक यही बात भगवती महालक्ष्मी के स्वरूप के साथ भी है साधना के प्रथम चरण में ही भगवती महालक्ष्मी का साक्षात् दर्शन पाना या उनके द्वारा मनोवैष्णित वर प्राप्त कर लेना साधन के लिए संभव नहीं है, इसकी अपेक्षा यदि वह देवी के किसी विशिष्ट स्वरूप की साधना करता है तो अपने भौतिक जीवन की कामनाएं तो शीघ्रता से पूर्ण करता ही है, साथ ही साथ साधनात्मक दृष्टि से भी कुछ पन और आगे बढ़ जाता है।

प्रस्तुत साधना एक ऐसी ही साधना है। समय-समय पर युग दृष्टि क्षियों और मेत्र-सूष्टि चिन्तकों ने एक ही साधना के जो विशिष्ट रूप दृढ़, उन्हें उपनो अनुभूति के आधार पर अलग-अलग नामों से संबोधित किया और यह उनके प्राणों का बल होता है कि मंत्रों के प्रभाव से देवी का बड़ी स्वरूप गठित कर उन्हें उपस्थित होने के लिए विवश कर देते हैं। कनकप्रभा साधना ऐसी ही मंत्रोक्त साधना है जहां पर प्रश्वर ऋषि और युग्मदृष्टि महर्षि याज्ञवल्क्य ने महालक्ष्मी को कनक प्रभा रूप से उपस्थित होने की एक विशिष्ट पञ्चति हृद निकाली।

एक युग पूर्व युग पुरुष आद्यशंकराचार्य जी ने जिस प्रकार से एक धनदीन विप्र की दरिद्रता से व्युत्थित होकर

साधु का तात्पर्य है जो जीवन में साधना कर सके, जो साधना कर सकता है यह अपने जीवन में नीरस नहीं रह सकता, उसका हृदय तो सद्वै नवरस भावों से भरा ही रहता है। भावों से भरे हृदय के साथ जीवन जीना एक आगन्तुक प्रद्वयात्रा है। लक्ष्मी तो साधना से प्राप्त अवश्य होती है। लेकिन भाव रस जाग्रत हो, प्रेम और उमंग जीवन में हर समय बनी रहे एक रस का सामर लहराता रहे तो व्यक्ति पा जाता है भगवान् शिव का रसेश्वर रूप

भगवती महालक्ष्मी का आवाहन कनकधारा रूप में किया था और देवी से प्रार्थना की थी कि वे अपने नाम के ही अनुकूल अपने प्रभाव से स्वर्ण की धारा जैसी समृद्धता प्रवाहित कर दें, ठीक उसी क्रम में उससे भी अधिक प्राचीन और सरल पञ्चति से रची गयी साधना है . . . कनकप्रभा साधना और तथ्य तो यह है कि इसी साधना के आधार पर कनकधारा देवी का

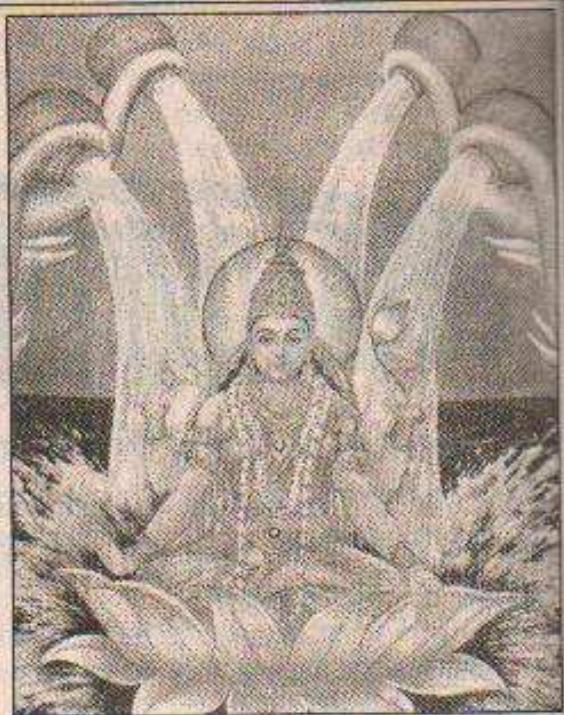
जागे के ती
माना गया।
किया जा
अवश्य है।
साधक इस
ब्रह्मचर्य से
और वूसरे
करें और त
कोई बंधन
यथावत् जी
पर जा सक
लिए जो तु

साधन

यह साधन
साक हो, और
एक प्र
पुष्प से क
३५ अ
महार
सुसुच
तरम्भ
धृष्णि
द्वादश
विश्वा
संज्ञा

केशर अथ
आसन चि
शुक्षि करें

३६ उ
पुण्ड्र
३७ उ
स्त्रीह



चित्तन भगवत्प्राव ने अपने प्रसिद्ध स्तोत्र में किया है। ग्राहीन कनक प्रभा ही उनके द्वारा कनक धारा रूप में विख्यात हुई।

देवी के उस स्वरूप को कनकधारा कहें अथवा कनकप्रभा का सम्बोधन दें तात्पर्य केवल एक ही है कि यह मैं और सन्यासी हो तो उसके आश्रम में धन का ऐसा प्रवाह आरम्भ हो जाए जो स्वर्णवर्षा जैसा हो क्योंकि धन की प्रचुरता से ही संग्रह है जीवन में प्रसन्नता का आगमन। धन केवल आवश्यकता अनुसार ही उपलब्ध होना जीवन की श्रेष्ठता नहीं है। धन का वास्तविक आनन्द यह है कि धन आवश्यकता से कहीं अधिक उपलब्ध हो, जिससे वर्तमान की सभी समस्याएं सुलझे हीं, मात्री समय के लिए हमारे मन में कोई आशंका या चिंता न रहे, क्योंकि जहाँ कल की चिंता है वहाँ निश्चिन्तना नहीं और जहाँ निश्चिन्तना नहीं वहाँ फिर कोई व्रेष्ठ धार्मिक या आध्यात्मिक चिंतन नहीं। नित्य प्रति की वरिद्रता धीर-धीरे व्यक्ति के अन्दर घुलती हुई उसके मन प्राण, आत्मा तक को दरिद्र हीन और पतित बना देती है। जीवन की इन्हीं स्थितियों को समाप्त करने की साधना है — कनकप्रभा।

भगवती महालक्ष्मी के साक्षात् उपस्थित होने का अर्थ यही होता है कि हमारे जीवन में मधुरता का आरम्भ हो, पीरुष और क्षमता का अतिरिक्त प्रभाव हो और यही लक्षण जीवन में आते हैं किसी साधना के माध्यम से या, किसी देविक शक्ति शरीर में समाहित हो जाने से। और फिर कनक प्रभा . . . तो साक्षात् उपस्थित हो जाने वाला स्वरूप है। अपने चेतन्य स्वरूप से साधक को आश्वस्त कर देने वाला स्वरूप है, जिससे साधक के मन में कोई छंड न रहे और वह निश्चिन्त होकर साधना के मार्ग पर तेजी से गतिशील हो सके।

देवी कनकप्रभा के ध्यान और स्वरूप का वर्णन करते हुए ऋषि ने कहा है — पदम की मंड आभा के समान वस्त्र धारण किये हुए विशाल चाकुओं देवी जिनकी पलकें उधमुदी जिनके नद्यनों के छोर कणों को स्पर्श करते हुए प्रतीत होते हैं ऐसी सधन केवल मुक्ता, सुगच्छित केश युक्ता, पदमगन्धा, समधुर गंध से समस्त वातावरण को आप्लावित करती हुई देवी कनक प्रभा अपने गरीर पर धारण किये हुए विविध स्वर्णभूषणों से वातावरण को जिस प्रकार शोभायामान कर रही है और जिनकी स्वर्णिम आभा से दुक्त मुख श्री को देखते ही चित्त उनके चरणों में स्वतः नल हो जाता है उन देवी कनक प्रभा के चरणों में मेरा मनस्तक सदा ही अवनत रहे। देवी के उपरोक्त कनक प्रभा

स्वरूप की ध्यान और स्तुति से स्पष्ट होता है कि वास्तव में कनक प्रभा भगवती महालक्ष्मी का ही स्वर्णिम और वरदायक स्वरूप है, ऐसे वरदायक स्वरूप की आधरणा करने की अपेक्षा किसी अन्य स्वरूप की आराधना फिर कहाँ तक तर्क सम्मत और बुद्धिमत्ता पूर्ण होगी। आगे हस्ती ध्यान में वर्णित है कि कनक प्रभा देवी के दोनों हाथों में से एक वर मुद्रा एवं दूसरा अभय मुद्रा में अवस्थित है, जिससे स्पष्ट होता है कि उनका यह स्वरूप पूर्ण रूप से अनुग्रहकारी है।

कनक प्रभा देवी तो मूलतः रस सिद्ध शोणियों की पारद विज्ञानियों की आराध्या रही है क्योंकि इन्हीं की साधना पद्मनितियों में छिपा है स्वर्ण निर्माण का रहस्य। स्वर्ण निर्माण जहाँ पारद विज्ञान के माध्यम से संभव है, जहाँ रसायन के माध्यम से संभव है, वहीं मात्रोक्त पद्मनि से भी पूर्ण रूप से संभव है, और कहते हैं इस साधना में भक्तिलता मिलने पर देवी कनक प्रभा के इसी मंत्र में निहित वह गुप्त किला भी प्राप्त हो जाता है जिसके द्वारा केवल नांबे को ही नहीं बरन अन्य सस्ती धानुओं को भी स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

यह तीस दिनों की साधना है और मात्रोक्त साधना होने के कारण अपने मर्म में, अपने आधार में, श्रद्धा विश्वास और भक्ति की अपेक्षा प्रबलता से सिद्ध होती है यह साधन।

यदि कार्तिक माह के किसी भी दिन से प्रारम्भ कर जाएं के तीस दिनों तक नियमित रूप से की जाय तो श्रेष्ठतम् माना गया है अन्यथा किसी भी माह के शुक्ल पंचमी से प्रारम्भ किया जा सकता है, इसमें कोई दोष नहीं, यह साधना लम्बी अवधि है किन्तु जटिल नहीं। महत्व केवल इस बात का है कि साधक इस महत्व पूरे एक माह में श्रद्धा पूर्वक सरलता और ब्रह्मचर्य से जीवन यापन करें, केवल एक समय ही भोजन करें और दूसरे समय फलाहार अथवा दुग्धाहार लें, भूमि शयन करें और और तामसिक विचारों से सर्वथा परे रहे। इसके अतिरिक्त कोई बंधन नहीं है। साधक अपने नित्य प्रति के जीवन को यथावत जी सकता है, व्यवसाय का कार्य कर सकता है, नौकरी पर जा सकता है, यात्राएं कर सकता है तथा भौतिक जीवन के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसे करने में कोई दोष नहीं।

साधना विधान

मंगल, शनि एवं रविवार को छोड़कर जिस दिन भी वह साधना प्रारम्भ करें उस दिन साधना कक्ष स्वच्छ और साफ हो, श्वेत आसन अथवा लाल रंग का ऊनी आसन बिछाएं और एक पात्र में गणपति विश्रह रख उनका पूजन केशर, अक्षत, पुष्प से करें। स्वस्ति पाठ करें—

ॐ श्री गणपतये नमः प्रद्विसिद्धि सहितं सम शृङ्गे
महागणपतिं आवाहनं जगर्यथामि।
सुमुखश्चैक दन्तश्चत कवित्सो वज्रकर्णक,
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विज्ञायक।
धूमके तुर्जणाद्यक्षो भालचन्द्रो जगनन्द,
द्वादशैतानि नामानि च पठेच्छणुवादपि।
विद्वारम्भे विवाहे च प्रदेशे लिङ्मे तथा,
संज्ञामें संकटे चेत विघ्नस्त्रश्च च जायते।

इसके उपरान्त भूमि पर त्रिकोण बना कर (जो आप केशर अथवा अष्टग्रन्थ से बना सकते हैं) इसके ऊपर शवते आसन बिछायें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए आन्तरिक और बाह्य शुद्धि करें—

ॐ अरविंश्च विवित्रो व सर्वास्थां पतोऽपि च च च स्मरेत
पुण्डरीकाक्षं स वाहाम्याशतं शुचिः।

तत्पश्चात् मुख शुचि—

ॐ अमृतोपस्तरणमपि स्वाहा, ॐ अमृतोपिधानामस्ति
स्वाहा, ॐ सत्यं वशः श्रीमर्ति श्रीभवतां स्वाहा।

(पढ़ते हुए तीन बार जल मुँह में डालें)

पृथ्वी पर हाथ रखकर आसन शोधन करें—

ॐ पृथ्वीत्यथा वृत्ता सोकांदेवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च वारव मा देवो यवित्रं कुल चास्तन्म्॥

अब मूल साधना में प्रवृत्त हों। भगवती महालक्ष्मी का 'कलक विष्णी यत्र' स्थापित करें और प्रार्थना करें कि— मैं भगवती महालक्ष्मी के ही शीघ्र फलदायक स्वरूप कनक प्रभा की साधना में प्रवृत्त हो रहा हूं, भगवती महालक्ष्मी मुझे यथा शीघ्र सफलता प्रथान करें और ऐसा कठकर किसी शेष धातु के पात्र में (ध्रेष धातु के अभाव में पुष्प पंखुडियों पर) 'पारद शंख' स्थापित करें यदि आपके पास पहले से कोई पारद शंख हो और उस पर साधना की गई हो तब भी वह पूर्ण फलदायक है।

पारद तो एक ऐसी चैतन्य धातु है, जिससे निर्मित कोई भी विश्रह अपने आप में श्री युक्त होता ही है और इसी विशेषता से कनक प्रभा की साधना पारद शंख पर निश्चित रूप से फलदायी होती है क्योंकि वारव और रुद्र निर्माण का धनिष्ठ संबंध होता ही है। इसी साधना को अन्य दो विधियों से भी किया जा सकता है। जिन्हें मैं स्थानाभाव से देने में असमर्थ हूं मूल प्रमाणिक विधि यही है।

इस दुलोम पारद शंख पर अष्टग्रन्थ से स्वस्तिक का निर्माण करें, मूलाब की पंखुडियां चढ़ाएं, और एक बड़ा दीपक शुद्ध धी का जलाकर भगवती लक्ष्मी व उनके साकार प्रतीक विश्रह रूप में पारद शंख का संयुक्त पूजन करें और प्रार्थना करें।

देवी कनक प्रभा इसी पारद की भाँति बद्ध होकर अपने सहोदर तुल्य इस पारद शंख के रूप में मेरे धर में स्थायी निवास करें। भगवती महालक्ष्मी एवं शंख का पूजन सुग्रांथ, कुकुम, मधात, पुष्प, पंचामृत, दुष्प्र निर्मित नैवेद्य, ताम्बूल एवं पुंगी फल (सुपारी) से करें। दक्षिणा रूप में इन्द्रायची एवं लौंग समर्पित करें। लक्ष्मी सिद्धि माला से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप सम्पन्न करें और मंत्र जप की समाप्ति पर एक बार पुनः कपूर आरती से महालक्ष्मी की आरती सम्पन्न कर क्षमस्व परमेश्वरी कठकर स्थान छोड़ें। इस साधना में प्रसुत होने वाला मंत्र है—

॥ ॐ हौं हौं हौं हौं कनक प्रभा सम जृहे अग्रच्छ स्थापद
कट॥

इस साधना में यह आवश्यक नहीं कि आपने प्रथम विन जिस समय साधना प्रारम्भ की, उसी समय से नित्य प्रति साधना प्रारम्भ करें। लेकिन एक छ्रम निश्चित कर सकें

तो लाभदायक रहेगा। यदि इन तीस दिनों में घर से बाहर जाना पड़े तब भी इस साधना को निरंतर कर सकते हैं, पारद निर्मित विशेष को यात्रा में ले जाना शास्त्र सम्पत्ति माना जाये। स्थियां रजस्वला काल में साधना स्थगित कर शेष दिनों में साधना पूर्ण कर सकती है, इसे व्यवधान नहीं माना जाता।

साधना के आरम्भ करने के तीन-चार दिन के बाद से मधुर सुगंध साधना कक्ष में पदचाप, पादलों अधवा करथनी की छवि ने, वरदों की सरसराहट, कर्मुर की सुगंध, शीतलता जैसे विविध अनुभव भी प्रारम्भ हो जाते हैं यदि ऐसे अनुभव प्रारम्भ हों तो साधक और संभग हो जाएं क्योंकि कलक प्रभा साधना के मध्य में ही उपस्थित हो जाती है।

कलक प्रभा का साधना के मध्य में उपस्थित होना साधना की पूर्णता मान लेना उचित नहीं क्योंकि यह एक निश्चित क्रम है तथा तीस दिन का साधनामय जीवन व्यनीत करना आवश्यक है।

प्रतिदिन इस साधना की समाप्ति पर सर्वर आवश्यकता चार्द एण्टी कलक धारा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए, क्योंकि कलक धारा और कलक प्रभा एक ही देवी के दो विभिन्न ढंग से वर्णन हैं।

आकर्षिक धन प्राप्ति कीन व्यक्ति हमारे जीवन में लाभदायक होगा, किस स्रोत से हमें धन मिलेगा, किस व्यापार से रातों रात लाभ हो जायेगा, ऐसी अनेक स्थितियों व्यक्ति की कलक प्रभा देवी के माध्यम से स्पष्ट होने लगती है, आवश्यकता है तो साधक के सतर्क और चौकड़ा रहने की क्योंकि साधना के पूर्ण होने ने पूर्व भी सफलताएं मिलती रही रखी हैं।

साधना सारांशी पैकट - 430/-

★ काल चक्र ★

समय का चक्र निरन्तर गतिशील है और यहि सूक्ष्मता से देखें, तो प्रत्येक क्षण का अपना अलग महत्व है। इस काल चक्र की गति के फलस्वरूप जीवन में कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं, जिनमें कुछ विशेष साधनाओं को सम्पन्न करने पर सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है। इस स्तम्भ के अंतर्गत ऐसे विशिष्ट साधना मुहूर्तों को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिन में सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने पर सफलता प्राप्त होती है।

१९. सितम्बर मंगलवार प्रातः ६ बजे से गजकेशरी दोग अतिथेष्ट मुहूर्त है। इस दिन आप पिनु शाड़ हेतु साधना करें तो ज्यादा फलप्रद है। अपने सामने देन का दीपक लगाकर एक थाली में स्वस्तिक बनाकर उस पर पितेश्वर शांति गुटिका (न्यौछावर ७५/-) को स्थापित कर निम्न मंत्र का जप २० मिनट तक करें—

॥३५ हौं पितेश्वराद् लर्व शर्ति हौं ३५ जपः ॥

२४ सितम्बर अश्विन कृष्ण एकांशी वस अवसर पर यदि आर्थिक उत्तरि के लिए साधना की जाए, तो अत्यन्त श्रेष्ठ चिह्न होता है। गुरु वित्र पास धो का दीपक लगाकर उसके समझ सिद्धि भाला (न्यौछावर १५०/-) से प्रातः ५.२० में ६.१२ तक निम्न मंत्र का जप करें—

॥३५ शर्ति हौं हूं शर्ति फट् ॥

२८ सितम्बर को शारदीय नवरात्रि प्रारम्भ है इस

दिन सुबह ६.१२ मिनट पर बहुत ही अच्छा समय है। इस समय शान्तु नाथ हेतु साधना की जाए, तो ज्यादा लाभदायक चिह्न होगी। उपने पूरा व्यान में सरसों के तेल वा दीपक लगाकर उसके समक्ष भैरव शुटिका (न्यौछावर १००/-) को रखकर निम्न मंत्र का जप १५ मिनट तक करें—

॥३५ वली कीं हौं कीं वलीं शत्रुविमर्जनाय फट् ॥

मंत्र जप के बाद गुटिका को नदी में प्रवाहित करें।

५ अक्टूबर को दुर्गा अष्टमी है इस दिन मुहूर्त ७.१२ से ८.३६ तक अहन ही अच्छा समय है आप इस समय का उपयोग अपनी कामना पूर्ति के लिए सम्पन्न करें। कामना गुटिका (न्यौछावर ७५/-) को स्थापित कर निम्न मंत्र का जप करें—

॥३५ तुं मन्मोक्षाभितं कार्दी साधय तुं ३५ ॥

मंत्र जप के बाद गुटिका को धारण कर लें।

क्या आप यही रूप में मना तो हैं

दीपावली

दीपावली पर्व के बीच लक्ष्मी पूजा मिठान खाने और नये वस्त्र पहन कर दीपक जलाने का पर्व नहीं है बस पर्व के पीछे छिपा है बहुत बड़ा रहस्य, ह्यो शमश्वते हुए दीपावली पर्व को नये शार्थक रूप में सम्पन्न करें।

दीपावली पर्व के आगमन का इन्तजार प्रत्येक हिन्दू को अवश्य ही रहता है उसके लिए यह वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पर्व होता है। इस पर्व की तैयारी में घर में सफाई, नये वस्त्र, आभूषण मिठान, पक्वान के साथ लक्ष्मी पूजन भी सम्पन्न करता है, भगवान राम दीपावली के दिन लंका विजय के पश्चात भयोद्धा नगरी पधारे थे और उनके आगमन की प्रस्तुता में अयोध्या वासियों ने धी के दीपक नलाकर पूरे नगर और प्रत्येक घर की राज सभ्या कर उनका स्वागत किया था, उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए दीपावली को महोत्सव के रूप में सम्पन्न किया जाता है। यहाँ तक कि रामनवमी जिस दिन भगवान राम का अवतरण हुआ था, और राम जानकी विवाह दिवस जो मार्शीष शुक्ल पंचमी को आता है, उससे भी अधिक महत्व दीपावली को दिया गया है।

अब प्रश्न उठता है कि दीपावली पर्व का उल्लेख तो वैदिक साहित्य तक में आया है तो उसके पीछे क्या भगवन्पूर्ण रहस्य है। जिसके कारण भारतीय संस्कृति के लिए यह महान पर्व है, इन दीपावली महोत्सव की तैयारी तो नवरात्रि से ही प्रारम्भ हो जाती है। इस पर्व के साथ ही जो कार्य उम करते हैं, उनके पीछे गंभीर रहस्य है, इन रहस्यों को समझे बिना दीपावली मनाना केवल एक परम्परा का निर्वाह करना है।

दीपावली के पीछे क्या-क्या महान बातें छुपी हुई हैं

उन्हें समझे और उसी के अनुसार इस बार दीपावली पर्व को सम्पन्न करें—

१. शरद कानु को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया गया है— हेमन्त कानु, शिशिर कानु और वसन्त कानु। इनमें हेमन्त कानु मन को लुभाने वाली आनन्द प्रदान करते वाली कानु है, इस कानु में मनुष्य के मन में श्रेष्ठ भावों का सात्त्विक भावों का उदय होता है, मनुष्य के मन में प्रेम, श्रूगार, काव्य, रस, भोग के भाव उठते हैं, मन में एक ऊर्जावर्गीय शक्ति का उदय होता है। शास्त्रों के अनुसार हेमन्त कानु में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा हेमन्त कानु में जर्म में आने वाला बालक विशेष प्रतिभाशाली होता है।

२. नवरात्रि के साथ ही खेतों में धान की कटाई एवं हो जाती है, और बनउपवनों में वृक्ष, पूष्प इत्यादि विशेष रूप से खिलते हैं, धान्य जीवन का प्रधान अंग है। धान्य की पूर्णिमा से जीवन में आरोग्यना रहती है।

३. धनवियोदशी को एक विशेष क्रिया सम्पन्न की जाती है जिसे दीपदान कहा जाता है अपने परिवार के सदस्यों नथा पूर्वजों के नाम से दीप प्रज्ञवलित वर उन्हें नवी उष्णवा सरोवर में समर्पित किया जाता है उसके साथ ही साथ अपने पितरेश्वरों की प्रार्थना करते हुए उनसे सीमांश्य वर मांगा जाता है। अपने पूर्वजों को इस प्रकार से धन्यवाद करते हैं कि आप

द्वारा स्थापित यह वंश आपका कृपा से सुरक्षित रहे और इसमें निरन्तर वृद्धि हो।

५. धनत्रियोदशी मूलरूप से धनवन्तरी जयंती है जो कि पांचवे वेद आयुर्वेद के जनक माने गये हैं, जीवन में यदि रोग है तो भोग और योग दोनों ही क्रियाएं सम्पन्न नहीं हो सकती समुद्र मंथन के समय धन्वन्तरी प्रकट हुए थे इनके द्वाय में अमृत कलश था। जिससे उन्होंने देवताओं को भी पूर्ण स्वास्थ्य, सौन्दर्य, तेज प्रदान किया। इन्हीं धन्वन्तरी की कृपा जीवन में प्राप्त होती रहे और जीवन सैवेच निरोग रहे।

६. रूप चतुर्दशी सौन्दर्य मिलिं दिवस है जिस प्रकार सुखे बास पर फल फूल नहीं निकल सकते उसी प्रकार रसहीन, सौन्दर्यहीन, रुक्षस्वभाव के व्यक्ति के जीवन में अभिवृद्धि नहीं हो सकती। वह जीवन में सैवेच संतम, निराश, क्रोधी रहता है। जीवन में रस और सौन्दर्य का उतना ही महत्व है जितना तपस्या और बल का।

७. ईश्वर द्वारा प्रदत्त हस देह को सौन्दर्यबान रसगुल्ब बनाये रखना मनुष्य का कर्तव्य है, अपनी देह को सजाना, सेवाना, देह के साथ-साथ देह के भौतर किसी प्रकार का रोग उत्पन्न नहीं हो इन दोनों उद्देश्यों को अर्थात् आन्तरिक देह और बाह्य देह दोनों को श्रेष्ठ बनाये रखने का संकल्प करने का दिवस धन्वन्तरी जयंती और रूपचतुर्दशी है।

कालान्तर में इन पक्ष को ध्यान में नहीं रखते हुए धनत्रियोदशी के दिन व्यापारीयों ने हिराब किताब के नये चोणडियों, कलम, दवात का पूजन का महोत्सव बनाकर इन दो विवरों की महिमा को खंडित ही किया है।

दीपावली का दिवस प्रारम्भ केसे हो इस विषय पर

बहुत कम विचार किया गया। दीपावली पर्व जब प्रारम्भ होता है तो उसके साथ ही साथ एक नववर्ष प्रारम्भ होता है, दिवस के प्रातः से ही स्नान ध्यान कर सर्वप्रथम तीन प्रकार के विशेष पूजन सम्पन्न अवश्य करने चाहिए। प्रथम पूजन अपने गुरु का, दूसरा पूजन अपने माता-पिता का और तृतीय पूजन अपने कुलदेवता का सम्पन्न करना चाहिए, मनुष्य के जीवन में ये तीन व्यक्तियों की पूर्ण कृपा से ही जीवन बनता है और इस विशेष दिवस पर उनका सम्मान करना आत्मान करना उनके प्रति नमन होना आवश्यक कर्तव्य है।

दीपावली के दिन हुई होती ही है और सामान्यतः परिवार के सभी सदस्य साथ मिलकर दीपावली पूजन सम्पन्न करते हैं। श्रेष्ठ वस्त्र के साथ-साथ श्रेष्ठ व्यंजन भी शहर करते हैं। जहां तक संभव हो सके, बाजार से लाए हुए व्यंजनों की अपेक्षा घर में बनाये गये व्यंजनों को शहर करना चाहिए घर के बने हुए व्यंजन ही देवताओं को अर्पित करना चाहिए।

घर में सब स्थानों पर और घर के बाहर दीपक प्रज्ञवलित करने का रिवाज है, यह कोई एक सामान्य परम्परा नहीं है, अग्नि मनुष्य की शक्ति का प्रतीक है। अमावस्या की रात्रि को सर्वाधिक कृष्ण रात्रि या काली रात्रि मानी जाती है ऐसी रात्रि में भी प्रकाश के द्वारा अंधकार को दूर किया जा सकता है। इसके पीछे यह संकल्प भावना है कि यदि मनुष्य संकल्प शक्ति से युक्त है तो जीवन में चाहे कैसे भी मुसीबत परेशानी की अंधकार युक्त कालीमा आ जायें यह स्वयं अपने प्रयासों द्वारा इस अंधकार को दूर कर सकता है।

और यह विद्यमान आवश्यक प्रकट नहीं जिसे भगवन् निश्चय के।

यिद्धि हेतु भी मन में प्रकाश अंग जीवन में। जीवन में एक वर्ष और प्रभाव जीवन में। होते हैं उन व्यक्ति ला

की जाती पूजा सम निर्माण क यह विशेष निवास है है जो कि

शुभकाम लाने का है।

आप दीप ले सके त

कोड भी वा का विज्ञ ना ए तो विश्वर लु उपति वे प्राप्त कर

लक्ष्मी की पूजा आयोगना तो सभी व्यक्ति करते हैं और यह प्रार्थना भी करते हैं कि हमारे घर में लक्ष्मी सदैव विद्यमान रहे, लेकिन इसके साथ यह बात ध्यान में रखना आवश्यक है कि लक्ष्मी को उत्पत्ति कैसे हुई, लक्ष्मी सहसा प्रकट नहीं हो जाए, लक्ष्मी समुद्र मंथन के पश्चात उत्पन्न हुई जिसे भगवान विष्णु ने वरण किया अतः जीवन में लक्ष्मी उत्पन्न मंथन के पश्चात ही हो सकती है।

माझे अवश्य ही थ्रेह स्थिति लाता है, लेकिन कार्य मिलि हेतु जीवन में हर समय मंथन आवश्यक है। जहां जहां भी मंथन होगा वहां थ्रेह वसन्त की प्राप्ति होगी। मंथन का तात्पर्य है मन में उस संकल्प शक्ति को प्रबल करना जिससे बुद्धि एकाग्र और तीव्र हो सके। लक्ष्मी के सम्बन्ध में कहा गया है कि 'कर्म प्रभाव प्रकाशिनी' जहां कर्म होता है उसका प्रकाश और प्रभाव लक्ष्मी के रूप में प्रकट होता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में निरन्तर मंथन नहीं करने आत्मरा, कामचौर, व्यसनी होते हैं उनकी बुद्धि कुठित हो जाती है और कुठित बुद्धि वाला व्यक्ति लक्ष्मी को प्राप्त नहीं कर सकता है।

दीपावली के दूसरे दिन प्रातः गोवर्धन पूजा सम्पन्न की जाती है और सूर्योदय से पूर्व ही घर के छार पर गोवर्धन पूजा सम्पन्न होती है। जिनमें गाय के गोबर से विशेष यंत्र निर्माण कर पूजन धूप दीप सम्पन्न किया जाता है। इसके पीछे यह विशेष उद्देश्य है कि गाय के शरीर में सभी देवताओं का निवास है और गी से शुद्ध दूध, धूत इत्यादि सामग्री प्राप्त होती है जो कि जीवन का आधार है।

इसी दिन लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं शुभकामनाएं बताते हैं। अपनी प्रसन्नता में अन्य को सम्मिलित करने का प्रयास है। अतिथियों का स्वागत करने का उद्देश्य है।

उपरोक्त सारी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए यदि आप दीपबलों कल्प में इनके पीछे जो उद्देश्य है उनका संकल्प ने सके तो ये दीपावली साथक हो सकती है।

१. जीवन में निरन्तर मंथन अर्थात कर्म करना है कोई भी समय फालतू या व्यर्थ नहीं गंवाना है, अपनी गलतियों का विश्लेषण करना है। यदि जीवन में कोई मुसीबत भी आ नाए तो उससे ध्वनि की आवश्यकता नहीं है अपितु अपनी स्थिर बुद्धि से मंथन विचार करना है कि इस समस्या की उत्पन्नि कैसे हुई और मैं किस प्रकार से इस समस्या पर विनाय प्राप्त कर सकता हूँ।

दीपावली पर्व वर्ष में एक बार आता है लेकिन यह हम सुप्रकार संकल्प शुल्क होकर कर्मदील होकर दीपावली सम्पन्न करें तो पूरे वर्ष घर परिवार में दीपावली जैसा वातावरण रह सकता है।

२. मेरे जीवन में चाहे कितनी भी कालिमा आ जाए मैं अपने जान का दोष प्रज्ञवलित कर बुद्धि को चैतन्य रखूँगा और उसमें निरन्तर कर्म और साधना रूपी धृत प्रवाहित करता रहूँगा जिससे जान और बुद्धि दोनों चैतन्य रहें।

३. मैं अपने जीवन में अपनी देह का पूर्ण ध्यान रखूँगा इस प्रकार के किसी व्यसनों को नहीं अपनाऊँगा, जिससे देह में कोई रोग आ जाए, ईश्वर ने चाहे जैसा भी रूप दिया है उस रूप को अपने जान द्वारा चैतन्य रखूँगा।

४ अपने जीवन के महत्वपूर्ण कार्य अपने परिवार के साथ सम्पन्न करूँगा, पत्नी को आदर सम्मान प्रेम प्रदान करूँगा, और अपनी सेतान के प्रति थ्रेष व्यवहार रखता हुआ परिवार की एकता संवेद बनाए रखूँगा।

५ हर उत्सव विशेष कार्य में सर्वप्रथम गुरु पूजा वेव पूजा, पितेश्वर पूजा आवश्य सम्पन्न करूँगा, जिनका मेरे ऊपर करण है। क्योंकि यह देह और यह जान देवताओं, माता-पिता और गुरु का दिया हुआ है।

६ इसी दीपावली से मैं एक विशेष संकल्प लूँगा और इस संकल्प का निवाह पूरे जीवन पर्यन्त अवश्य करूँगा एक संकल्प की पूर्ति से दूसरा थ्रेष संकल्प बनता है, और संकल्पों की पूर्ति से थ्रेष जीवन का निर्माण होता है।

७ लक्ष्मी सदैव घर में स्थायी रूप से रह सके उसका आदर करते हुए उसका अपव्यय कर निरर्थक कार्यों में व्यवहर लक्ष्मी का अपमान नहीं करूँगा।

इन सारे स्थितियों की विवेचना कर यदि दीपावली का पर्व सम्पन्न करते हैं तो दीपावली पर्व एक सार्वक पर्व बन जाता है और पूरे वर्ष के ३६५ दिन चिंता रहित रस आनन्द सौन्दर्य कर्म, ज्ञान, बुद्धि चेतना, संस्कार, आरोग्य से युक्त हो सकते हैं।

दीपावली तो हर वर्ष आयेगा ही लेकिन इस दीपावली को इन्हीं संकल्पों इन्हीं विचारों के साथ नववर्ष का प्रारम्भ करना है। गुरु परिवार की और से हार्दिक शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद।

साधन संकाय

साधन गटक तथा संकेन तमान्य के लिए समय के बे सभी रूप यहां प्रस्तुत हैं जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उचित या अवानियि के लाभ होते हैं तथा जिन्हें जान कर आए रखने अपने लिए उचित का नामं प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय के तीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है - ऐल नद्यम और निम। जीवन के लिए अवश्यक किसी भी कार्य के लिए चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो।

धर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी लायं से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% अपके भाग में अंकित हो जायेगा।

यदि किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकते तो मध्यम समय का प्रयोग कर सकते हैं। इस काज में भी कार्य पूर्ण होता है और प्रतिशत होता है 75% अर्थात् कार्य

पूर्ण होने में विलम्ब होता है, किन्तु सफलता नीलती है।

निम्न समय का उपयोग तो तरा ते निविदा है, करीब यदि बनते हुए लायं का ग्राहन भूल वश में निम्न समय में हो जाय, तो वह दिग्गज होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को चहिरे कि निम्न समय में किसी भी प्रकार के कार्य का ग्राहन न करे।

* लिखे दिनांक 15 सितम्बर तक के लिए समय का निर्णय पिछले अंक में दिया जा चुका है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निम्न समय
रविवार (17, 24 सितम्बर 1, 8 अक्टूबर)	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 8.24 तक दोपहर 11.36 से 2.48 तक सायं 6.48 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	प्रातः 8.24 से 11.36 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	दोपहर 2.48 से 3.36 तक दोपहर 4.24 से 6.48 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक
सोमवार (18, 25 सितम्बर 2, 9 अक्टूबर)	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 7.30 तक प्रातः 9.12 से 11.36 तक रात्रि 8.24 से 11.36 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	प्रातः 9.00 से 9.12 तक दोपहर 11.36 से 8.24 तक रात्रि 11.36 से 12.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	प्रातः 7.30 से 9.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक
मंगलवार (19, 26 सितम्बर 3, 10 अक्टूबर)	दोपहर 10.00 से 11.36 तक सायं 4.30 से 6.00 तक सायं 6.48 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 1.12 से 3.00 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	प्रातः 8.00 से 7.36 तक दोपहर 11.36 से 1.12 तक दोपहर 3.00 से 4.30 तक सायं 6.00 से 6.48 तक
बुधवार (20, 27 सितम्बर 4, 11 अक्टूबर)	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 10.00 तक दोपहर 2.48 से 5.12 तक सायं 7.36 से 9.12 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	दोपहर 10.00 से 12.00 तक दोपहर 1.30 से 2.48 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 9.12 से 12.24 तक	प्रातः 8.00 से 6.48 तक दोपहर 12.00 से 1.30 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
गुरुवार (21, 28 सितम्बर 5, 12 अक्टूबर)	प्रातः 6.00 से 7.36 तक दोपहर 10.00 से 11.36 तक सायं 4.24 से 6.00 तक रात्रि 9.12 से 11.36 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 1.12 से 1.30 तक सायं 6.00 से 9.12 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक दोपहर 11.36 से 1.12 तक दोपहर 1.30 से 4.24 तक
शुक्रवार (22, 29 सितम्बर 6, 13 अक्टूबर)	प्रातः 6.00 से 6.48 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 12.24 से 3.36 तक सायं 7.36 से 9.12 तक रात्रि 10.48 से 11.36 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 7.36 तक दोपहर 10.00 से 12.24 तक सायं 4.24 से 7.36 तक रात्रि 11.36 से 1.12 तक	दोपहर 10.30 से 12.00 तक दोपहर 3.36 से 4.24 तक रात्रि 9.12 से 10.48 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
शनिवार (23, 30 सितम्बर 7, 14 अक्टूबर)	प्रातः 6.00 से 6.48 तक दोपहर 10.30 से 12.24 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	दोपहर 12.24 से 4.24 तक सायं 6.48 से 8.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	ब्रह्मघूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 10.30 तक सायं 4.24 से 6.48 तक रात्रि 10.48 से 2.48 तक

यह लम्बो बहुदीकरणमिटाने का हाथ

किसी भी कार्य को प्राप्ति करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में सशय-असंशय की आवाना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपरिवत नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिव का प्राप्ति किस प्रकार हो होगा, दिन की समाजिक पर वह स्वयं के तत्त्वावधारित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाया पाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल हर आजब युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित बाणों से संकलित हैं, जिन्हें यहाँ प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें यम्पत्र करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

- 15 सितम्बर सरसोंके तेल का दीपक जलाकर अपने बगीचे में रख दें।**
- 16 सितम्बर प्रातः निम्न श्लोक का पांच बार उच्चारण करें—**
- अह भव भव योगी देव यांश त्वं पूर्ण,
भव रूप भवत योगी पूर्ण सिद्धु वद्वा।
त्वं लाम रूप यजतुं भव सिद्धु योगीर्त्त तत्वं
त्वं लाम सिद्धु भवतुं भव पूर्ण इतानं तयस्व॥
- 17 सितम्बर चना और गुड़ का दान करने से कार्य में सफलता की समावना अधिक है।**
- 18 सितम्बर आज पंचमी शाह है अपने पूर्वजों के नाम से गाव को आप एक शाली भोजन स्थिलाएं जिससे पितरों की आत्मा को शान्ति मिले।**
- 19 सितम्बर एक कागज पर कुंकुम से तीन बार गुरु मंत्र लिख कर उसे किसी मंदिर में चढ़ा दें।**
- 20 सितम्बर बाहर जाने समय जहोर को किसी मंदिर में चढ़ा दें। (न्यौष्ठावर ६०/-)**
- 21 सितम्बर गुरु जन्म दिवस के समय में प्रातः 'निखिलेश्वरानन्द स्तवन' का पूर्ण पाठ करें, दिवस पर्यन्त गुरु चिन्तन करें। यामर्ध्यानुसार गुरु सेवा करने का संकल्प लें।**
- 22 सितम्बर प्रातः उठने समय अपना वाया पांच पहले पूर्वी पर रखने हुए ओं पूर्वी नमः मंत्र का पांच बार उच्चारण करें।**
- 23 सितम्बर आज गुरु नानक जयंती है आज आप गुरु गीत के प्रधाम ज्यारह श्लोक का पाठ करें सभी कार्य पूरे होंगे।**
- 24 सितम्बर 'आंगिका' (न्यौष्ठावर ८०/-) को धारण कर ही बाहर जायें, दिरोधी पशास्त होंगे।**
- 25 सितम्बर प्रातः काल रोटी पर गुड़ रख कर उसे किसी भिखारी को दान कर दें या नाय को सिखा दें।**
- 26 सितम्बर 'निखिल मुटिका' (न्यौष्ठावर १००/-) को जल से स्नान करकर, कुंकुम, असत से पूजन कर उसको धारण कर कार्य क्षेत्र जाए।**
- 27 सितम्बर आज अमावस्या है पांच बर्ती का तेल का दीपक जलाकर उसके पास में मिठाई का भोग लगाकर किसी भी चौराहे पर रख दें।**
- 28 सितम्बर आज शारदीय नवरात्रि प्रारम्भ है प्रातः दुर्गा चित्र के समक्ष ऐसी कली चामुण्डायै विच्छै मंत्र का व्याह्र बार जप करें।**
- 29 सितम्बर किसी भी कार्य से पूर्व पांच बार निम्न श्लोक का उच्चारण करें—**
- गुरु पादोद्देशं चुत्त्वा सोऽसोऽक्षेषं वटः।
तीर्थायां प्रवारजश्च युरोमूर्ति वंसो नमः॥
- 30 सितम्बर बाहर निकलने से पूर्व एक इलायची तथा एक लौग मगवती दुर्गा के चरणों में अर्पित करें।**
- 1 अक्टूबर** किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व 'कली' मंत्र का पांच बार उच्चारण करें।
- 2 अक्टूबर** प्रातः काल निखिलेश्वरम शतकम के पांच श्लोक का पाठ कर ही घर से बाहर जायें।
- 3 अक्टूबर** प्रातः काल हनुमान विघ्न के समक्ष तेल का दीपक लगा दें।
- 4 अक्टूबर** शुभ कार्य के लिए प्रातः काल बाहर जाते समय दरखाजे पर चुटकी भर नमक छिड़क दें।
- 5 अक्टूबर** आज दुर्गा अष्टमी है आप मगवती वगनामुखी के बीज मंत्र का तीन बार जपकर घर से बाहर जायें। 'हीं'
- 6 अक्टूबर** आज दुर्गा नवमी है आप प्रातः भगवती को लाल पुष्प चढ़ाकर कार्य हेतु जाएं।
- 7 अक्टूबर** आज विनयपूर्णमी है आप भगवान राम का ध्यान करके उनके चित्र पर माला चढ़ाकर ही बाहर जाएं।
- 8 अक्टूबर** अपने दिन का आरम्भ करते समय जब बाहर निकलें, तो पहले आप दाहिने पांच बाहर रखें।
- 9 अक्टूबर** प्रातः काल बाहर जाने से पूर्व दो संफद उष्ण अपने सिर पर दूमा कर मार्ग में किसी निर्जन स्थान में फैक दें।
- 10 अक्टूबर** भगवान गणेश की दृष्टि चढ़ाकर ही बाहर जाए।
- 11 अक्टूबर** हनुमान चालीसा का पाठ कर ही बाहर जाए।
- 12 अक्टूबर** सिद्धि गुटिका को विवलिंग की मूर्ति पर चढ़ाएं। सभी रुपों हुए कार्य शीघ्र बनेंगे। (न्यौष्ठावर ८०/-)
- 13 अक्टूबर** भुवनेश्वरी स्तोत्र का पाठ कर ही बाहर जाएं।
- 14 अक्टूबर** तुलसी के दो पत्तों को शहन कर घर से बाहर जाए।

ध्यान मूल गुरु गृहि

शिष्य अपने भ्राव प्रकट करता है, तो मुस्कान के साथ नेत्रों में प्रसङ्गता के अश्रु कण भी डिलमिला जाते हैं, शिष्य वही हो सकता है, जिसके हृदय में भ्राव हो हृदय में गुरु को स्थापित किया हुआ हो। ऐसे ही एक शिष्य ने अपने भ्राव प्रकट किये हैं—

मैं बचपन से लेकर आज तक यहाँ पढ़ता आया हूँ कि भारत एक कृषि प्रधान देश है, किन्तु सच्च तो यह है कि कृषि प्रधान देश नहीं अपितु भारत गुरु और कृषि प्रधान देश है। यहाँ जितने थ्रेष एवं उच्चकोटि के कृषि पद्म गुरु हुये हैं, उतने विश्व में अन्य कहीं नहीं हुये। इसानिये भारत समूचे विश्व को अध्यात्म के क्षेत्र में अग्रगत करने में अग्रणी माना जाता है।

यह वही प्राचीन भूमि है जहाँ दूसरे देशों के जाने से पहले तत्त्वज्ञान ने आकर अपनी वासभूमि अनावी थी। यह वही भारत है जहाँ के अध्यात्मिक प्रबाह का स्थूल प्रतिरूप उसके बहने वाले उसके समुद्राकार नद है, जहाँ विश्वनन्द हिमालय श्रेणीबद्ध उड़ा हुआ है और अपने हिम शिखरों द्वारा मानो स्वर्णराज्य के रहस्यों की ओर निढ़ार रखा है। यह वही भारत है, जिसकी भूमि पर संसार के सर्वश्रेष्ठ कृषियों की चरणरज पड़ चुकी है। यही सबसे पहले मनुष्य प्रकृति तथा अन्तर्जगत के रहस्योदयाटन की जिजासाओं के अंकुर उगे थे।

आत्मा के अमरत्व, अन्तर्यामी ईश्वर एवं जगतप्रपञ्च तथा मनुष्य के भीतर सर्वव्यापी परमात्मा विषयक मतवादों का पहले पहल उद्भव यहीं हुआ था और यहीं धर्म और दर्शन के आदर्शों ने अपनी चरम उन्नति प्राप्त की थी। यहीं वही भूमि है जहाँ से उमड़ती हुई बाढ़ की तरह धर्म तथा वादानिक तत्वों ने समस्त संसार को बार-बार आप्नावित कर दिया . . . यह वही भारत है जो अपने अविनाशी वीर्य और जीवन के साथ

अब तक पर्वत से भी वृद्धतर भ्राव से खड़ा है। आत्मा जीव अनादि, अनन्त और अमृत रसरूप है, वैसे ही हमारी भारतभूमि का जीवन है, और हम इसी वेश की भन्तान हैं।

दुसरा तो तब होता है, जब हम अपने इसी भारत देश में कृषियों और गुरुओं की आलोचना-प्रत्यालोचना सुनते और करते हैं। ये वही माहान आत्मायें हैं जिन्होंने न केवल भारत का अपितु समूचे विश्व का मार्गदर्शन किया है और समूचे मनव जाति के उत्थान हेतु अपने प्राणों की अहृति दी है। अपने ही देश के कहावर राजनेता तब धर्मविद्वान राजनीति की बात करते हैं तो सचमुच मुझे उनकी मानविक नपुंसकता पर हँसना आता है। मन सोचता है कि क्या ये सचमुच राम-कृष्ण, गीतम महावीर, नानक कबीर की दी माटी से ये जन्मे हैं?

सच्च तो बात यह है कि वे जानते ही नहीं हैं कि धर्म और राजनीति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। धर्मविद्वान राजनीति वर्तमान राजनीति की भाँति विच्छक होगी, जिसमें घृणा तोड़फोड़ और घोटालों का बोलबाल होगा और धर्मयुक्त राजनीति सूचनात्मक राजनीति होगी जिसमें रामराज्य की परिकल्पना होगी जिसमें वसुधेव कुद्रुम्बकम और जिओं और जीने दो की मावना होगी।

मेरे गुरुवेव प्राप्त: स्मरणीय भगवतपाद डा. नारायण दत्त श्रीमाली जी ने अपने जीवनपर्यन्त एवं उनके शरीर त्यागने के बाद पूज्य गुरु त्रिमूर्ति जिन्हें पूज्य गुरुदेव ने जीवनकाल में

ही बहु प्रतिस्थान के लिये करने के द्वारा मन्त्र

जब भी चित्र नह चरणों कोई मन करने के मात्र आ

सर्वप्रथम साधक दुबा रखे गुरुमूर्ति प्रतिष्ठिम गुरु ही तर लर

है— तब की छाँ में गुरु याद न उसके ऐसी आँखों लूँद मै

के रोम तिरस्व का अन सीनीव में पर आवेश

ही बहाग-विष्णु-महेश के सूप में हम शिष्यों के बीच प्रतिस्थापित किया था, समग्र भूखण्ड की ज्ञानालोकित करने के लिये समूची मानव जाति को अध्यात्म की ओर अग्रसारित करने के लिये सतत प्रयत्नशील रहे हैं और हैं।

ध्यान मूलं गुरुरोमूर्तिः पूजामूलं गुरुः पवम् ।
मन्त्रमूलं गुरुरोवाक्यं मरोक्ष मूलं गुरुः कृपा

शिष्य के ध्यान का मूल केवल गुरु मूर्ति ही है वह जब भी ध्यान करे तो उसके सामने किसी अन्य देवता का चित्र नहीं आना चाहिए। शिष्य पूजा करे तो केवल शुरु के चरणों की ही पूजा करें। उसके जीवन में गुरुमंत्र के अलावा कोई मन नहीं होता और न उसे किसी प्रकार के मन की साधना करने की आवश्यकता होती है। जन्म मृत्यु से छूटने का एक मात्र आधार गुरु कृपा ही है।

ध्यान मूलं गुरुरोमूर्तिः गुरु जीता के इस श्लोक में सर्वप्रथम गुरु ध्यान की ही बात कही गयी है। उत्कृष्ट शिष्य व साधक का लक्षण ही यह है कि वह अहनिश्च गुरु ध्यान में ही दूबा रहे। वह अपने रोम-रोम में रक्त की एक-एक बूँद में गुरुमूर्ति का दर्शन करे। उसके अश्रु कणों में भी गुरु मूर्ति का प्रतिविन्द्र हो। कबीर की मानि वह निधर भी देखे उसे सर्वत्र गुरु ही दिखाई दे।

लालती देखते लाल की जित देखते लित लाल ।
लालती देखतन मैं जयो मैं भी हो जयी लाल ॥

पूज्य गुरुदेव ने इस सम्बन्ध में गुरुगीता में लिखा है— नब यह स्थिति पैदा होती है नब शिष्य की आंखों में गुरु की छाप बनी रहती है। सोते नागते, उठते बैठते उसकी आंखों में गुरु का स्वरूप हटता ही नहीं। फिर उसे हनुमान चालीसा याद नड़ी रहती फिर उसे कृष्ण की लीलाये याद नड़ी रहती उसके होठों पर तो केवल गुरु शब्द का उच्चारण रहता है... ऐसी स्थिति में उसकी आंखे डबडबायी हुई रहती है, उसकी आंखों में एक बिल्कुल तैरता रहता है। उसकी आंसू की प्रत्येक बूँद में पूर्णरूप से गुरु समाहित रहता है।

एकलव्य इस क्षेत्र में अक्षितीय उदाहरण है। एकलव्य के रोम-प्रतिरोम में गुरु समाहित था। तभी तो गुरु द्वारा तिरस्कृत होने पर भी उसने गुरु द्वाण से ही धनुर्विद्या सीखने का द्रवत लिया। और थे जंगल में जाकर गुरु की मिठ्ठी की सजीव मूर्ति बनाकर, गुरु मूर्ति के चरणों तले बैठकर धनुर्विद्या में पारंगत हुआ। गुरु ध्यान में अहनिश्च दृबकर गुरुमूर्ति से आदेश ग्रहणकर उसने धनुर्विद्या के क्षेत्र में झर्जुन को पीछे

छोड़ दिया एकलव्य महाकाव्यकार ने लिखा है।

देव क्षमा चाहता हूँ मेरे इन दाथों ने,
मृतिका की मृति में है खीचा रूप आपका
आप है महत्तम, प्रतीक अति लंबु है
किन्तु आप ही है वर्तमान कण कण में ॥

पूजा मूलं गुरोः पदम् साधक या शिष्य के लिये सर्वश्रेष्ठ पूजा गुरु चरणों की होती है। गुरु चरणों का ध्यान करने मात्र से ही शिष्य के जीवन के सभी पाप-ताप संताप नष्ट हो जाते हैं। शिष्य पूर्ण तथा बहामय हो जाता है। गुरु चरणों में ही समस्त तीर्थ निहित होते हैं, इस रहस्य को जानकर साधक या शिष्य तीर्थों में भटकना छोड़ देते हैं। गुरु चरणों की महिमा के सम्बन्ध में गोस्वामी तुलसीदास ने मानस में लिखा है—

बवज गुलदेव यदम् एराग्रा ।
सुलधि सुवास सरस् उरजुराजा ॥

इस क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ उदाहरण मेरी समझ में भारत ही है। हर प्रकार से अपने प्रभु को अयोध्या वापस लाने के प्रयास में चिपका होने पर उन्होंने अपने प्रभु की पावुका ही उनसे मांग ली और उसे सिंहासन पर स्थापित कर उससे आदेश ग्रहण कर उसकी पूजा अर्चना कर राज्य चलाने लगे।

मन्त्रमूलं गुरुरोवाक्यं — गुरु की आज्ञा ही साधक व शिष्य के जीवन में सर्वांगिर होती है। गुरु मूर्ख से निकले शब्द ही शिष्य के लिये मन सदृश होते हैं। पूज्य गुरुदेव अरविन्द जी द्वारा संकलित संपादित शिष्योपनिषद् पुस्तक में लिखा है इसलिए बिना तक वितर्क किये गुरु ने आज्ञा ही और हमने पालन किया। बस केवल एक ही लक्ष्य, एक ही उद्देश्य हो कि वे हमें आज्ञा दें और हम पालन करें। यदि हमने वापस पलटकर जबाब दिया तो फिर उसी क्षण शिष्यता की न्यूनता हो जाये। उसी समय हम मनुष्यता से भी नीचे गिर जाये। फिर न हम मनुष्य रहे न शिष्य रहे।

इस विषय पर चर्चा करते समय अनायास ही मेरे सामने दो उदाहरण उपस्थित होते हैं। सर्वप्रथम उदाहरण है स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य मधुरानन्दका। किस प्रकार एक छोटी बद का बालक प्रगते बस्त्र वहने संन्यासी बेशधारी संदेव निखिलेश्वरानन्द का अनुगामी बनकर उनके पीछे पीछे रहता। हर क्षण वह अपने आराध्य के चिन्तन में ही डूबा रहता। एक बार स्वामी निखिलेश्वरानन्द नर नारायण पर्वत की एक शिला पर बैठे अपने शिष्यों को संबाधित कर रहे थे तभी वह संन्यासी भी पहुंच गया। स्वामी जी ने उसकी

ओर देखा और अपने पास बूलाकर पूछा क्या सचमुच तुम मेरे शिष्य बनाना चाहते हो? क्या तुम मेरी आज्ञा को पालन कर सकते? संन्यासी ने उत्तर दिया आप अंजातों दें गुरुदेव! मेरा तो धन्य ही संबर जायेगा, और गुरुदेव ने आज्ञा दी इसी पहाड़ी से कूद जाओ। और तन्दण मधुरामन्द ने पहाड़ी से छलांग लगा दी। गुरु जाजा शिष्य के जीवन में सर्वोपरि है।

दूसरा उदाहरण एकलब्ध्य का है गुरु आज्ञा मिलते ही उसने अपने दाहिने हाथ का अंगूठा काटकर गुरु चरणों में अपिन कर दिया। अपने जीवन की सिद्ध साधना को गुरु चरणों में समर्पित कर दिया। एकलब्ध्य महाकाव्यकार ने लिखा है —

दक्षिणांशुष ही ढो खण्ड खण्ड मेरा, जो कि
पार्थ को बना दे अद्वितीय धन्वी विश्व में।

गुरु प्रण मूर्ति करे सब काल के लिये
जय गुरुदेव! यह रही मेरी दक्षिणा॥

मोक्ष मूल गुरोः कृपा — समर्पण, अद्वा एवं भक्ति के साथ जब शिष्य गुरु ध्यान और चिन्तन में लीन होगा तो निष्ठित ही वह गुरु कृपा का भागी होगा। गुरु तो सदाशिव है, औच्छरणी है। भला उनके दरबार में देर कड़ा। यदि शिष्य ने जरा भी गुरु चरणों में ध्यान लगाया और गुरु सेवा में संलग्न हुआ और गुरु पिलने। गुरु कृपा ही मोक्ष का मूल है।

यद्यपि हमारे बीच भगवत्पाद पूज्य गुरुदेव नहीं हैं, किन्तु इससे हमें जरा भी विचलित नहीं होना है हमें यह नहीं सोचना है, कि हम अनाथ हैं। पूज्य गुरुदेव ने हमें सनाय ही रखा है। हमारे बीच उन्होंने अपने त्रिगुणात्मक स्वरूप (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में गुरुत्मूर्ति को पहले से ही प्रतिस्थापित किया है और फिर वन्दनीय माताजी मां भगवती के रूप में हमारे मार्गदर्शन तो है ही।

यह सनय हम लोगों की अग्निपरीक्षा का है। हमें शिष्यत्व की कस्ती पर खरे उत्तरा है। हमें तो गुरु त्रिमूर्ति तथा वन्दनीय माताजी के चरणों में सादर प्रणिपात होते हुए —

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका जी पसाका को देश विदेश, प्रान्त-प्रान्त, नगर-नगर, डगर-डगर, घर-घर, गांव-गांव कहराना है। शिविरों का अधिकाधिक आयोजन करना

है। अधिकाधिक दीक्षाये गहण कर पूज्य-गुरुदेव द्वारा दर्शित मार्ग का गुरुदेव के श्री चरणों में सच्ची श्रद्धाजलि होगी और वही हमारी होगी गुरु चरणों में सच्ची गुरु दर्शिणा।

मैं अपने उन गुरु भाईयों एवं गुरु बहनों से भी यह निवेदन करना चाहता हूं, जो गुरु कार्य कर रहे हैं जिन गुरु आज्ञा के गुरु बनना तो सरत है मित्रों। किन्तु गुरु कार्य का निर्वहन देही खींस है। इस सम्बन्ध में विवेकानन्द जी ने लिखा है —

शक्तिदाता गुरु के लिये तो और भी अधिक कठिनाइयां होती है। बहुतेर तो ऐसे होते हैं जो स्वयं अज्ञान में जूब रखने पर भी अपने अन्तकरण में भरे अहंकार के कारण अपने को सर्वत्र समझते हैं। इतना ही नहीं वे दूसरों का भार अपने कंधों पर उठाना चाहते हैं। इस प्रकार अंधा अंधे को राह विश्वावे वाली कहावत चरितार्थ करने हुये अपने साथ उन्हें भी गडडे में ले गिरते हैं। संसार में ऐसों की भरभार है। हर कोई गुरु होना चाहता है। हर भिखारी लक्ष्मद्रा का दान करना चाहता है जैसे ये भिखारी हंसी के पात्र हैं, कैसे ही ये गुरु भी।

अन्त में मैं भगवत्पाद पूज्य गुरु त्रिमूर्ति के चरणों में सादर प्रणिपात होता हुआ अपनी स्वरचित कविता की कुछ पंक्तियां उद्धृत करते हुये विनय करना चाहता हूं कि वह मुझे शक्ति दे, जान दे और अपने श्री चरणों का सबल प्रदान करें ताकि मैं गुरु सेवा में अधिकाधिक संलग्न हो सकूँ।

तुम ब्रह्म रूप, तुम विष्णु रूप

तुम शिव स्वरूप,

तुम आत्म रूप,

तुम स्पातीत,

तुम गुणातीत,

हे शिष्यों के भी प्राणरूप,

आशाच्चर रूप,

हे गुरु त्रिमूर्ति

तुमको मेरा शत-शत प्रणाम।

—शांचोकान्त अग्रवाल, आजमगढ़

* मैंने कमल के बीज बोये हैं और कल ये कमल विकसित होकर चारों तरफ सुरभि बिखेरेंगे। इन फूलों से मानवता गौरवान्वित होगी, इनकी सुगंध से युद्ध व नफरत की आग बुझेगी, प्रेम व आनंद की शीतल वयार बहेगी, लोग प्रफुल्लित हो सकेंगे, आनन्दित हो सकेंगे, उनके मुरझाये हुये चेहरों पर एक वम पैदा हो सकेगी।

— पूज्यपाद सदगुरुदेव डॉ. नारायण वत् श्रीमाली जी

समय
अश्वत
जानते
कुछ
अपनी
छः रु
श्रद्धा
सम्बा
उत्पद

ता
स
य

हो पर
समीप
प्रश्न
अवश्य

गुरु र
पास
जागि
तप
की स
वन र

प्रश्नोपीणदर्श

वेदोक्त काल में पिप्पलाद नामक महान् ऋषि हुए जिनके ज्ञान की चर्चा पूरे भूमण्डल में व्याप्त थी। एक समय उनके पास छः ऋषि पुत्र भारद्वाज गौत्र में उत्पन्न सुकेशा शिवि ऋषि के पुत्र सत्यकाम, सौर्य ऋषि के पुत्र जायर्य, अश्वल पक्षिष्ठ के पुत्र कौशल्य, भृगुजौत्र में उत्पन्न वैदर्भि तथा कन्य के पुत्र कबन्धी, — ये छः जिज्ञासु जो यह तो जानते थे कि संसार में अन्तिम सत्ता ब्रह्म है, ब्रह्म में निष्ठा भी थी उसे पाने की उत्कृष्टा भी थी, लेकिन इसके साथ ही कुछ शंकाएँ भी थीं, उन शंकाओं का समाधान प्राप्त करने हेतु वे पिप्पलाद ऋषि के आश्रम में पहुंचे और उन्होंने अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त करना चाहा, प्रत्येक जिज्ञासु ऋषि ने एक-एक मूल प्रश्न किया इस प्रकार प्रश्नोपनिषद् छः खण्डों में विभक्त है। पिप्पलाद ऋषि ने उनकी शंकाओं का समाधान किया मूल रूप से उनके प्रश्न तप, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा, रथि, प्राण, वक्षिणायन, उत्तरायण, पितृयाण, देवयाण, कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष षोडश कलाएँ इत्यादि से सम्बन्धित थे। ये सारे प्रश्न आज भी उतने ही सार्वक छः जितने उस समय थे। लेकिन इन जिज्ञासु द्वारा जिज्ञासा उत्पन्न करने पर पिप्पलाद ऋषि ने सबसे पहली बात जो कही वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है —

ताङ्ग स ऋषिरुद्वाच भूव एव तपसा बहुवर्येण श्रद्ध्यार
संवन्तसरं संवत्स्यथ वयाकामं प्रश्नलाप्युच्यत
श्रद्धि विज्ञास्यामः सर्वं ह यो वक्ष्याम इति ॥१॥

ऊर्ध्व — पिप्पलाद ऋषि ने कहा — तुम लोग तपस्वी हो परन्तु एक वर्ष और तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा पूर्वक मेरे समीप निवास करो। उसके बाद अपनी-अपनी इच्छा अनुसार प्रश्न करना, यदि मैं उन प्रश्नों का उत्तर जानता होऊँगा तो अवश्य ही सब कुछ बतला दूँगा।

व्याख्या — छः ऋषि पुत्र पिप्पलाद ऋषि के पास उन्हें गुरु रूप में धारण करते हुए पहुंचे लेकिन गुरु ने उन्हें अपने पास एक वर्ष रहने को कहा ताकि वे यह देख सकें कि इन छः ऋषि पुरुषों में कितनी क्षमता है। उन्होंने तीन बातें ही कहीं— तप, समर्पण और श्रद्धा, इनके साथ मेरे पास रहना। शरीर की साधना का नाम तप है, मन की साधना का नाम ब्रह्मचर्य तप संकल्प विकल्प में उलझा रहता है या इसमें से निकल

कर सत्य निश्चय पर पहुंचता है और जब तक की उलझन से निकल कर सत्य की खोज में डट जाता है तो उसे श्रद्धा कहते हैं शिष्य बनने के लिए इन तीन गुरुओं की आवश्यकता अवश्य ही रहती है। जिन तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा के शिष्य गुरु का ज्ञान पूर्ण रूप से आत्मसात नहीं कर पाता अपने पास रखकर एक वर्ष में गुरु यह लेख लेते हैं कि शिष्य में कितनी क्षमता का विकास हुआ है। उसमें निष्ठा कितनी है, वह ज्ञान प्राप्ति के लिए वह कितना तप कर सकता है, जाग्ना और आन्तरिक रूप से उसमें कितनी श्रद्धा है। जिज्ञासु से वह शिष्य बनने के मार्ग पर किस प्रकार आगे बढ़ रहा है इन सब स्थितियों के लिए ही गुरु शिष्य को अपने पास रखते हैं।

इन स्थितियों के रहने एक वर्ष के पश्चात उन्हें प्रश्न पूछने की आज्ञा प्राप्त होती है और प्रश्नम प्रश्न कृत्य के पुत्र कवन्धी बतते हैं।

अर्थ कवचधी कत्तवावन उपर्युक्त व्यपच्य
भ ज व न
कुलो ह वा इमा: प्रजा: प्रजाधन्त इति ॥२॥

अर्थ — हे भगवन् सृष्टि के प्रारम्भ में प्रजा अर्थात् जो कुछ भी उत्पन्न हुआ दिखता है — किससे उत्पन्न होता है?

व्याख्या — शिष्य पूछता है कि इस चराचर जगत में पूरुष, स्त्री, पशु, पक्षी, जलचर, नभचर इत्यादि विश्वाई तो अवश्य देते हैं लेकिन ये उत्पन्न कैसे हुए क्या सुषिट प्रारम्भ से ही ऐसी थी जब तक किसी वस्तु के उत्पत्ति का रहस्य का ज्ञान नहीं होता, तो उस वस्तु के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते। उत्पत्ति में क्या सहयोग हुआ इसीलिए प्रत्येक मनुष्य को चाहिए किसी भी वस्तु के बारे में आझा जानकारी प्राप्त करने से पहले उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में अवश्य जाने। भवन के सम्बन्ध में जानने से पहले उसकी नींव के सम्बन्ध में जानना आवश्यक है।

किसी भी मनुष्य के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी उसके कुल गौत्र इत्यादि की जानकारी प्राप्त कर ही इसके बारे में विचार किया जा सकता है। केवल बाह्य आवरण देखकर निर्णय करना उचित नहीं है।

तस्मै स होवाच मिथुनसुत्पादयते ।
अर्थात्यो ह वै प्राणो तस्मान्मूलिरिव रथि: ॥
अथादित्य उवद्वन्द्वत्प्राची . . . रथिष्य भूलिथते ॥
स एष दैश्वामरो तदेतद्वाम्बुद्धम् ॥
विश्वस्त्रय इशिणः प्रजात्यसुवद्यत्येष लूर्धः ॥
संवत्सरो वै प्रजापति: . . . एष ह वै रथिष्यः पितृव्याणः ॥
अथोत्तरेण तपसा निरोधस्तवेष शस्त्रोक्तः ।
उत्तरोरत्रो वै प्रजापति: रत्वा संयुज्यन्ते ॥
अर्घं वै प्रजापतिस्ततो प्रजा: प्रजाधन्त इति ।
तेषामस्तौ विश्वजो ब्रह्मस्तोको . . . त भावाव चेति ।

अर्थ — अष्टि पितृताद ने हम प्रश्न का उत्तर दिया कि इस चराचर जगत के स्वामी प्रजापति को जब प्रजा की उत्पत्ति की कामना हुई तो उन्होंने 'तप' किया तप के पश्चात उन्होंने 'मिथुन' नाड़े अर्थात् 'रथि' और 'प्राण' को बनाया



प्रजापति ने कहा कि मेरी भिष्णु-पितृ प्रकार की प्रजा को 'रथि' और 'प्राण' उत्पन्न करेंगे।

आवित्य प्राण शक्ति है, चन्द्रमा रथि शक्ति है, भोक्तृ शक्ति को बढ़ाने वाला सूर्य है, भोग्य शक्ति को बढ़ाने वाला चन्द्रमा है, इन्हीं के सहयोग से विभिन्न प्रकार की सृष्टि होती है। संसार में जो कुछ मूर्ति-अमूर्ति दिखता है वह भोग्य है जबकि प्राण शक्ति तो ब्रह्म ही है। प्राण शक्ति ही भीका होने के कारण भोग्य शक्ति का वरण करती है। सूर्य उदय होने पर पूर्व विश्व में प्रवेश करता है, उसमें जो प्राण शक्ति है वह अपनी किरणों में ढालकर दक्षिण पश्चिम उत्तर सभी दिशओं में किरणों के माध्यम से विस्तारित कर देता है। चन्द्रमा अर्थात् रथि शक्ति को भी प्रकाश सूर्य से ही प्राप्त होता है।

सूर्य अन्ने प्राण शक्ति है यही प्राण शक्ति सम्पूर्ण विश्व को अपने-अपने काम में चलने की प्रेरणा देती है। सूर्य ही

न्वरण है, किरणों वाला है, जात वेदस है, परायण है, सूर्य के द्वारा ही समव्य अर्थात् काल का विभाग होता है, छः मास तक सूर्य पूर्व में उदय होकर दक्षिण दिशा से होते हुआ पश्चिम में उदय होता है इसे दक्षिणायन कहते हैं, छः मास तक उत्तर की ओर जाता हुआ अस्त होता है उसे उत्तरायण कहते हैं, उत्तरायण काल में इसकी पृथि क्रिया का बाल है, दक्षिणायन भौम्य काल है, दक्षिणायन के समय मनुष्य में भोग की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। उत्तरायण में त्याग और निवृत्ति की भावना प्रबल होती है जो दक्षिणायन को छोड़ कर उत्तरायण मार्ग से चलते हैं, वे तप ब्रह्मचर्य और श्रद्धा और विद्या के सहाये आत्म विश्वास प्राप्त कर लेते हैं। उत्तरायण मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अपने जीवन में लालसाओं के अनेकों मार्ग पर भटकता नहीं है।

सूर्य अर्थात् संवत्सर से ही मास कृष्ण पक्ष शुक्ल पक्ष की मणना की जाती है। दिन और रात भी प्रजापति के रूप है दिन 'प्राण' है और रात 'रथि' है। दिन में जो रति करते हैं उनके प्राण सुख जाते हैं रात्री में जो रति करते हैं वे ब्रह्मचर्य पूर्वक ही रहते हैं क्योंकि रात्रि रथि है और और राति भी रथि है।

अन्न भी प्रजापति सूर्य का ही रूप है अन्न से ही वीर्य उत्पन्न होता है उसी से ही प्रजा उत्पन्न होती है। जो केवल रथि क्रिया में प्रवृत्ति मार्ग के पथिक है संसार चक्र में ही भटकते हैं जो उत्तरायण प्राण मार्ग देव यान निवृत्ति मार्ग के पथिक है वे ही ब्रह्म लोक को पाने हैं शुद्ध निर्मल ब्रह्मलोक तो उनका है, जिनमें माया रूपी कुटिलता नहीं है। शुद्ध मन से अपना कार्य सम्पन्न करते हैं।

व्याख्या — इन प्रश्नों के उत्तर को ध्यान से समझो जीवन के दो महत्वपूर्ण तथ्य सूर्य और चन्द्र तन्व ही है इसे स्पष्ट रूप से जानकर ही व्यक्ति सृष्टि क्रम को समझ सकता है सृष्टि में क्रिया उग्र रूप में आकर त्रियुत्तम से अनेकता में परिवर्तित होती है। प्राण धन शक्ति है और धन शक्ति (positive) और रथि नक्षत्र शक्ति (negative) है, प्राण active शक्ति है और रथि passive शक्ति है, जब सूर्य की शक्ति से ही सभी प्राणियों में शक्ति है जिसके जीवन में सूर्य तत्व क्षीण हो जाता है तो वह वासनात्मक मार्ग पर जाने चलने लगता है। सूर्य विष्वरूप है और इस संसार में जो कुछ भी है वह सूर्य की प्राण पर किरणों के प्रभाव स्वरूप ही है। सूर्य के प्रभाव से ही सारी वस्तुएँ अपना प्रभाव लिखती हैं। उत्तरायण के समय जो व्यक्ति इष्ट आपृथि अर्थात् यज्ञ दोग, बान तप सम्पन्न करते हैं वे भौम्य लोक अर्थात् लघि लोक को जीत लेते हैं। दक्षिणायन के समय

मनुष्य में भोग प्रवृत्ति प्रबल होती है उस समय मनुष्य विषय वासनाओं में पूर्ण प्रवृत्त हो जाता है। दक्षिणायन और उत्तरायण तो छः-छः मास रहते ही हैं परन्तु अपने हवय में उत्तरायण को हर समय बनाये रखना ही मनुष्य का लक्ष्य है। रथि मार्ग सकाम जीवन है। और जीवन की समाप्ति के बाद भी वह व्यक्ति धटकता ही है। प्राण मार्ग आवित्य लोक का जीवन निष्काम जीवन है, जिसमें प्राण शक्ति मनुष्य को अमृत मार्ग की ओर ले जाती है जो अवय भाग है परम मार्ग है। कृष्ण पक्ष रथि है और शुक्ल पक्ष प्राण है। इसलिए शुक्ल पक्ष में योग, तप, यज्ञ अधिकाधिक कर कृष्ण पक्ष के दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। रथि मार्ग के उपासक के जीवन में हर समय कृष्ण पक्ष ही रहता है। यहां तक स्पष्ट किया गया है संतान उत्पत्ति की क्रिया में भी दिन में रति करना अपनी प्राण शक्ति को नष्ट करता है। प्राण शक्ति की जाग्रति से प्राण जाग्रति के मार्ग में तप, ब्रह्मचर्य और सत्य निष्ठा आवश्यक है वे ही अपने जीवन में परम तत्व को प्राप्त कर सकते हैं।

* * *

द्वितीय प्रश्न

अथ हेत्तं भारवी वेदभिः . . . युवरेषां वरिष्ठ इति ।
तस्मै स होवाचाकाशौ . . . वाणमवृत्य विधारव्यामः ।
तस्मै स होवाचाकाशौ . . . वाणमवृत्य विधारव्यामः ।
तात्त्वरिष्ठः प्राणः . . . तेऽश्रद्धान्ना वभूवः ॥
सोऽभिमानाद्वृत्यमुत्कमतः . . . प्रीताः प्राणं स्तुवन्वन्ति ।
एषोऽज्ञिलस्तपत्वेष . . . सदस्तपव्यामूत्तं च यत् ।
अरा इव रथज्ञामरो . . . यज्ञ शत्रं ब्रह्म च ॥
या ते तनुवाचि . . . सिद्धां तां कुल मोत्कमीः ।

अर्थ — कन्य के पुत्र कवनी के प्रज्ञ के पश्चात रघु गीत्र में उत्पन्न वेदभिं ने पिष्टलाव ऋषि से पूछा कि प्रजा किस से उत्पन्न होती है। इस प्रश्न का तो आपने उन्नर दे दिया अब कृष्ण करके यह समाधान कीनिये प्रजा के उत्पन्न होने के पश्चात कोन देव — शारण करते हैं, कोन इस प्रजा को प्रकाशित करते हैं, इन देवों में कौन सबसे 'मुख्य' है। 'सृष्टि का धारण' और किस शक्ति के कारण यह सृष्टि अपने वर्तमान विकसित रूप में पहुंची है। अनेक शक्तियों में कौन सी शक्ति मुख्य है।

ऋषि ने समाधान करने द्वारा कहा कि ये सृष्टि दो प्रकार की हैं। इन दोनों को ही 'वाण' कहा जाता है, वाण अर्थात् जीवन निश्चित न हो जो है, और न भी रहे संस्कृत में 'वा' का अर्थ सहायक 'अन' का अर्थ है प्राण। ब्रह्मण्ड में जड़ जगत

जार्थात जो वस्तुएं स्थिर हैं, उनके विषय में आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, एक दूसरे से संबंध करने लगे और कहने लगे कि हम नड़ जगत का धारण कर रहे हैं। पिण्ड अर्थात् चेतन जगत के विषय में वाणी, मन, चक्ष, श्रोत्र, इन्हने लगे कि हम पिण्ड को धारण कर रहे हैं।

इस स्थिति में सर्वश्रेष्ठ प्राण ने कहा कि मैं अपने आप को पांच भागों में विभक्त करके 'वाण' रूपी जड़ और चेतन दोनों को धारण कर रहा हूँ। जब इस प्रकार की स्थिति में पंचमहाभूत पृथ्वी, जल, आकाश, वायु, अग्नि और पांच इन्द्रियों ने अश्रद्धा प्रकट की तो प्राण जाने लगा प्राण के निकलने के साथ ही पंच महाभूत और पंच इन्द्रियां भी जाने विखाई दिये प्राण ठहर गया तो पंचमहाभूत और पिण्ड की पंच-इन्द्रिया रुक गईं।

अतः प्राण ही धन के रूप में दान दे रहा है, प्राण ही वायु के रूप में जीवन दे रहा है, प्राण ही पृथ्वी के रूप में आश्रय दे रहा है। प्राण ही रथ के रूप में भौत्य जगत को उत्पन्न कर रहा है। संसार की सारी स्थिति प्राण के चारों और टिकी है। संसार को धामने वाली भौतिक शक्ति 'क्षत्र' और आत्मिक शक्ति 'ब्रह्म' है ये दोनों भी प्राण शक्ति पर ही आकृति हैं।

प्राण ही प्रजापति का स्वरूप है, प्राण ही गर्भ में विचरण करता है, प्राण ही अग्नि से भी अधिक विव्यु गुणों वाला है। प्राण ही अपने तेज से छन्द है, अपने रक्षण से रुद है, संसार की समस्त ज्योतिर्यों का स्वामी सूर्य के रूप में स्थिर है। प्राण ही वाणी श्रोत्र, चक्षु और मन में फैला हुआ है, अतः हे प्राण! जिस प्रकार माना पुत्र की रक्षा करती है, वैसे ही आप हमारी रक्षा करें।

व्याख्या — पिप्पलाद ऋषि ने इस महान प्रश्न के उत्तर में ज्ञानप्रद विवेचन किया है, जहां प्राण है वहां सब कुछ स्थित है, जहां प्राण है वहां आत्मा का निवास है, और जहां आत्मा है वहां ईश्वर है। प्राण की शक्ति से ही पंचमहाभूत और पंचइन्द्रियां संचालित होती है। प्रकृति ही अथवा पुरुष अपने आप में कितना ही गर्व करे जब तक प्राण शक्ति नहीं है तब तक वह व्यर्थ है। प्राण शक्ति का ही स्वरूप प्राणश्चेतना है। जिसने अपनी इस चेतना को समझ लिया वह व्यक्ति भौतिक जगत में और आध्यात्मिक जगत में संतान नहीं हो सकता।

प्राण सदेव चैतन्य तत्त्व है, प्राण की उपेक्षा करके जो व्यक्ति केवल इन्द्रिय वृद्धि की और अग्नसर होता है वह अपनी आत्मिक ऐश्वर्य खो देता है और जो केवल आत्मिक ऐश्वर्य की

और ध्यान देकर प्राण के स्वरूप केवल भौतिक ऐश्वर्य के और ध्यान देता है वह भी अपना जीवन व्यर्थ में गंवा देता है।

प्राणों की रक्षा करना मनुष्य के लिए संभव है, लेकिन प्राण केवल अवास-प्रश्वास ही नहीं है, प्राण वह विव्यु स्थान है जहां से सारी क्रियाएं सचालित होती है उस संचालन के मूल बिन्दु अर्थात् प्राण को जिसे ईश्वर ने प्रवान किया है, और मनुष्य के देह में धारण है उसी प्राण से सौदेव प्रार्थना की जाती है कि हमारी प्राणश्चेतना सदेव जाग्रत रहे और हमारे प्राण हमें भी अर्थात् भौतिक ऐश्वर्य और प्रज्ञा मानसिक तथा आत्मिक ऐश्वर्य प्रवान करें।

सदगुर अपने शिष्य को चेतना दृढ़ बनाते हुए उसके प्राणश्चेतना को जाग्रत करते हैं। और जब शिष्य की प्राणश्चेतना जाग्रत हो जाती है तो उसे भौतिक ऐश्वर्य और आत्मीक ऐश्वर्य दोनों ही प्राप्त हो जाते हैं।

प्रश्नोपनिषद् जीवन की प्रत्येक जिजासा का समाधान करने वाला महान उपनिषद् है इस स्थान में केवल वो ही प्रश्नों को, प्रश्न के उत्तर और उनकी व्याख्या की गई है। साधक इसके प्रत्येक शब्द को ध्यान से मनन करें शेष चार प्रश्नों की व्याख्या अगले अंक में की जायेगी।

तेदोक्त्वं प्रार्थना

व उरात्मदा बलदा वस्त्व विश्व उपासते प्रशिष्वं वस्त्वं देवः ।
वस्त्व तत्त्वात्मुतं वस्त्वं मृत्युः कस्मै देवाद् हविषा विधेम ॥

अर्थ — हम अपना पूर्ण समर्पण कर उस सुख स्वरूप देह की आराधना करें, जो हमारे आत्म स्वरूप को देने वाला है। यारे देव जिसके प्रशासन के आकृति है, जिसकी सबोच्च आज्ञा में चलते हैं, उस परमात्मा कि शरण और आश्रय पाना अमर हो जाना है। मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है। उसी सुख स्वरूप देव का हम पूर्ण त्यजनमय भाव से पूजन आराधना करते हैं।

बलदे लिङ्म चक्षुषो हववस्त्वं मनसो वातितृण्ण वृहस्पतिर्म नर्दधातु । यं त्वे भवते भुवनेस्व वस्त्वति ॥

अर्थ — मेरे बाह्य इन्द्रियों में दोष है, हृदय और बुद्धि के गहरे घाव, मलिनता, तुर्बलता को देखकर घबरा जाता हूँ, हे वृहस्पति जब आप मेरी सब बुटियों को और न्यूनताओं को दूर कर दें तभी मैं पूर्ण पुरुष बन सकूँगा।

मेष

उपस्थित है स्थिति में रहना होगा स्थिति आप किसी जीवनसाथ है। सतान सभी आप सम्पन्न करे तृष्ण

के सम्पन्न अर्थम होने वाले। मात्र की प्रवलत रखें। दृग्म आवश्यक होगी। अदा से बचें। या सम्पन्न करें मिथुन

व भौतिक साधनात्मक पर सोच-त्रिप्रे की स्थिति आधिक वानावरण त्रिप्रे आत्म वैष्णव नैकरी में वाले, इस सा कार्य

का परिव्राम आयम प्रव अन्तर्यामी है

वर्ष की
ता है।
लकिन
स्थान
न के
या है,
गा की
हमारे
तथा
उसके
गा की
जीर

म
म
ते
ने

॥

प्रवृत्ति
को
है,
रण
गाम
भव्य
सेरे
॥

गीर
गाम
जीर

मेष

(पू, घे, घो, ली, लू, लो, आ)
यह माह कुछ लहू-मीठी वायों के साथ आपके समझ उपलब्ध हो रहा है, संयम की आवश्यकता हो गई। कारोबारी व जरिक शिथित में अनुकूलता प्राप्त हो गई, मगर दाकुओं से आपको सावधान रहना होगा क्योंकि शत्रु आप पर धात कर सकते हैं, वार-विवाद की स्थिति आपे पर संघर्ष बरतें। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा इस समय आप किसी पर भी एक दम से विश्वास न करें आपको धोखा होना जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा, किसी पर भी अस्त्रित होना व्यवहर है। संतान की ओर से प्रसन्नता का समाचार मिलेगा तथा परिवार में सभी आपका सहयोग करेंगे इस समय आप 'महाकाली साधना' सम्पन्न करें, इस माह की शुभ तिथियाँ ४, ११, १९, २५ हैं।

वृष

(ई, झ, पू, गा, ती, धु, वे, वो)
इंद्रवर की कल्पगायी दृष्टि आपके ऊपर है, अतः श्रेष्ठ कार्यों के सम्पन्न करने का समय आ गया है, नये कार्य, व्यवसाय आदि अत्यधिक होंगे, मध्यन निर्माण, जमीन-जायदाद के क्रय-विक्रय के योग बरतें। माया आपके ऊपर अनिरिक्त प्रभाव इलेगी और भीतिकता की प्रबलता होगी, संयम से काम ने व साधनात्मक चिंतन इनाये रखें। दायर्मन्त्र सुख में बृद्धि होगी तथा परिवार को भी समय देना आवश्यक होगा। मित्र साधा छोड़ न येंगे, नौकरी आदि में पहोचन देंगी। अदालती मामलों में भी अनुकूलता प्राप्त होगी, मध्यन नये विवादों से बचें। यात्रा में सावधानी बरतें। इस माह आप 'मुवनेश्वरी साधना' सम्पन्न करें, इस माह की शुभ तिथियाँ ५, १२, १३, २१, २८ हैं।

मिथुन

(ज्य, ग्री, कु, ध, छ, तो, ह)

इस माह कठोर जीवनी शक्ति की आवश्यकता हो गई। संयम व मौलिक सुझ-बुझ की आवश्यकता हो गई। यदि आपके पास साधनात्मक शक्ति नहीं है, तो लक्ष्मी आप से दूर ही रहेगी। अनुबंधों पर सोच-विवाद कर ही निर्णय लें। दायर्मन्त्र सुख में बृद्धि होगी अपने प्रेम को स्थिरता दें। मुकुवनी यह वाद-विवाद से बचें। राज्यकादा आपके समक्ष जा सकती है, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, किसी धार्मिक स्थान पर यात्रा का योग बनेगा। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। यहां चलते समय सावधानी बरतें। श्रमिक वर्ष के लिए समय बहुत ही अच्छा है उनके सोचे हुए कार्य पूरे होंगे तथा नौकरी में पहोचन होगी। इस माह आप 'छिपमरता साधना' सम्पन्न करें, इस माह की अनुकूल तिथियाँ ३, ११, १८, २१, २८।

कर्क

स्वयं को जानना, अपने ऊपर विश्वास करना और स्वयं का परिश्रम — ये तीन कुनियाँ हैं, जो आपके जीवन को एक नया आयाम प्रदान कर सकती हैं। अनुष्ठान नाद का गुजराण आपको अन्तर्यात्रा के एक सुखद एहसास से परिवित करना चाहता है, खुबान-

पान पर विशेष ध्यान दें, अन्यथा स्वास्थ्य प्रतिकूल होकर चिकित्सा व्यय को बढ़ा सकता है। गुहात्मा सुख की न्यूनता रहेगी, तनाव उत्पन्न होगा, अतः अपनी संगीनी के प्रति अपने उत्तरदायित्वों पर ध्यान दें। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा व अदालती मामलों में विजय प्राप्त होगी। कारोबारी व्यवसन्ना छोड़नी और नौकरी व इन्टरव्यू में सफलता तथा पर्योग्यता के अवसर प्राप्त होंगे। धार्मिक यथं मागलिक कार्यों के प्रति आप में उत्साह रहेगा। इस समय आप 'कुण्डलिनी जागरण साधना' सम्पन्न करें। आपके लिये शुभ तिथियाँ हैं — ५, ११, १९, २५।

सिंह

(गा, मी, मू, भे, भो, टा, टी, धु, वा)
समय को आपका इन्तजार है और वह आपके पुराने जल्दी पर मरहम लगाकर नवीन आयामों को आपके काममें तले विद्युर धेने को उत्सुक है। धन की तो कमी रहेगी, परन्तु दुर्गमार्मा परिणामों वाले नये अनुबंध आपको सांत्वना प्रदान करेंगे। शुभचिन्तन की भित्रों की संख्या बढ़ेगी और चतुर्दिक आपका प्रभाव व्याप्त होगा, अदालती मामलों में भी आपके पक्ष में होंगे; आपका साधनात्मक चिंतन प्रबल है, ऐसे में संयम व नियंत्रण आवश्यक है नियंत्रण अपना भी और अपनी लक्ष्मी का भी। जमीन-जायदाद का क्रय-विक्रय कर सकते हैं। आपके साधनात्मक चिंतन के लिए अत्यन्त उपयोगी है 'शतिनी साधना' एक नई दिशा आपके समझ प्रसन्नत करेंगी। इस माह की अनुकूल तिथियाँ हैं — ५, १३, १८, २२, २८।

कठल्या

(टो, पा, पी, पू, ष, य, ठ, ये, घो)
आपका व्यवसाय आपकी वज्र से सम्पादित होगा, नये अनुबंध भी होंगे एवं नक्की की आप पर विशेष कृपा रहेगी, परन्तु जीवन सिर्फ भोग और स्वार्थ का नाम नहीं है, स्व की उत्तिके साथ-साथ समाज की उत्तिकी महत्वपूर्ण है। आप समाज को एक नई दिशा देने में समर्थ हैं, अपनी ऊर्जा का उचित उपयोग करें, लम्बित अदालती मामलों में आपको विजय श्री प्राप्त होगी। संतान आपको गौरवनिवात करेगी, परन्तु जीवनसाथी से तालेमेल बनायें। धैतिक जीवन में भी आप प्रेम कर सकते हैं, परन्तु ईश्वर व गुरु से प्रेम आपके जीवन को ऊर्ध्वगमी बनायेगा। यह सही है, कि दुर्घटनाओं से आप विचलित नहीं होते, फिर भी सावधानी बरतना ज्यादा श्रेयशक्ति है। आपके आन्तरिक व बाह्य शत्रु आप पर हावी होने का प्रवत्तन करेंगे, इस समय आप 'बगलामुखी साधना' सम्पन्न करें, इस माह की शुभ तिथियाँ — ५, १३, १५, २३, २८।

द्वितीय

(गा, गी, रु, ता, ती, तू, ते)
किसी मधुर गीत की स्वर लहरियाँ आपके आस-पास के बातावरण में छुली दूँही हैं, लेकिन इहें आप अपने बाहरी कानों से नहीं सुन पायेंगे, इसके लिए आपको छव्य की गहराइयों में उत्तरन पड़ेगा। यह थोड़ा कठिन तो है, लेकिन असम्भव नहीं। संयम व मौलिक सूक्ष-

सर्वार्थ	अमृत, गंगा, पुष्प, लिङ्गुलन, शिवेश योग
इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पूर्ण ले रखते हैं।	
20 चित्तम्बर	सर्वार्थ शिवि योग, शिव योग
30 चित्तम्बर	सर्वार्थ शिव योग
2 अक्टूबर	सर्वार्थ शिवि योग
5 अक्टूबर	सर्वार्थ शिवि योग
13 अक्टूबर	सर्वार्थ शिवि योग

बुध की आवश्यकता होगी। नवीन व धूराने अनुबंध लाभ प्रदान करेंगे तथा सहनोग व मान-साधनान की विधियाँ बनेंगी। प्रेम में गोपनीयता आवश्यक है। आर्थिक व्यवहार बेंगा, नवीन मुक्तवर्मों या नवीन नायदुर के कार्य-विकल्प से लें। धारा फलान एक ही दोगी। शत्रु आप पर जागी होने का प्रयत्न कर रहे हैं इसलिए इर कठम फूक-फूक कर रहे हैं किसी भी समय आप पर घात-प्रतिघात कर सकते हैं। इस समय आप 'धूमावती साधना' सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियाँ - ३, १३, २३, २५, २७।

त्रृष्णिरक्त (तौ, नौ, गौ, लू, नै, लौ, वा, वी, वृ)

यह समय आपके लिए बहुत ही नायदुरक लाभ दाना आपके सोचे हुए रथी कार्य पूरे होगे तथा परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा नैकरी में विद्युति होगी तथा अधिकारी आपके कार्य की रक्षाहना करेंगे। अभिनव वर्ण के लिए समय उठिनाइन दिन दोगा कार्यी संघर्ष के बावजूद नायदुरता उनके शाश्वत लेखी तथा नेन देन के मामले संयम से बाज लेने नहीं तो हानि होगी विद्युति वर्ग के लिए समय बहुत ही अच्छा रहेगा वह मेहनत करें तो सफलता उनके हाथ लगेगी इस समय आप 'लकड़ी सूखम स्तोत्र' का एक शर पाठ अवश्य ही करें। अनुकूल तिथियाँ - ४, १२, १८, २३, २५, २७ हैं।

थृष्णु (वे, वो, भा, भी, वा, फा, डा, भे)

संघर्ष से जूझना व सफलता प्राप्त करना आपकी प्रकृति है, वहीं आत साधनाओं के सम्बन्ध में भी लागू होती है, आप अख्यार्थिक नायदुरां सम्पन्न करें और असफल हो जाये, यह असन्भव है, खाल कर इस माह में। भौतिक और आव्यापिक दोनों ही दोनों में आप नये आयानों को स्पर्श करेंगे और नवीन अनुबंध व नवीन साधनाएं आपको बुलंदियों प्रदान करेंगी। आपके परिवार को भी आपकी आवश्यकता है, जीवनसाथी सहित प्रनेत्रक सम्बन्ध पर ध्यान देना आपका कर्तव्य ही है। बाधाएं भी आयेंगी, परन्तु उनसे खेलना आपका शौक है। इस माह आप 'काल भैरव साधना' सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियाँ - ३, १०, १५, २१, २५।

मक्तुर (ओ, जा, जी, रूप, रुदे, रुपे, जा, भी)

समय उत्तम रहेगा तथा आप अग्र अवश्यक रह सक्ते हैं उपयोग करें तो सफलता आपको मिलेगी। विजेता में आपके नाम मिलेगा तथा व्यापारी लोग आपके कार्य से खुश रहेंगे तथा परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। आप अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें क्योंकि क्रोध करने पर आपको भयकर जानि हो सकती है। व्यापारी वर्ग के लिए समय बहुत ही मध्ये और स्वर्णिम रहेगा उनके कार्य में दृढ़ ज्ञानी तथा उनका व्यापार और भी दूर तक फैलेगा लोग उनके

ज्योतिष की दृष्टि से सितम्बर - २०००

इस समय देश की स्थिति सामान्य रहेगी क्योंकि भारतवेश आक्रमण करने की कोशिश कर रहा है। देश में छोटी सीटी घटनाएं होंगी जिससे धार्ढी होनी होनी राजनेतिक दृष्टि से धोड़ा दबाव रहेगा। कुछ सदृढ़ फेसले राह के हित में होंगे। कुछ बाहरी देश भी विशेष समझौते करेंगे तथा सहायता करेंगे। ज्योतिषीय दृष्टि से समय अच्छा रहेगा।

कार्य की सशाहना करेंगे तथा मिश्री से सहयोग प्राप्त होगा। इस समय आप 'मातृंगी साधना' सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ ५, १२, १५, २८।

कुम्भ

समय सामान्य है गंभीर से जान ले। स्वास्थ्य में गड़बड़ी रहेगी, मगर किसी से जनावर्यक सहायता की मांग न करें। शुभमय नियन्त्रण परेशान करेंगा तथा कारोबारी मामलों में बढ़चाने आयेंगी। बाधन प्रयोग तथा व्यापार के समय साधना बरसे। किसी दो विना हुआ वातावरण प्राप्त होगा। ब्रह्म के लेन देन से बढ़े। समाज में स्थिति सुदृढ़ होगी तथा सामाजिक कार्यों में शुक्राव दोगा। इस माह में विवेष सफलता प्राप्ति के लिए तथा अनावश्यक परेशानियों से बचने के लिए 'तारा महाविद्या साधना' सम्पन्न करें। आपके लिए ५, १०, १६, २२, २४।

मीठ

(दी, दू, ल, झ, दे, दो, वा, वी)

समाज में नान-साधनां की स्थिति बनेगी तथा आपके कार्य की लोग सरहना करेंगे, जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा आप यदि मामूली परिश्रम और करें, तो आपके लक्ष हुए कार्य शीघ्र ही पूरे होंगे। आक्रमिक धर्म लाभ की स्थिति प्रदान होगी। किसी संस्था से जुड़ाव दोगा। जीवनान्तरक दृष्टि से समय अवश्यन्त सफलतावाच्यक चल रहा है। सुख-समृद्धि के साधनों में विस्तार होगा। रुक्मा हुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी। दिनों की ओर से सहयोग की आशा न करें। इस समय आप शिशकि साधना सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ २, ८, ११, २१, २३, २८।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

- 16 चित्तम्बर - अश्विन कृ, पक्ष शनिवार कन्या संक्रान्ति
- 17 चित्तम्बर - अश्विन कृ, पक्ष शनिवार चतुर्थी आश्व
- 23 चित्तम्बर - अश्विन कृ, पक्ष शनिवार गुरुवारक देव नवोत्तमि
- 24 चित्तम्बर - अश्विन कृ, पक्ष शनिवार एकावरी
- 27 चित्तम्बर - अश्विन कृ, पक्ष शुक्र वार पितृ विसर्जन, अमावस्या
- 28 चित्तम्बर - अश्विन शुक्रवार पक्ष शुक्रवार शन, नवशक्ति प्रारम्भ
- 2 अक्टूबर - अश्विन शुक्रवार पक्ष शुक्रवार महात्मा गांधी जयंती
- 5 अक्टूबर - अश्विन शुक्रवार पक्ष शुक्रवार श्री दुर्गा अष्टमी
- 6 अक्टूबर - अश्विन शुक्रवार पक्ष शुक्रवार श्री दुर्गा नवमी
- 7 अक्टूबर - अश्विन शुक्रवार पक्ष शनिवार विजयादशमी दशहरा
- 9 अक्टूबर - अश्विन शुक्रवार पक्ष मंगलवार पापकूपा एकावरी
- 13 अक्टूबर - अश्विन शुक्रवार पक्ष शुक्रवार शरव पूर्णिमा
- 16 अक्टूबर - अश्विन शुक्रवार पक्ष सोमवार गणेश चतुर्थी

प्रकार से।
लक्ष्य प्राप्त
नहीं, लेकिन
ही क्यों व
अच्छे वर्ष
सुविधा पूर्ण

क्या करें
लक्ष्य - लक्ष्य
उलझना
रहते हैं,
अपने ढंग
व्यक्ति के
का जान दें
कम फला
असफल

भगवती म
मानकर उ
दस महार
नगदम्बा

जाक्षत करना है क्रियाण विण्य आधार है

इच्छाधी सहस्रैशी रथोग्र

जीवन की सार्थकता होती है इस जान में, कि किस प्रकार से इम कम से कम समय में ही जीवन के सभी प्रारम्भिक लक्ष्य प्राप्त कर ले। यह सच है कि इच्छाओं का तो कोई अन्त नहीं, लेकिन इस जीवन की भूलभूत इच्छाएं और उन्हें हच्छाएं ही क्यों कहे वे तो जीवन की आवश्यकताएं होती हैं, चाहे वह जच्छे वरवत्र की बात हो, या अच्छे आवास की, या फिर सुख सुविधा पूर्ण जीवन के किसी भी अंग की।

कौन सा उपाय करें, कौन सी साधना करें, ऐसा क्या करें कि हमारी साधना निश्चित रूप से सफल हो, हमें लम्बे-लम्बे अनुष्ठान न करने पड़े, हमें नटिलताओं में न उलझना पड़े - ये सभी प्रश्न साधक के मन में उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं, जहां तक साधनाओं की आत है वहां प्रत्येक साधना अपने ढंग से महत्व पूर्ण होती है और केवल सदगुरुदेव ही व्यक्ति के संस्करणों को समझ कर उसे उचित साधना या प्रयोग का जान दे सकते हैं, यह अवश्य ही सकता है कि कोई साधना कम फलदायक हो और कोई पूर्ण सफलतादायक हो, लेकिन असफल तो कोई साधना होती ही नहीं।

देवराज इन्द्र द्वारा सचित इस साधना में, जब उन्होंने भगवती महालक्ष्मी को दस महाविद्याओं से परे एक महाविद्या मानकर उनकी सर्वथा नृतन ढंग से साधना सम्पन्न की, यीं तो दस महाविद्याओं में कमला महाविद्या साक्षात् रूप से भगवती जगदम्भा की ही महालक्ष्मी स्वरूप में साधना है, लेकिन

देवराज इन्द्र देवताओं के अधिष्ठिति कहे जावे हैं उन्हें यह वरदान भजदान विष्णु की कृपा से प्राप्त अवश्य हुआ लेकिन उनकी शक्ति का अधार है भगवती महालक्ष्मी, जिनकी कृपा से देवतों में सर्वश्रेष्ठ लोक इन्द्रस्तोक माना जाया है जहां लक्ष्मी उपरे पूरे देश और सहस्र रूपों में विश्वमान है। जहां अनन्त धन, वैभव, रत्न, उत्साह, सौन्दर्य, इस विश्वपा पड़ा है, जिसके स्त्रिए देवराज इन्द्र भी सहस्राद्धी सर्क्षी की अराधवन्न करते हैं।

देवराज इन्द्र कृत यह प्रयोग तो सर्वथा अनुठा ही है, जिसकी प्रामाणिकता और तेजस्विता अनुभव कर लेके बाद के साधक और योगीगण जीवन में इसे उतार कर।

यह एक साधना ही नहीं है, यह तो साधक के लम्बड़ में उतार कर देवराज इन्द्र का किया एक मंथन है जिससे भगवती महालक्ष्मी का सर्वथा नवीन रूप उभर कर सामने आता है यह सम्पूर्ण रूप से भगवती महालक्ष्मी का मौलिक व पूर्ण चिन्तन है, और चिन्तन के साथ-साथ देव में स्थापन ही। साधना का आधार है कि देव या देवी का अपने शरीर में स्थापन हो सके।

जहाँ महालक्ष्मी की इस देह में स्थापन हो जाय वहाँ दरिद्रता रहेगी भी तो किस स्थान पर?

यह एक स्तोत्र है जेकिन स्तोत्र से भी अधिक एक साधना है और साधना से भी अधिक है जीवन का सीमान्य किसी भी माड़ में पढ़ने वाले पुष्ट नक्षत्र के दिन की जगे वाली इस साधना में जटिलता तो कुछ ही नहीं, पुष्ट नक्षत्र से इसका विशेष सम्बन्ध होने के कारण यह एक पुष्टि वायक साधना है, वह जीवन का कोई भी पक्ष क्यों न हो। पल्नी के ल्वास्य, लच्छों की पदार्डि, अतिथियों का सत्कार, आकस्मिक खच्चों से लेकर आमोद-प्रमोद और यात्रा, ध्रुमग संक्रित मनोरंजन के सभी पक्ष तो सिमट आते हैं, इसे ही तो जीवन कहते हैं।

साधना विधि

किसी भी पुष्ट नक्षत्र के दिन प्रातः स्नान कर पीले वस्त्र पहन कर पूर्व की ओर मुख्य कर जेठे और पहले से ही प्राप्त महालक्ष्मी के चित्र को ('जो फ्रेम में माझा हो; स्थापित कर उस पर कभी भी प्रयोग ने न लाई गयी 'कमलगड़ी की माला' पहना दे, धगवती महालक्ष्मी के चरणों में केसर की बिन्दी लगाये और अक्षत समर्पित करें, यी का वीषक एवं अगरबती से बालवरण को मंगलमय बनाएं तथा एक और कलश स्थापित कर उसके मुख पर मौली चांथे, आम का पललब अथवा किसी पवित्र वृक्ष की पांच पत्तियों पर नारियल स्थापित कर इस का मंगल घट के रूप में धूप-दीप से पूजन करें।

भगवती महालक्ष्मी के चित्र के सामने चावल की एक छोटी सी ढेरी बना कर 'लघु नारियल' स्थापित करें और बगल में एक ढेरी पर 'श्री पात्र' की स्थापना करें। हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं (अपना नाम गोत्र बोलें) इस ब्रेह पुष्ट नक्षत्र पर जीवन की सम्पूर्ण रूप से पुष्टि के लिए यह दुलंभ साधना सम्पन्न कर रहा हूँ ऐसा कहकर जल नमीन पर छोड़ दें और पुनः हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ने के पश्चात पुनः सूपि पर छोड़ दें।

विनियोग

उ॒ अस्य श्री सर्व महाविद्या महाचार्त्रि योपलीय संत्र एहस्याति ऋस्य मवी पराशक्ति श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी सहस्राक्षरी सहस्र रूपाणि महाविद्याया श्री इन्द्र अस्ति गायत्र्यावि नाना उन्नर्वासि, लक्ष्मीति शक्तिरूपा श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी वेचता श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादात्मित्सहार्थ जये पात्रे विनियोगः।

४ 'सितम्बर' 2000 मंत्र-संग्रह विज्ञान '74' ४

उपरोक्त लिखित उच्चारण कर फिर चित्र के सम्मने भगवती लक्ष्मी को श्रद्धा द्युक्त प्रणाम कर निम्न महाविद्या स्तोत्र का २६ बार उच्चारण करें—

सहस्राक्षरी चित्र लक्ष्मी महाविद्या स्तोत्र

उ॒ ए हृषी हृषी श्री ए हृषी लक्ष्मी लौः लौः उ॒ ए हृषी लक्ष्मी श्री प्रथ जय महालक्ष्मी, जपदाये, विजये, सुरा नुर त्रिभुवन लिवाजे, वद्यांकुरे सर्व वैद्य तेजो लक्ष्मी विरचि संस्थिते, विधि वर्षे, सच्चिदानन्दे, विष्णु वैहावुले, महामोहिनी, लित्य वदाज तत्परे, महासुधार्णि वासिनि, महातेजो धारिणि सर्वाधारे, सर्वकारण कारिणे, अचिन्त्य रूपे, इन्द्रादि सकल विर्जर सेविते, स्वाम जगत् जायत्र परिपूर्णवद कारिणी, विजये, वद्यनिते, अपराजिते, सर्व सुन्दरि, रक्षांशुके, सर्व कोटि संकारे, अनुद्गु कोटि सुशोत्तरे, अग्निकोटि दहत शीते दम कोटि वहन शीते उ॒ कार नाव विन्दु लक्ष्मी, लिङ्गमायम भागवत्यिनि, विद्वा राज्य वारिनी, सर्व स्त्री एत एव धारिणि, सुर वच्चे, सहस्राक्षरे अवुताक्षरे, समकोटि लक्ष्मी लक्ष्मी, अत्रेक सर्व तत्त्व सर्वरूपे अवन्नत कोटि ब्रह्माण्ड जायिके, चतुर्विशति मुनि जल संस्थिते, चतुर्वश भुवन भाव विकारिणे, जगन वाहिनि, नाना मत्र शज्य विराजिते सकल सुन्दरो जण सेविते, वरणारसविन्दु, महात्रिपुर सुन्दरि, कामेश वित्ते, कलणा एव कल्पोलिनि, कल्प वृक्षादि स्थिते, विनता मणि द्रुव निवासिनी, विष्णु वक्षस्यात् कारिणे, अपिते, अमरे, अद्युपम चरिते, मुत्ति श्रेष्ठाधिष्ठायिनी, प्रसीद प्रसीद, सर्व मनोरथान् यूरुद्ध यूरुद्ध, सद्वारिषान उद्वद वैद्य सर्व द्वाह पीडा ज्वराद्य भव विद्वास्य विद्वास्य, सर्व त्रिभुवन जात वैद्य वैद्य, सोक्ष मायाग्नि दश्य दश्य ज्ञात मार्पकाश्व प्रकाश्व, अक्षाज तमो नाश्व नाश्व, धन धान्यादि विद्यु लक्ष्मी कुरु कुरु, सर्व कल्पाणाति कल्पय कल्पय मां रक्ष रक्ष, सर्वायदभ्यो लिस्तास्य लिस्तास्य, वैद्य वैद्य वैद्य साध्य साध्य ही लक्ष्माक्षरी लिद्यु लक्ष्मी महा विद्यावै नमः।

इस मंत्र को स्वयं पढ़ें और देखें कि यह मंत्र कितना अधिक नेजरवी और महत्वपूर्ण है, इसे पुष्ट नक्षत्र के दिन में केवल २६ बार मंत्र का उच्चारण करना है। विधि विधान से भगवती महालक्ष्मी की आरती सम्पन्न करें। श्री पात्र को अपने विजोरी में अथवा पीले कपड़े में बांध कर अपने पूजा स्थान में स्थापित करें कमल गढ़े माला की माला भगवती महालक्ष्मी के चित्र पर ही अर्पित रखें। साधना सामग्री - 250/-

प्राप्त
करती है
चेतना से
है, जिसमें
जिज्ञासा
जिन्हें गुण

दोषा प्रण
और सम
संकलित
है। इस
दिव्य रूप
जब शिष्य
परिवर्तित
हो

के बावजू
अपनी स
परिवर्तन
को पूर्णत
के व्यक्ति
में ऐसे स
सांख्य श

शक्तिपात्रकथा

ॐ पूर्णमिदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमिदच्चते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाद्य पूर्णमेवाय शिष्यते ॥

अर्थात् संसार में सब कुछ पूर्ण ही है, क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की ही उत्पत्ति होती है एवं पूर्ण से पूर्णत्व प्राप्त कर लेने पर भी पूर्ण पूर्ण ही रहता है।

शक्तिपात्र दीक्षा में गुरु की चुम्बकीय शक्ति कार्य करती है और शिष्य की प्रसुम कुण्डलिनी को जाग्रत कर परम चेतना से उसका साक्षात्कार करती है। गुरु वह व्यक्ति होता है, जिसके प्राण और मन ईश्वरीय सीमा में स्थित होते हैं। जिज्ञासु के प्राण और मन निम्न स्तर पर अवस्थित होते हैं, जिन्हें गुरु अपनी शक्ति से उद्धवगमी बना देता है।

शक्तिपात्र दीक्षा भारत की सनातन विद्या है। इस दीक्षा प्रणाली में गुरु शिष्य को ऊपने ही समान शक्तिशाली और समर्थ बना देता है। इसमें गुरु की शक्ति ही शिष्य में संक्रमित होती है, इसीलिए इसे शक्तिपात्र दीक्षा कहा जाता है। इस दीक्षा को प्राप्त करने के बाद शिष्य के व्यक्तित्व का दिव्य रूपान्तरण हो जाता है। कारण यह है, कि गुरु की शक्ति जब शिष्य में संक्रमित होती है, तब शिष्य का व्यक्तित्व पूर्णतः परिवर्तित हो जाता है।

दीक्षा के पूर्व शिष्य का जैसा व्यक्तित्व होता है, दीक्षा के बाद उसमें परिवर्तन इसीलिए हो जाता है, क्योंकि गुरु अपनी सुदृढ़ इच्छा शक्ति से शिष्य के चिन में मनोनुकूल परिवर्तन कर देता है। कभी-कभी गुरु शिष्य के चिन-पटल को पूर्णतः नवीन रूप में निर्मित कर देता है। इस तरह शिष्य के व्यक्तित्व का दिव्य रूपान्तरण हो जाता है। भारतीय साहित्य में ऐसे संकेत हैं, कि चिन-निर्माण की इस कला का प्रवर्तन सांख्य शास्त्र के प्रणेता कपिल ऋषि ने किया था।

शक्तिपात्र दीक्षा जायें द्वारा प्रवर्तित ऊर्जा रिष्ट्रान्ट

ऋ 'सितम्बर' 2000 मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान '75' ८

का एक अंग है। इस सिद्धान्त के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक विलक्षण ऊर्जा तरंगित रहती है। बिना इस ऊर्जा के किसी का कोई अस्तित्व नहीं रह सकता। भौतिक रूप में ऊर्जा कर सूक्ष्म रूप 'प्राण' (वायु) को स्वीकार किया गया है। प्राण में जीवन इस चेतना का समावेश होने से उसे भौतिक भी नहीं माना जाता। पूर्णतः भौतिक नहीं होने के कारण यांत्रिक उपकरणों के द्वारा इसे प्रकट नहीं किया जा सकता। प्रकृति को यह ईश्वर के अमूल्य वरदान के रूप में बिलता है।

ब्रह्माण्ड में जितने शरीरभारी प्राणी हैं, उन सबकी प्रेरक शक्ति अधिवा जीवनी शक्ति यह प्राण ही है, जो सतत् सबको कियाशील बनाए रखता है। प्राण की यह विशेषता होती है कि वह जीवन के अस्तित्व को अभिव्यक्त करता है। न केवल भौतिक शरीर, अपितु मन और बुद्धि के आन्तरिक और गोपनीय स्तरों को भी प्राण प्रभावित करता है। प्राणियों के स्नायु तंत्र में प्राण की शक्ति विद्युत धारा की तरह प्रवाहित होती है। मनुष्य के भौतिक शरीर और मानसिक शरीर के मध्य प्राण सेतु का कार्य करता है। प्राणमय आवरण का अतिक्रमण किए बिना किसी की चेतना उस आत्मा के क्षेत्र में प्रवेश कर ही नहीं सकती।

वैदिक वाइमय में भौतिक शरीर, मन और बुद्धि के समस्त क्रिया-कलापों का सूक्ष्माधार प्राण को ही माना गया है। इससे सिद्ध होता है, कि प्राण को अनुशासित कर मनुष्य शरीर, मन और बुद्धि से इच्छानुरूप कार्य सम्पन्न कर सकता है।

हलचल
आनन्द
संवर्धन
दृष्टिबन्ध
सम्पर्क
क्षणिक

द्वारा अ
भिन्न स
वर्णन क
तो होत
प्राम हो
कुशलत
अतिशय
बन जाए
मनुष्य
ईश्वर के
है, कि
इस भा
कुण्डलि
दृष्टि वि
हो जात

दीक्षा व
परामान
में मत्र
होने क
अवतरि

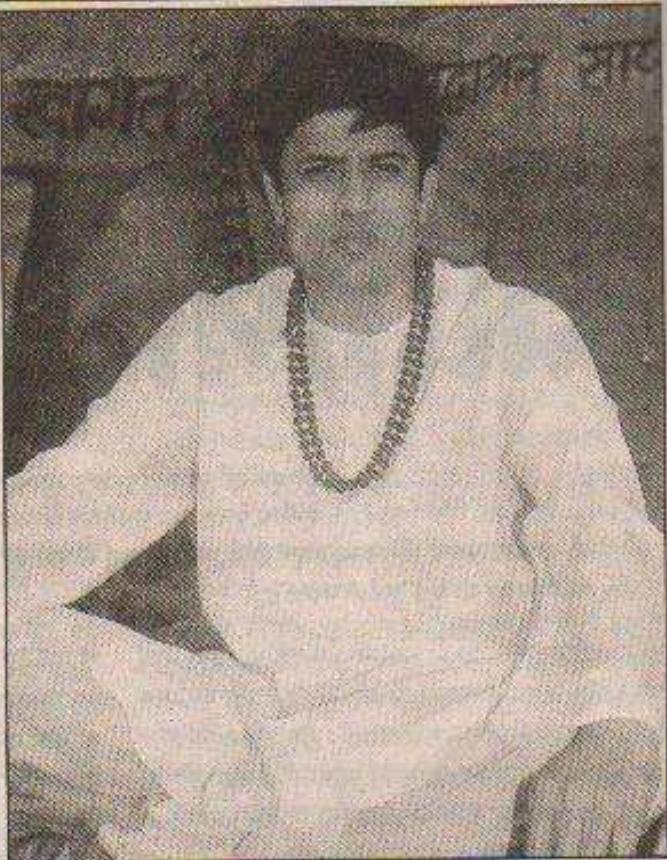
हो गुरु
कुण्डलि
हो जात
कुण्डलि
शिव से
इम दी
भेदन।
उध दी

ऐसी स्थिति में योगी शरीर, मन और बुद्धि के समरूप कार्यों को रोक भी सकता है। वह चाहे, तो अपनी सांसों को भी रोक सकता है और इवय की धड़कनों को भी बंद कर सकता है। आज के वैज्ञानिक यह देख कर आश्चर्य चकित रह जाते हैं, कि समाधि की अवस्था को प्राप्त योगी मृत्यु की सीमा में प्रवेश कर पुनः जीवित हो जाता है।

प्राण शक्ति की यह विशेषता होती है, कि वह मनुष्य के मन को इंद्रियों से सम्बद्ध करती है, जिसके कारण मनुष्य सदैव बहिर्मुखी रहता है। जब भी मनुष्य अंतर्मुखी होने का प्रयास करता है, प्राण शक्ति के आरोह-अवरोह उसे बहिर्मुखी बना देते हैं। प्राणामय की साधना के द्वारा भेस्टड के पथ से जब प्राण शक्ति को सहायता तक ऊर्ध्वमुखी किया जाता है, तो मन भौतिक शरीर से सम्बन्ध विच्छेद कर देता है, नब एकाग्रता की अवस्था में समाधि का बोध होने लगता है। साधकों का अनुभव है, कि प्राण शक्ति मूलाधार में केन्द्रित होती है। योग शास्त्रों में ऐसी अवस्था को प्रसुप्त कुण्डलिनी शक्ति की संज्ञा दी गई है। ऐसी कल्पना की गई है, कि मूलाधार में रवयंभू शिव को यह शक्ति सर्पकृति में परिवेषित किए रहती है और अपने पुच्छ से मेरु-पथ (सुषुम्ना नाडी) को अवरुद्ध किए रहती है। यह शक्ति जब जाग्रत होती है, तो अनेकशः चमत्कार स्वतः घटित होने लगते हैं।

भारतीय धर्म-साधनामों के शेष में ऐसा विश्वास किया जाता है, कि इस शक्ति के जाग्रत हुए किना मोक्ष पथ प्रशस्त नहीं हो सकता। इसके जाग्रण के लिए कोई व्यक्ति निष्काम कर्म दोग का निष्पादन कर सकता है, गम्भीर ध्यान की प्रणाली का अनुसरण कर सकता है, भक्ति के आवेश में ईश्वर के प्रति प्रेमोन्माद को अनुभव कर सकता है अथवा हठयोग की क्रियाएँ सम्पन्न कर सकता है। इन समस्त विधियों से कुण्डलिनी जाग्रत हो सकती है, किन्तु कुण्डलिनी जाग्रण की सर्वसामान्य सरल विधि गुरु प्रदत्त शक्तिपात की दीक्षा मानी गई है।

शक्तिपात दीक्षा में गुरु की चुम्बकीय शक्ति कार्य करती है और शिष्य की प्रसुप्त कुण्डलिनी को जाग्रत कर परम चेतना से उपका साक्षात्कार कराती है। गुरु वह व्यक्ति



होता है, जिसके प्राण और मन ईश्वरीय सीमा में स्थित होते हैं। जिजासु के प्राण और मन निम्न स्तर पर अवस्थित होते हैं, जिन्हें गुरु अपनी शक्ति से ऊर्ध्वगमी बना देता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया की तुलना विश्वृत प्रवाह से की जाती है। विश्वृत प्रवाह ने से प्रकाशहीन बन्धों को आलोक से भर देता है, उसी प्रकार शक्तिपात से गुरु शिष्य के भीतर नवीन चेतना का सञ्चार कर देता है। किन्तु यह सम्पूर्ण प्रक्रिया गुरु की इच्छा शक्ति पर निर्भर करती है। गुरु अपनी इच्छा शक्ति से शिष्य को जो प्रदान करता है, उसे वापस भी ले सकता है। हमारे देश में कवि मुनियों द्वारा दिये जाने वाले वरदान और शाप का भी इही रहस्य है।

अनेक आचार्य शक्तिपात को परामनोवेजानिक आवेश के रूप में परिभासित करते हैं, जिसके माध्यम से मनुष्य का परमाणुर्ध्व अध्युत्थान सम्भव होता है। अनुमत ने यह पाया गया है, कि जब गुरु शिष्य के परामनोवेजानिक शक्ति केन्द्र को जाग्रत कर देता है, तब शिष्य के स्नायु मण्डल में एक

हलचल सी मच जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप शिष्य को आमन्द भाव का अनुभव होने लगता है, जिसे बहाना का स्वरूपभूत गुण कहा जाता है। शक्तिपात की प्रक्रिया को दृष्टिकोण जैसे जूद की किया अथवा सम्मोहन की क्रिया से सम्बद्ध नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसी क्रियाओं का प्रभाव भणिक होता है, नबकि शक्तिपात का प्रभाव स्थायी होता है।

समर्थ गुरु शिष्य में नेत्र शक्ति द्वारा, वाक् शक्ति द्वारा अथवा स्पर्श शक्ति द्वारा शक्तिपात कर सकता है। विष्णु-भिन्न साधक शक्तिपात के बाद अनुभूत अनेकशः लाभों का वर्णन करते हैं। इस दीक्षा से मनुष्य का आध्यात्मिक विकास तो होता होता है, उसकी प्रीतभाँ भी अन्तर्न्त उन्नत अवस्था को प्राप्त होती है विष्णु काव्यों को सम्पादित करने की उसकी कुशलता का भी विस्तार होता है, वह नैतिक मूल्यों के प्रति अतिशय जागरूक हो जाता है और वीक्षिक दृष्टि से वह दूरवशी बन जाता है। सर्वाधिक महावृप्त-उपलब्धि वह होती है, कि मनुष्य को भात्मा के आनन्द स्वरूप का बोध हो जाता है। ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम की भावना इतनी प्रगाढ़ हो जाती है, कि वह हर पल व्याकुलता के भाव को अनुभव करता है। इस भाव विशेष के उन्तर्कष के कारण ही सिद्ध समाज में कुण्डलिनी की ईश्वर की भाङ्गादिनी शक्ति कहा जाता है, जिसके दृष्टि विक्षेप मात्र से साधकों को अनन्त जीवन का रहस्य विदित हो जाता है।

शक्तिपात वस्तुतः शक्ति का विलक्षण अन्तर्प्रवाह है। दीक्षा के क्षणों में समर्थ गुरु शिष्य के अन्तर्प्रान्तर में परमामानसिक शक्ति की धारा प्रवाहित कर देता है। इस दीक्षा में प्रति शक्ति का विलक्षण चमत्कार देखा जाता है। मन्त्र चैतन्य होने के कारण सम्बन्धित देवता का आशीर्वाद त्वरित गति से अवतरित होता है और शिष्य प्रबुद्ध हो जाता है।

यह सम्पूर्ण प्रक्रिया अन्तर्न्त द्वितीय मानी गई है। जैसे ही गुरु की शक्ति का शिष्य में सम्प्रेषण होता है, महाशक्ति कुण्डलिनी उद्भव हो जाती है, तब सम्पूर्ण स्नायु तंत्र इंकृत हो जाता है, सुखुम्ना पथ का अवरोध समाप्त हो जाता है और कुण्डलिनी षट्चक्रों का भेदन करके सहस्रार में स्थित परम द्वितीय से मिलने अग्रसर होने लगती है। योगशास्त्रों में इसीलिए इन दीक्षा को वेद दीक्षा कहा जाता है। वेद का अर्थ होता है भेदन। इस दीक्षा ने चूंकि षट्चक्रों का भेदन होता है, अतः इसे वेद दीक्षा कहना पूर्ण समीचीन है।

विद्वत् को श्रेष्ठ दीक्षाये

दीक्षा का अर्थ है किसी विशेष कार्य के लिए, उस कार्य से सम्बन्धित ऊर्जा प्राप्त करना, जिससे अभीष्ट सिद्धि की पूर्णता प्राप्त हो सके, दीक्षा एक सहज प्रक्रिया है जिसमें केवल शक्ति और विष्णुवत् के स्वरूप गुरु-द्वारा से अपेक्षित द्वयों पूर्णता ही जा सकती है। जिस क्रिया के द्वारा जीवन दिव्य बन जाता है, जिस क्रिया के द्वारा परमामान्द की प्राप्ति संभव होती है, तभी चित्त संतोष प्रसन्नता से भरा रहता है, उसे दीक्षा कहते हैं।

दीक्षा तो जान का आगम है जिसे गुरु मुख से ही प्राप्त किया जा सकता है शिव स्वरूप धारी गुरु के स्पर्श से, गुरु की तपस्या का अंश शक्ति किरणों के माध्यम से शिष्य के भीतर प्रविष्ट होता है जिससे शिष्य प्रबुद्ध हो जाता है। दीक्षा प्राप्त कर ही मनुष्य स्वपी जीव पशुवत जीवत से निवृत्त होता है और सांसारिक विषय बासनाओं पर विजय प्राप्त कर शिव पद प्राप्त कर सकता है।

दीक्षा गुरु एवं शिष्य के मध्य सम्बन्ध सूत्र है, गुरु शक्ति का संचरण है शिष्य के भीतर . . . गुरु की कृपा और शिष्य की अवक्ष इन दो पवित्र धाराओं का संगम दीक्षा है। दीक्षा शब्द दान और क्षेप इन दो शब्दों के सहयोग से बना है दान अर्थात् गुरु द्वारा प्रवान की गई शक्ति एवं क्षेप अर्थात् शिष्य के विकारों का नाश यही दीक्षा का मूल अर्थ है।

सदगुरुवेद दा. श्रीभाली जी की लेखनी से एक अनूठा सारगमित ग्रन्थ . . . अद्वितीय एवं अपने-आप में सम्पूर्ण ग्रन्थ

न्यौछावर - 96-

निः शुल्क उपहार

पीताम्बरा विजय सिद्धि माला

व्यक्ति जब उज्ज्ञति की ओर झगड़ा होता है, तो उसकी उज्ज्ञति से, प्रतिष्ठा से ईर्ष्याग्रस्त होकर कुछ उसके पिंड ही उसके शशु बन जाते हैं और उसे सहयोग देने के स्थान पर वे उसकी उज्ज्ञति के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए प्रयासरत हो जाते हैं। ऐसे शशुओं से निपटने के लिए पीताम्बरा विजय सिद्धि माला को सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठित किया गया है। इसके माध्यम से समस्त प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष शशु समाप्त होंगे, वहीं इस माला के प्रभाव से आपके कार्यों में भी सफलता मिलेगी, आपकी कहीं पराजय नहीं होगी। यह माला निश्चय ही उज्ज्ञति और आत्म रक्षा के लिए विशेष लाभप्रद है। समस्त प्रकार के शशु इसके प्रभाव से स्वतः ही शान्त हो जाते हैं, सामने आने से ही कतराते हैं।

विधि – किसी भी मंगलवार को प्रातः अद्यवा रात्रि में इस माला से बगलामुखी नंव और छोटी बगलामुखी सर्व दुष्टाना वाच्य मुखं पदं स्तम्भय निष्ठां कीलय बुद्धि विनाशय कीं औ फट की तीन माला नप करें। इस तरह अगले ११ दिनों तक इसी माला से नित्य ३ माला नप करें। फिर माला को किसी निर्जन स्थान पर छोड़ आएं।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान – ‘ज्ञान दान’

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया जाया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, जगरों में, मंगल कार्यों में, बाढ़पांडों को, निधन परिवारों को वान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से जालोकित कर सकते हैं, जो अधीं तक इससे बचते हैं। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होपीं और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड ड्रमांक 3) भेज दें, कि ‘मैं २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निः शुल्क ‘मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित पीताम्बरा विजय सिद्धि माला’ ३६५/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिका के ३००/- + डाक व्यय ६५/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को घर राशि बेकर छुड़ा लूँगा। बी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे २० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।’ आपका पत्र आने पर, ३००/- + डाक व्यय ६५/- = ३६५/- की बी. पी. पी. से ‘मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित पीताम्बरा विजय सिद्धि माला’ भिजवा देंगे, जिससे कि आपको वह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। बी. पी. पी. छूटने पर आपको २० पत्रिकाएं भेज दी जाएंगी।

सम्पर्क

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – ३४२००१, (राज.)

फोन – ०२९१-४३२२०९, टेली फैक्स: ०२९१-४३२०१०

Mantra-Totra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

द्वादश रोगता



यों तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक बहलाज है, परन्तु मंत्रों के लाद्याल से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है, कि सभी रोगों का उद्भव गुणव्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शाष्ट हो जाते हैं।

1. क्या आपको लगता है, कि आपका शरीर बेड़ोल है, आकर्षण विहीन है?

प्रभु ने कोई भी चीज व्यर्थ नहीं बनाई है। यदि मनुष्य को एक माला से भरा हुआ दिया है, तो एक तन भी दिया है, जिसके माध्यम से ही हम कोई कार्य सम्पादित कर पाते हैं। शरीर के प्रति व्यक्तिगत ध्यान देना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। सुन्दर, सुदृढ़ देवर्णि मनुष्य की बहुमूल्य निधि होती है, जिससे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। व्यक्तित्व का सबसे पहला प्रभाव जो किसी पर भी होता है, वह आपके शरीर की ऊपरी बनावट, रूप रंग का ही प्रभाव होता है। यदि आप किसी से पड़ली पहली बार मिलने जाएं, तो आपको बेखते ही उसके मानस में आपके प्रति जो प्रथम धारणा निर्मित होगी वह आपके स्वरूप, आपकी वेश-भूषा को दगड़कर ही निर्मित होगी।

यदि आप पुरुष हैं और आपका कद बहुत छोटा है, या आप बहुत मोटे हैं, चलते हैं तो लगता है जैसे कोई दरियाई घोड़ा शूम रहा है, अथवा यह भी हो सकता है, आपका शरीर अत्यंत दुर्बल, कमजोर हो, जीर्ण हो, कि स्वयं आपको भी अपने ऊपर लरस आता हो, तो आपके लिए यह साधना करना अनुकूल है। यदि आप स्त्री हैं, और आपका रंग साफ नहीं है, नैन-नक्षत्र तीखे नहीं है, कव बहुत छोटा है, काया कमनीय नहीं है या सीनदर्य के नाम पर आपके पास कुछ नहीं है, तो भी यह प्रयोग आपके लिए बहुतान है। यह पुरुषों के लिए कामदेव के समान पुरुष प्राप्ति और महिलाओं के लिये रति के समान अनुलनीय सीनदर्य एवं लावण्य प्राप्ति का प्रयोग है।

अपने सामने इवें आसन पर गुलाज की पंखुड़ियों से स्वस्त्रिक का निर्माण करें। उसके ऊपर कामदेव रसि गुटिका स्थापित करें। गुटिका का संक्षिप्त घूनन करें तथा उसके सामने

एक कलश स्थापित करें। फिर निम्न मंत्र की सीनदर्य माला से ५ माला जप करें। मंत्र जप में माला को बाएं हाथ से पकड़ें, तथा दाएं हाथ से एक आचमनी गुलाब भिन्नित जल लेकर गुटिका के सामने रखे कलश में अप्ति करें। इस प्रकार प्रत्येक मंत्रोच्चारण के साथ एक बार जल चढ़ाने हुए मंत्र जप करें—
मंत्र

॥ उ॒ँ हौं हूं सर्वद्वा॑ नुच्चरं हौं उ॒ँ फ॒ट् ॥

यह ग्यारह दिन की रात्रिकालीन प्रयोग है। प्रयोग समाप्ति पर माला और गुटिका को धारण कर सब महीने बाद समस्त सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री : 200/-

2. अब आपके घर में कोई व्यक्ति दोष से पीकित है तो एक बार अवश्य इसे अजमावें

घर में कोई सदस्य अद्भुत दिनों से रोगग्रस्त है, और वह बार-बार इलाज करने पर भी स्वस्थ नहीं हो रहा हो, तथा पूरा परिवार उसके कारण परेशान रहता हो तो एक बार इस प्रयोग को आप अवश्य ही करें फिर देखिये आप के घर से रोग कैसे जाता है आप अपने हाथ में वैद्यनाथ गुटिका को लेकर रोगी के पूरे शरीर में २१ बार स्पर्श कराएं। प्रत्येक बार स्पर्श कराने समय निम्न मंत्र का जप भी करें—
मंत्र

। उ॒ँ श्री शुक्ले महाशुक्ले रोगकाशद शमद्य उ॒ँ फ॒ट् ॥

इसके बाद वैद्यनाथ को रोगी के सिरहाने तकिए के नीचे रख दें। ऐसा आप २१ दिनों तक नियमित करें, साथना समाप्ति के बाद वैद्यनाथ गुटिका को किसी जलाशय में विसर्जित कर दें। इससे रोग का शमन प्रारम्भ हो जाता है।

साधना सामग्री : 60/-

गुरु ध्यान दिवसी

जिस अमृतीकर सौकार्यों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पूर्ण हो चुकी हैं, वह सिद्ध चैतन्य दिव्य मूर्ति-

पर हो दिव्य साधनात्मक प्रयोग

सनस्त सध्यकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रयोग्य हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'किंवद्वापन' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-प्रयोग के साथ सम्बन्ध कराई जाती हैं जो कि उल्लिखित दिन शाम 7 बजे 9 बजे के बीच साप्तमी होती हैं और यदि अद्वा व दिश्वास हो, तो उत्तीर्ण से साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

सभना में जाग लेने वाले साधक को संत्र, पूजा सम्पूर्ण आदि संख्या द्वारा निशुल्क उपलब्ध होती है (योगी, शुष्ठा और द्वचात्र अपने साथ में लावें गा न हो, लो बड़ों से प्राप्त कर लो)।

इन तीनों विषयों पर साधना में जाग लेने वाले साधकों को लिए विषय नियम निम्न होते हैं।

1. आप अपने किन्हीं दो निम्नों अध्यात्म स्वरूपों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मञ्च-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुदेव में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रु. 225/- है, उरन्तु अपको मन्त्र रु. 438/- ही जगा कराने हैं प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मन्त्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित रामगी (यथा गुटिला अद्वा) आपको निशुल्क प्रदान हो जाएगी।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक प्रिय ये तिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।
3. पत्रिका सदस्य बनाकर आप यिसी एक परियार का ऋषि परमराम को इस पावन साधनात्मक डान धारा से जोड़कर एक पुरीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि काप्ते प्रगाति से एक परियार में अध्यात्म कुछ प्रार्थियों से इश्वरीय विन्दन साधनात्मक विनान आ पाते हैं, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो सर्वथा निशुल्क है और गुरु कृष्ण द्वारा ही उपराम रूपरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों जी न्यौष्ठावर शक्ति को अभी के लकड़ी में नहीं तील सकते।

28.9.2000 गुरुवार

वर्णयाकल्प धन्यवत्तरी प्रयोग

उनम कार्यों और स्वास्थ्य जीवन में अत्यत आवश्यक है। मनुष्य जीवन मन और तन दोनों के सहयोग से ही गतिशील होता है, दोनों में से किसी एक का भी सन्तुलन बिगड़ जाए तो वही रोग कड़लाता है। शरीर की व्यायित हो, तो उसके लिए चिकित्सकों के प्राप्त उपाय है, परन्तु यदि उन उपायों के उपरोक्त दो कोई लाभ नहीं हैं, तो फिर कर्मगत दोष आहे जाते हैं, जिनका उपाय साधना द्वारा ही किंवा जा सकता है। आवश्यक नहीं कि रोग शारीरिक ही हो, जीवन में उत्साह की कमी, चिड़चिदापन, क्रोध, घराने, कायरता, वीक्षण की कमी, ये लक्ष भी रोग ही हैं, जिनका निवान भी इसी कायाकल्प साधना द्वारा सम्भव है।

शारीरिक और मानसिक सबलता और पुष्टि अर्थात् मन एवं तन दोनों को ही चेतन्य करने की यह साधना है। इस साधना से जहाँ स्वास्थ्य का प्रयोगन सिद्ध होता है, वही मन में निरन्तर प्रकृत्याता, जोश, आशा एवं दिमात का संचार होता है, आत्म विश्वास का संचार होता है, जिसके द्वारा स्वतः ही कई रोग समाप्त हो जाते हैं।

प्रोटोटाइप 'कमला दीक्षा' के लिए २८ ले ३०

विद्याम्बन दोनों ही

आप चाहें तो निधारित दिवसों से पूर्व ही अपना कोटों एवं न्यौष्ठावर शक्ति का वैक ड्राफ्ट 'मञ्च-तंत्र-यंत्र विज्ञान' के नाम से) भेजकर भी इन दिवसों पर होने वाली वीक्षा को प्राप्त कर सकते हैं। आपका कोटों एवं पांच सदस्यों के बीच दिल्ली कायाकल्प को सम्भव पर प्राप्त होने वाले, इस हेतु आप अपना पत्र स्पीड-पोस्ट द्वारा ही भेजें। पत्र विज्ञान से विज्ञान एवं न्यौष्ठावर शक्ति को अभी

के स्तर सकता है का ही निहो, साधने करने की साधना संताने पुरुषेव लक्ष्यी व्यय, आ की भौति प्रभाव से का स्थान

30.9.2

पूरा युवा बाद प्रया सफलता

के कई व साधना व्यवसाय

* दीक्षा आ आवाय है सध कर लेने व अशूरेप्ला के अनुलीला प्राप्त कर प्राप्त कर ले * गुरु प्रया कावे हेतु वह लिपुज्ञा प्रा राजकाला औ पुक लाय उप * दीक्षा मे का जल से उपराम विजापुजा। वह साव ७ बड़े के उपराम विजापु

29.9.2000 शुक्रवार षोडश कला उत्थापन प्रयोग

बात चाहें सम्पूर्ण राष्ट्र के स्तर की हो, या किसी के व्यक्तिगत जीवन के स्तर की दोनों की ही प्रगति को आर्थिक स्थिति के तरान् पर तौला जा सकता है। अर्थ को ही पुरुषार्थ कहा गया है, और अर्थ या लक्ष्मी किसी पुरुष का ही सिद्ध हो सकती है, वह पुरुष जिसमें क्षमता हो, पुरुषार्थ हो, होसना हो, साधना करने का दम-खम हो, और दैवीय सहायता को हठ पूर्वक प्राप्त करने की क्षमता रखता हो। विश्वमित्र ने लक्ष्मी को अपने पीरुष के बल पर, साधना के बल पर ही तो आबद्ध किया था। आज उन्हीं आर्य कृपियों की संतानें पुनः लक्ष्मी को आध्य कर्यों नहीं कर सकती और वह भी नब जब गुरुवेव द्वारा प्रवत्त साधना पद्धति प्राप्त हो, मंत्र प्राप्त हो। यह साधना भगवतों लक्ष्मी के १६ कलाओं के स्थापन की साधना है। १६ कलाएँ अर्थात् धन, यश, आनु, भवन, संतान, पुत्र, पीत्र, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, सेवक आदि हर प्रकार की भौतिक पूर्णता। इन ऐश्वर्यों का साधक में स्थापन हो ही जाता है, जिसके प्रभाव से भौतिक वृद्धि से पूर्णता प्राप्त हो जाती है, वही लक्ष्मी की षोडश कला का स्थापन होता है।

30.9.2000 शनिवार गणपति कार्य सिद्धि प्रयोग

बेरोजगारी की समस्या आजकल इन्हीं अधिक बढ़ गई है, कि इससे पूरा युवावर्ग ही ग्रस्त है। वर्षों के सधन अध्ययन के बावजूद नब प्रयास के बाद प्रयास करने पर भी प्रतियोगी परीक्षाओं में एवं साक्षात्कार परीक्षाओं में सफलता नहीं मिलती तो जीवन में कुण्ठा आ जाती है।

भगवान गणपति विद्वन विनाशक है, किसी भी कार्य की असफलता के कई कारण होते हैं, ऐसे सभी विद्वों का नाश भगवान गणपति की इस साधना द्वारा सम्भव होता है, और गुरु आशीर्वाद से उस शीघ्र ही मनोवृच्छित व्यवसाय, नौकरी अथवा व्यवसाय की प्राप्ति होती है।

- वीक्षा जाल के द्वारा में पुक प्राणियों का उपाय है सफलता की ऊंचाइयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के उभाव का, अशैष्यों को दूर कर लेने का, जीवत में अतुलनीय बल, साहस, पीरुष एवं शीर्ष प्राप्त कर लेने का, साधना में रिंदि प्राप्त कर लेने का।

- गुरु प्रबव शतिष्ठि द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह वीक्षा प्राप्त करता है, उसमें लिपुपता प्राप्त कर लेता है, जिसके द्वारा उपर्युक्त विद्वान विद्वान करने के उपरान्त उपर्युक्त विद्वान होता है।

- वीक्षा में बात लेने वाले लभी साधकों का जल में अवृत अविषेक करने के उपरान्त विशेष शतिष्ठि प्रबव करना किया जाता है। यह वीक्षा इत्तीवों विद्वानों को रात्रि ७ बजे प्रवाल की जाती है। वीक्षा के उपरान्त पुक उपर्योगी मंत्र प्रदान किया जाता है।

योग्यना के बल इन ५ विद्वों के लिये किसी भी पाच व्यापिकों के वार्षिक सर्वदय अनावर तबके तबके परे लिंगलकाकर लप्तार द्वयों पर वीक्षा जाप किया जाता है।

भगवनी कमला धर्म, अर्थ, काम और भोक्ष इन चार प्रकार के पुरुषार्थ की प्राप्त करना ही सांसारिक प्राप्ति का श्वेत होता है और इसमें से भी लोग अर्थ को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हैं। इसका कारण यह है, कि भगवनी कमला अर्थ की अधिकारी देवी हैं। उनकी आकर्षण शक्ति में जो मातृ शक्ति का गुण विद्यमान है, उस सहज स्थानावधि के प्रेम के पाश से वे अपने पुत्रों को बांध ही लेती हैं। जो भौतिक सुख के इच्छुक होते हैं, उनके लिए कमला सर्वश्रेष्ठ साधना है।

यह वीक्षा सर्व शक्ति प्रदायक है, व्योकि कीर्ति, मनि, धृति, पुष्टि, बल, मेधा, शक्ति, आरोग्य, विजय आदि देवी शक्तियां भिन्न-भिन्न देवों के अंश से उत्पन्न हुई हैं।

गुरुधाम में वीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णित आता है, कि नलिदेव में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम फोटा है, उससे भी अधिक पुण्यकारी होता है वहि लक्षी के लियारे करै, उससे भी अधिक अमृद नट, और उससे भी अधिक पवित्र में करेतो, और पर्वत में भी वहि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई लुना शेष होता है। इन सबसे भी शेष होता है वहि राघव गुरु वरणों में बैठकर साधना करवता करे। और वहि गुरुरादेव अपहो आश्रम अशीर्वाद गुरुधाम में ही वह साधना प्रदान करे, तो इससे बड़ा दौआवाय और कुछ दीर्घ दौरा ही बढ़े।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां विद्या शतिष्ठियों का वास संदेश रखता ही है। जो संगुरु होते हैं, वे गूर्ख रूप से अद्यता सक्षरता प्राप्तिपाल अपने धार्म में अतिथित रहते हुए प्रत्येक अतिथिये का गूर्ख रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए वहि शिष्य गुरुरादेव में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र प्रुत्र जीवा प्राप्त करता है और गुरु दर्शणों का रपर्श कर उत्तीर्णी अद्यता से साधना प्राप्तमात्र करता है, तो उसके जीवात्म्य से केवल अभी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थान पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अद्यता साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पापन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धार्म में गद्यलुक्षणेत तथा विद्वान स्थान रहता है, ऐसे शिष्य स्थान पर कुल वरणों में अतिथित होकर गुरु गुरु ये मंत्र प्राप्त करते ही इच्छा ही साधना में तब उपत्त होती है, जब उसके गत्तर्ण जाकर होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाजारी गुरुरादेव की व्यवस्था के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों की साधनामत्र प्रयोगों की शृंखला लियारित की जाती है।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षाप्र

कमला वीक्षा

225.5
=Rs. 1125/-

केतुग्रह और आपका जीवन

पत्रिका के पिछले कई अंकों में यहाँ का विवेचन दिया जा रहा है, हस्तिवेचन की पटकड़ ज्योतिष के सम्बन्ध में साधारण ने विशेष रूप से उत्पन्न हुई है। यह और जीवन पर एष्ट पुढ़े हैं अपने जीवन की गति का निर्णय करना। मनुष्य के लिए संभव है, यदि उसे यह गति, यह प्रभाव और उसका आपसी सम्बन्ध की स्वयं जानकारी हो, इसी श्रृंखला में केतु यह ऐ सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्रदत्त है।

प्रत्येक क्षण मानव जीवन पर यहाँ का प्रभाव रस्मियों के माध्यम से पड़ता रहता है। और इसी बजह से सुख, दुःख और का भ्रंग उस व्यक्ति को भोगना पड़ता है इसके साथ ही मानव के पूर्व जीवन के कार्यों का भी परिणाम उसे भोगना पड़ता है। जब मानव जन्म लेता है, तो वह पूर्व जीवन के संस्कारों से बधा हुआ होता है। उसके जीवन में उन संस्कारों का प्रभाव भी होता है साथ ही साथ इस जीवन में यहाँ के प्रभाव को भी स्वीकार करना पड़ता है, और उन दोनों के सम्बन्ध से जीवन पथ का निर्माण होता है। वास्तविकता यह है कि यहाँ का प्रभाव स्थानी और अमिट अवश्य होता है, लेकिन उस घटनाओं की अद्वितीयता होने पर मंत्र, तंत्र, रस्ते इत्यादि के माध्यम ये विपरीत घटनाओं की तीव्रताओं को कम किया जा सकता है और आने वाली श्रेष्ठ घटनाओं के प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है।

प्रत्येक क्षण की अपने आप में स्वतंत्र सत्ता है और प्रत्येक क्षण अपने आप में मूल्यवान है, इसके साथ ही प्रत्येक क्षण का प्रभाव भी अपने आप में अलग-अलग है। ज्योतिष के माध्यम से ही हम उस क्षण को और उसकी प्रकृति को पहचान सकते हैं, और तदनुकूल कार्य करके इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

मानव सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के साथ अपने जीवन का सम्बन्ध स्थापित करने का इच्छुक रहता है। उसकी इस

प्रकृति ने ही ज्योतिष को जीवन के साथ सम्बन्धित किया है। भारतीय दर्शन के अनुसार मानव निरन्तर काम करता रहता है। इस कर्म के भी सम्बन्ध, प्रारब्ध और क्रियाण ये तीन भेद माने जाये हैं। किसी के द्वारा वर्तमान क्षण तक किया गया कर्म सम्बन्धित कहलाता है, मले ही वह इस जन्म में अद्यता इससे पूर्व जन्म में किया गया हो। समस्त कर्म एक साथ भोगना सम्भव नहीं है, अतः इन्हें वह क्रम से भोगना है। सम्बन्धित कर्म में से जो भाग भी भोगना प्रारम्भ करता है वही प्रारब्ध कहलाता है तथा जो कर्म अभी हो रहा है, उसे क्रियमाण कहते हैं। इस प्रकार इन तीन तरह के कर्मों के कारण आत्मा अनेक जन्मों को धारण करती हुई अग्रसर होती रहती है।

इस प्रकार भारतीय दर्शन के अनुसार यह आत्मा, एक स्थूल शरीर जीव होने पर दूसरे स्थूल शरीर में प्रवृत्त कर लेती है, परन्तु ऐसा होने पर नये स्थूल शरीर को पिछले लिंग शरीर का कोई भाग नहीं रहता, वह अपने पूर्व जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों की निश्चित स्मृति को खो देता है। इसीलिए ज्योतिष यह बात स्पष्ट रूप से सामने रखता है कि मानव के वर्तमान स्थूल शरीर में रहते हुए भी आत्मा जन्म-जन्मान्तरों से सम्बन्धित रहती है।

जो भी जन्म लेता है, वह दूसरे रूप में समान का एक पूरक होता है। जन्म लेते ही माता-पिता, भाई-बहन, बन्धु-बान्धवादि मिलकर बालक का एक छोटा सा संसार बन जाता

है, परन्तु रूप से वि
तक वह
उनकी व
ज्योतिष
प्रभावी न
अवस्था
उसका प
केतु व
कहा गया
गह है। व
केतु ग्रह
गया है।
का स्वाम
धनु राशि
तथा मिथ
नीच का
है। पूर्वे
द्वितीय
अप स्वाम
लेकिन वे
पंचम उ
स्थान प
ग्रह अशि
का स्वाम

११ विक
मास १८
यह हमेश
दशा ७८

केतु ग्रह
जलाधार
ही मस्ति
ठिकार वि
के साथ

है, परन्तु जन्म लेने ही वह न तो चल सकता है और न स्वतंत्र रूप से क्रियाशील हो सकता है। लगभग बारह वर्ष की अवस्था तक वह एक प्रबार से परन्त्र ही होता है। इस अवस्था तक उसकी कोई स्वतंत्र देने नहीं आवंटी जाती। इसीलिए फलित ज्योतिष के अनुसार बारह वर्ष तक जातक के अपने ग्रह उत्तरा प्रभावी नहीं होते, जितना उसके माता-पिता के होते हैं। इस अवस्था तक वह चेष्टारूप तो रहता है, परन्तु स्वतंत्र रूप से उसका फल पाने में समर्थ नहीं रहता।

केतु ग्रह

केतु ग्रह को ड्रेगन्स टेल
कहा गया है और यह राशि रहित
ग्रह है। ज्योतिष की दृष्टि से
केतु ग्रह शुभ ग्रह माना
गया है यह मीन राशि
का स्वामी है साथ ही
धनु राशि में उच्च का
तथा मियुन राशि में
नीच का माना गया
है। इत्येक ग्रह की
वृष्टि अपने से सातवें
स्थान पर मानी गई है
लेकिन केतु की पूर्ण वृष्टि
पंचम और सप्तम दोनों
स्थान पर मानी गई है। केतु
ग्रह आश्विनी, मध्य, मूल, नक्षत्र
का स्वामी माना जाता है।

केतु की वैनिक गति ३ कला और ११ विकला मानी गयी है, सम्पूर्ण राशियों पर वह १८ वर्ष ७ मास १८ दिन, १५ घण्टा में पूरा घूमग कर लेता है। कुण्डली में यह हमेशा राहु से भातवें स्थान पर रहता है। इसकी विशेषता दशा ७ वर्ष की मानी गयी है।

व्यक्ति की कुण्डली में विभिन्न स्थितियों के अनुसार केतु ग्रह से भयानक अथवा अद्भुत स्वरूप दर्शन, दुर्घटना, जलाधात, कारावास, मृत्यु, कुछ रोग, अशुभ भावनाएं के साथ ही मरिन्सफ्ल विकार एवं कृधा जनित रोग जादि का विरोध विचार किया जाता है।

शुभ शहों के साथ अर्थात् चन्द्रमा, बुध, शुक्र, बृहस्पति के साथ यह शुभ फल देता है। उनके प्रभाव में वृद्धि करता है,

तथा सूर्य, मंगल और इनि, राहु के साथ अमैतीकारक अशुभ फल देता है।

आगे प्रत्येक भाव अर्थात् जन्मकुण्डली में लम्ब भाव से द्वाक्ष भाव तक केतु के प्रभाव का विवेचन किया जा रहा है—

जिसके जन्म लम्ब में केतु हो, उससे बन्धु बान्धव परेशान रहते हैं। इसका मन सदैव अशांत रहता है तथा दुर्जनों से भयभीत रहता है। इसके शरीर में वायु सम्बन्धी अनेक

व्याधियां होती हैं। ऐसा व्यक्ति भीरु, चंचल स्वभाव

का लक्ष्य मुख्य होता है, परन्तु यदि वृद्धिक लम्ब हो और उसमें केतु पदा हो तो जातक धर्मी, परिवर्षीय तथा सुख उठाने वाला होता है।

यदि दूसरे स्थान में केतु हो, तो मुख रोग होता है। इसे पिता का धन कठिनता से प्राप्त होता है, उसका आश्रण अल्प होता है। परन्तु यदि यह भाव मेष, मियुन या कन्या राशि पर हो तो वह व्यक्ति अन्यन्त सुखी होता है।

तीसरे स्थान में केतु हो तो वह शत्रुओं का नाश करने वाला, अन्ध भोग एवं ऐश्वर्य का भोग करने वाला होता है। इसके दिल में चिन्ता अकारण हो बना रहता है और उससे पीड़ित रहता है। भूतों और प्रेतों का भक्त यह जातक बकवासी और चंचल स्वभाव का होता है।

यदि चौथे स्थान पर केतु हो तो वह व्यक्ति माता और मित्र के सुख से विचित रहता है। उसकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाती है तथा अपने घर में ही वह अधिक दिनों तक नहीं ठिक पाता। यदि केतु उच्च हो तो यह बान्धवों को पहुंचाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति निरासाही तथा निस्त्रयी होता है।

पंचम स्थान में केतु हो तो उसके साथ भाई ही उसे पीड़ा पहुंचाते हैं। वायु रोग से वह व्यक्ति रहता है तथा उन्हे सोध कार्य करने पर उससे होने वाली हानि से पांडा उठाता



मोजने पर

जीधी होने कह कला

पीड़ित भी स्त्री से स

श्वेत कुप जगह अ

बना देता रहता है

बोलने वा दूसरे के

पराक्रमी

और इच्छा का अपराह्न जीवन ल

है कि मात्र प्रत्यक्ष नहीं कर की स्थिति लेता है जाती है

है। कम संतान वाला यह जातक पराक्रमी होने पर भी दूसरों का दास बना रहता है।

जिसके छठे स्थान में केतु होता है, उसकी मामा द्वारा मानहानि होता है। चौपायी आदि के पालन में इसे सुख मिलता है। यह मन का संकीर्ण होता है। ऐसा जातक झगड़ान्, भूत-प्रेत-जनित रोगों से रोगी, सुखी, निरोगी एवं मितव्यायी होता है।

सातवें स्थान में केतु रहे तो उसे व्यर्थ की चिन्ता बहुत करनी पड़ती है। अल्प समय में ही उसका धन नष्ट हो जाता है। जल आदि से उसे घात रहती है। स्त्री-पुत्रादि इससे पीड़ित रहते हैं तथा मन सदैव झशान्त बना रहता है। सातवां स्थान वृश्चिक राशि का हो तो केतु बहुत लाभदायक होता है।

जिसके आठवें स्थान में केतु हो, वह व्यक्ति बदासीर आदि रोगों से पीड़ित रहता है। बाहनादि से गिरकर मृत्यु हो जाने का खय रहता है। धन की कमी रहती है। ऐसा नर दुष्कुर्डि तेजहोन, स्त्रीदेशी एवं चालाक होता है, किन्तु यदि आठवें स्थान का केतु वृश्चिक, कन्या और मेष राशि पर हो, तो उस जातक की सम्पत्ति बढ़ती है।

नवे स्थान में केतु होने से भाव्य बहाने वाला होता है। उसका दुख दूर हो जाता है, नीच कर्मरत पुरुषों से उसका धन बढ़ता है। उसे अपने भाईयों से सदैव खय बना रहता है। वह परोपकार जयवा दान भी करता है तो भी लोग उसकी हंसी उड़ती है।

दसवें स्थान में केतु हो तो वह मायवान तथा कष्टमय नीवन व्यतीत करने वाला होता है। उसे पिता का सुख नहीं के बराबर मिलता है। यदि नवे स्थान पर कन्या या वृश्चिक राशि हो तो केतु शत्रुओं का नाश करने वाला होता है।

न्यारहवें स्थान में केतु होने से वह जातक को सभी प्रकार का लाभ देना है। ऐसा व्यक्ति भास्यवान, विद्वान्, उत्तम गुणों से भूषित तथा तेजस्वी होता है। उसकी संतान अभागी होती है सथा वह उदर रोग से पीड़ित रहता है।

जिसके आरहवें स्थान में केतु हो, तो वह पुरुष उच्च पद प्राप्त करने वाला तेजस्वी व्यक्ति होता है। श्रेष्ठ कर्मों में उसका धन व्यवहार होता है। मुकदमे आदि में शत्रुओं के विरुद्ध उसकी जीत होती है। वह व्यक्ति गुमन्द्रिय तथा नेत्रों की पीड़ा से व्यक्तित रहता है। ऐसा जातक चंचल, बुद्धिमान, उम्र, धोखा देनेवाला तथा सभी लोगों पर सन्देश करने वाला होता है।

केतु उच्च राशि का होने पर राज्य कार्य में अर्थात्

केतु के सम्बन्ध में साधना की कई विधियां हैं और श्रेष्ठ मंत्र इस प्रकार से हैं—

केतु स्थान मंत्र

अलेक रूपवर्णश्च शतोशोऽथ

सहचरशः ।

उत्पात रूपी घोरश्च पीड़ा दहतु मे शिष्यी ॥

केतु गायत्री मंत्र

॥ उ॒॑ एशुपुत्राय विद्धे अमृतेशाय
तङ्गोः केतुः प्रचोदयात् ॥

केतु बीज मंत्र

॥ उ॒॑ के केतये नमः ॥

केतु तांत्रिक मंत्र

॥ उ॒॑ स्त्रं स्त्री स्त्रौ सः केतये नमः ॥

नीकरी इत्यादि में विशेष प्रगति करता है। साथ ही साथ नेतृत्व क्षमता भी विशेष रूप से रहती है। नीच राशि में स्थित केतु वृश्चिक में विकार फल देता है। लेकिन यदि केतु अपने मित्र ग्रह के साथ स्थित है तो आर्थिक उत्तिके साथ उसे थोड़ा नास्तिक अवश्य बना देता है। शकु यह स्थित केतु को शृण्गर्भ सिद्धि लाठरी, सहे इत्यादि से भी धन की अवश्य होती है।

किसी राशि में केतु स्थित होने पर क्या प्रभाव देता है इसका विवेचन किया जा रहा है—

यदि व्यक्ति की कुण्डली में मेष राशि पर केतु हो तो व्यक्ति स्वाभिमानी, क्रोध में जलने वाला, वात-रोग से पीड़ित और कई भाषाओं को जानने वाला होता है।

वृष राशि पर केतु हो तो जातक दुख और निस्दयी होता है। व्यर्थ में बकवास करने वाला वह व्यक्ति किसी की भी सहानुभूति अनित नहीं कर पाता। धन की सदैव उसके पास कमी हो रहती है।

यदि मिथुन राशि में केतु हो तो साधारण व्यक्तित्व का पुरुष कम आय पर ही सन्तोष करके देता रहता है। कभी होने के कारण शत्रु नित नये पैदा होते रहते हैं तथा कम उम्र में ही बहुत कुछ दुख देख लेता है।

कर्क राशि का केतु जातक को भूत-प्रेतों से पीड़ित रखता है, वातविकारी होने के कारण उसे कई प्रकार के दुख

भोगने पढ़ते हैं।

यदि केनु रिंह राशि का हो तो व्यक्ति हस्तोक और जीधी होता है। उसकी मृत्यु सामं के डलने से होती है तथा वह कई कलाओं की जानकारी रखता है।

कन्या राशि स्थित केनु जातक को रोगरस्त, मदाज्ञि पीड़ित और मूर्खी बना देता है। ऐसा व्यक्ति अपनी सांतान तथा स्त्री से संदेव पीड़ित रहता है।

यदि केनु तुला राशि पर हो तो अड्डाइसवे वर्ष के बाद श्वेत कुष्ठ होने का भय रहना है। वह कामान्ध होकर जगह-जगह अपमानित होता है।

बृहिंधक राशि का केनु व्यक्ति को धूर्त एवं वाचाल बना देता है। सफ्यों की चिन्ना में वह दिनों दिन पीला पड़ता रहता है तथा यीवनाकाल में कुष्ठ के लक्षण प्रकट होते हैं।

यदि धनु राशि में केनु हो तो जातक धूत और असत्त्व बोलने वाला होता है। वह अपनी चालाकी, ठगी और कला से दूररे के घन पर ही नीत करता है।

मकर राशि में केनु हो तो व्यक्ति परिश्रम करने वाला, पराक्रमी और नायक होता है।

यदि कुम्भ में केनु हो तो व्यक्ति गरीब, कान का रोगी और उच्च-उच्च भटकने वाला होता है।

यदि जातक की कुण्डली में मीन राशि का केनु हो तो कार्यपाल्य होते हुए भी व्यक्ति भास्यहीन और हरा-हरा सा जीवन व्यतीत करता है।

इन सारी स्त्रियों पर विवेचन करने से यह तो स्पष्ट है कि मानसिक, चिन्ना, व्यवेचन का कारण केनु की स्थिति है। प्रत्येक व्यक्ति विशद अन्योनिष्ठ व्यवेचन कर फलाफल का निर्णय नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति में यदि साधक मानसिक चिन्ना की स्थिति में केनु से सम्बन्धित एक लघु प्रयोग सम्पन्न कर लेता है तो उसे अन्यन्त शीघ्र अमुकूलता मिलनी प्राप्त हो जाती है।

जब भी कोई दुर्जाध्य मानसिक समस्या आकर घेर ले अथवा ऐसी उलझान में पड़ जाए कि कोई गर्ज न सूझ रहा हो तथा सामान्य रूप से प्रयोग में लाए जाने वाले उपाय व्यर्थ सिल्ह हो रहे हों तब निश्चित रूप से मान लेना चाहिए कि ऐसा केनु की बाधा के कारण हो रहा है। चन्द्रमा की स्थिति अनुकूल न होने पर मिलने वाले मानसिक कलेश एवं केनु द्वारा मानसिक तनाव में सूक्ष्म योद्ध यह है कि केनु की विपरीत अवस्था में किसी गुप्त चिन्ता का अथवा मानहानि का प्रकोप अधिक रहता है। मुकुटमेवारी, पदोन्नियों से अनावश्यक तनाव, कलनह का भी मुख्य कारक यह केनु ही माना गया है।

ऐसे पीड़ित साधक के लिए उपयुक्त रहता है कि वह किसी भी शुक्रवार को एक लघु केनु जांति प्रयोग सम्पन्न कर ले। इस साधन की विधि यहल एवं केवल एक दिवसीय ही है। किन्तु इस एक दिवसीय प्रयोग में जो सफलता मिलती है उनकी जापि तो बहुमूल्य रत्नों के धारण आदि से भी नहीं सम्भव हो पाती।

साधक स्वान आदि से पवित्र होकर काले तिलों की हेती पर 'केनु महायंत्र' स्थापित कर यदि 'भीली हकीक माला' से निम्न मंत्र की पांच माला नंबर जप सम्पन्न कर लेता है तो उसके जीवन में मानसिक कष्टों व बाधाओं की समाप्ति रहती प्राप्त हो जाती है।

मंत्र

// केतवे एं सौ स्वहा //

मंत्र जप के उपरान्त केनु महायंत्र एवं हकीक माला को जल में विसर्जित करने का विधान है। यह प्रयोग एक विशिष्ट बाधा निवारक प्रयोग है अतः इसको सम्पन्न करने समय हस्तकी चर्चा कम ही करनी चाहिए।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

**स्वच्छ तालाब में खिले प्राकृति कमल की शांति में अपने शिष्यों
के मत में कमल विफलित कर रहा हूं। ऐसे कमल जिनमें छीवन की
धड़कता हो, पवित्रता हो, छिप्यता और धेताना हो।**

— पृथ्वीपाद सद्गुरुवेद डॉ. नारायण वत्त श्रीमाली जी

एक दृष्टि में:

साधना शिविर पुत्र दीक्षा समारोह

9-10 सितम्बर 2000 कोटा राजस्थान

दस महाविद्या विश्वशांति महायज्ञ शिविर
स्थान: श्रीराम मंदिर, रेलवे स्टेशन के पास कोटा राजस्थान
सम्पर्क: — * सुमात्रा शर्मा 0744-461739 * विष्णु प्रसाद
शर्मा 0744-441240 * ओ. पी. श्रीवास्तव 0744-
320447 * अरोगो कुमार अग्रवाल 0744-321210 *
किशोरीलाल माणिक 0744-451033 * राजेन्द्र
खण्डेलवाल 0744-432249 * रामनाथ खण्डेलवाल
07453-31409 * नाथ लाल नागर 07453-32190 *
धर्म सिंह मीणा 07469-32231 * वी. के. अग्रवाल 0562-
280032 * नया शर्मा 0562-358381 * नन्दकिशोर
खण्डेलवाल 07451-20179

24 सितम्बर 2000 वारी (गुजरात)

पिंड वोष मुक्ति तांत्रोक्त साधना शिविर
स्थान: चवन पुष्प हाल ईमरान नगर वारी
सम्पर्क: — * रेवेन्द्र पांडेल 0260-370249 * प्रवीण पटेल,
सिल्वासा 642403 * मोहन माई पटेल 640439 * संय
पिण्ठर 370899 * राजराम वर्मा 98241-14197 *
ईवर आर्ट 782848 * रमेश प्रजापति 02632-46738 *
रमेश पाटिल 02637-53188 * शंकरभाई प्रजापति 0260-
564124 * माहेश्वरी बड़ीवा 0265-791227 * वेमत देसाई
377284 * शशीकांत देसाई वारी 423444

28-29 सितम्बर 2000 अम्बिकापुर

नवशक्ति चण्डी साधना शिविर
स्थान: स्टेडियम के सामने कला केन्द्र अम्बिकापुर, जिला
सरगुजा (म. प्र.)
सम्पर्क: — * विवेक श्रीवास्तव 07774-23168 * राजकुमार
यादव 07774-24068 * रमाकांत निवारी 07774-
24233 * जे. पी. देवांगन 07774-20952 * के. जी. भगत
07774-25627 अम्बिकापुर जाने के लिए कठनी फिलाम्पर लाइन नर
मनपुर नं. रेलवे स्टेशन पर उत्तर कर अम्बिकापुर जहाँ।

4-5 अक्टूबर 2000 आजमगढ़ (उ. प्र.)

अष्ट महालक्ष्मी साधना शिविर
स्थान: डी. पी. वी. महाविद्यालय निकट रेवोपुर कालोनी,

आजमगढ़ उ. प्र.

सम्पर्क: — * मवनाथ यादव, गोरखपुर 0551-61010 * डे.
के. शुक्ला रामनगर 05274-75007 * अच्छेलाल यादव, *
रामकरण प्रजापति, रामनगर * श्रीवीकान्त अग्रवाल आजमगढ़
05462-21181 * सुरेन्द्र राय * उशोक सिंह * नहेन्द्र
प्रताप सिंह * बालकृष्ण पांडेय * राजवीर राय * जैरुन यादव
* विद्याचल पांडेय * रामनूरत यादव * डेवनन्दन यादव *
सूर्यनाथ निवारी, आजमगढ़ * डा. प्रमोद यादव * प.स. के. मिश्रा
0532-501551 * बासुदेव पांडे 0542-220011

25-26 अक्टूबर 2000 जोधपुर

महालक्ष्मी दीपावली साधना शिविर

10-11 नवम्बर 2000 रायपुर (म. प्र.)

सन्यास विवस साधना शिविर
आयोजक: — सिद्धाश्रम साधक परिवार छत्तीसगढ़

19-नवम्बर 2000 कानपुर (उ. प्र.)

साधना शिविर

स्थान: बुजेन्द्र स्वरूप पार्क, कानपुर नगर।

सम्पर्क: — * राजवीर सिंह 0512-612016 * गोकरण सिंह
0512-581293 * राजेन्द्र वर्मा 233315 * रामगोपाल
शास्त्री 580921 * धोरेन्द्र सिंह 611476 * वर्णन सिंह
यादव, 05113-80320

3 - दिसम्बर 2000 फेजाबाद (उ. प्र.)

ऐवर्यदात्री तारा महाविद्या साधना शिविर

स्थान: अविष्य बोर्डिंग हाउस, लालबाग फतेहगांज
चौराहा फेजाबाद उ. प्र.

सम्पर्क: — * नवन लाल गुप्ता 05278-42308 * डा. सद्ध
प्रताप सिंह 9838087132 * आदि माई 46411 * विनय
शर्मा, * राम आधार शुक्ल, * अलख पांडेय * राजू शास्त्री, डा.
बरीलाल सोनी 50107

10 - दिसम्बर 2000 होशंगाबाद (म. प्र.)

सर्व साधना सिद्धि शिविर

स्थान: नर्मदा के तट पर

सम्पर्क: — * सुरील वीहन 53860 * चौधरी शाहब 53697
* सुरेश धूरे, * विनय प्रताप ठाकुर, * संतोष शर्मा 24480 *
जी. एल. पटेल 63185 * इस. एल. मस्कोले 63176 *
कालिलाल सोनी * योटेकर जी 62430



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

